www.abulhasanalinadwi.org

इस्लाम

एक परिचय

अबुल हसन अली नदवी (रह॰)
(अली मियाँ)

एम० एच० ट्रस्ट, दायरा शाह अलमुल्लाह
तकिया कलाँ, रायबरेली (यू०पी०)

www.abulhasanalinadwi.org

सर्वाधिकार सुरक्षित

—: प्रकाशक :—

मोहम्मद हसनी ट्रस्ट

तकिया कलाँ रायबरेली

सातवां संस्सकरण 15000

सन् 2008 ई०

पहला	:	15 हज़ार
दूसरा	:	3 हज़ार
तीसरा	:	3 हज़ार
चौथा	:	10 हज़ार
पाँचवा	:	10 हज़ार
छटा	:	8 हज़ार

विषय सूची

1. प्राक्कथन 9

2. दो शब्द 13

3. अध्याय—1 ..... 15—64

1. इस्लाम का अर्थ और क्षेत्र 15
2. इस्लाम में अक़ीदे (विश्वास) का महत्व 17
3. इस्लाम के आधारभूत अक़ीदे 17
4. तौहीद का विश्वास 20
5. आख़िरत (महाप्रलय) 20
6. इस्लाम के स्तम्भ 24
7. नमाज़ इस्लाम का दूसरा स्तम्भ 25
8. नमाज़ एक अध्यात्मिक पोषण 26
9. नमाज़ कैसे पढ़ी जाये 27
10. अज़ान 27
11. नमाज़ के एअ़लान का नाम है अज़ान 28
12. पाकी (तहारत) 29
13. नमाज़ से पहले वुज़ू 30
14. मस्जिद में मुसलमान का मामूल और तरीक़ा 30
15. सफ़बन्दी और जमाअ़त 30
16. मोमिन का आत्मविश्वास 34
17. नमाज़ का समापन 34
18. मुस्लिम समाज में मस्जिदों का महत्व 34
19. जुम्ए (जुमा) हफ़्ते की ईद 36
20. एक अरबी खुत्बे का अनुवाद 37
21. नमाज़ें विभिन्न हैं और नमाज़ियों के मर्तबे भी विभिन्न 38
22. इस्लाम का तीसरा स्तम्भ ज़कात 39
23. इस्लाम में ज़कात का महत्व 39

www.abulhasanalinadwi.org

24. इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था का मौलिक स्वरूप 40
25. ज़कात की एक निश्चित, विशिष्ट और व्यापक व्यवस्था 41
26. ज़कात किस चीज़ पर वाजिब है 42
27. ज़कात टैक्स या जुर्माना नहीं, इबादत है 43
28. आवश्यकता से अधिक माल को दान करने की प्रेरणा 43
29. इस्लाम की नज़र में इन्सान की क़ीमत व सहृदयता का महत्तव 44
30. रोज़ा–इस्लाम का चौथ स्तम्भ 45
31. रोज़े का हुक्म 45
32. रोज़े की विशेषताएं और उसका महत्व 47
33. इबादत का विश्वव्यापी मौसम और सतकर्मों की बहार 48
34. पिछले पहर उठकर सहरी खाना 49
35. रोज़े का सार और उसकी सुरक्षा 49
36. ऐतिकाफ़ 51
37. शबे क़द्र 51
38. ईद के चांद पर रमज़ान ख़त्म हो जाता है 52
39. हज–इस्लाम का पांचवा स्तम्भ 52
40. कुरआन मजीद में हज़रत इब्राहीम अ0 का क़िस्सा 53
41. हज हज़रत इब्राहीम अ0 के कर्मों की यादगार है 62
42. इस्लामी भाई चारे की अभिव्यक्ति 63
43. हज एक निश्चित अवधि में मक्का में ही अदा होता है 63

4. अध्याय–2 (मुसलमानों की कुछ धार्मिक विशेषताएं) 65–73

1. एक निश्चित विश्वास और शरीअ़त 65
2. पवित्रता (तहारत) 68
3. आहार की व्यवस्था 68
4. हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से हार्दिक लगाव 69
5. विश्वव्यापी इस्लामी बिरादरी से सम्बन्ध 72

5. अध्याय–3 (मुसलमानों के दो बड़े त्योहार) 74–77

6. अध्याय–4 (मुसलमानों का रहन–सहन) 78–90

1. जन्म से प्रौढ़ावस्था तक 78
2. बच्चे का जन्म और उसके कानों में अज़ान व इक़ामत 78
3. बच्चे का अक़ीक़ा 79
4. बच्चे का नामकरण 79
5. पाकी और तहारत की शिक्षा 80
6. नमाज़ पढ़ने की हिदायत 81
7. इस्लामी शिष्टाचार की शिक्षा–दीक्षा 81
8. प्रौढ़ अवस्था से मौत तक 82
9. निकाह (विवाह) 82
10. एक तक़रीर का नमूना 84
11. वैवाहिक जीवन एक इबादत 86
12. अन्य स्वाभाविक बातें और मुसलमान 87
13. मृत्यु और कफ़न–दफ़न 88

7. अध्याय–5 (इस्लामी सभ्यता व संस्कृति) 91–99

1. इब्राहीमी सभ्यता की तीन विशेषताएं 91
2. अन्य प्रमुख विशेषताएं 94
3. इस्लामी समाज मे पेशे 94
4. विधवा का दूसरा निकाह 95
5. सलाम करने का रिवाज 95
6. इस्लाम में ज्ञान की प्रतिष्ठा 96
7. ललित कलाएं और मुसलमान 98
8. मज़हब ज़िन्दगी का संरक्षक है 98

8. अध्याय–6 (आचरण की सभ्यता और मन की सफ़ाई) 100–110

1. इन्सान साज़ी (मानव निर्माण) 101

www.abulhasanalinadwi.org

2. हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का आचरण और स्वभाव 102
3. आपके उच्च आचरण पर एक दृष्टि 106
4. हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का स्वभाव 109

9. अध्याय–7 (नारी की प्रतिष्ठा) 111–114

10. अध्याय–8 (इस्लाम मे मानवता की प्रतिष्ठा) 115–125

1. इन्सान खुदा का नाइब और ख़लीफ़ा है 115
2. सफ़ल कार्यवाहक और प्रभारी 117
3. दो विरोधी परिकल्पनाएं 117
4. प्रेम और भाईचारे का सन्देश 118
5. औस व ख़ज़रज की लड़ाई 119
6. शिर्क के बाद सबसे नापसन्द चीज़ आपस की रंजिश 121
7. ईश्वर मानव जाति से निराश नहीं 121
8. टूटे हुए दिल की बड़ी क़ीमत है 123
9. मानवता की प्रतिष्ठा 125

परिभाषिक शब्दावली

मअ़बूद : ऐसी हस्ती जिनके सामने झुका जाये और इबादत की जाये।

शिर्क : ग़ैर अल्लाह को इलाह (खुदा) बना लेना। अल्लाह की ज़ात मे किसी को शरीक करना।

तौबः : अल्लाह से माफी मांगना। अपने गुनाह (पाप) पर नदामत (पश्चाताप) के साथ और आइन्दा (आगे) न करने के इरादे के साथ।

कुफ़्र : अल्लाह के दीन और उसकी शरीअ़त का इन्कार, उसकी सत्ता से बग़ावत और उसके आदेशों की अवहेलना, चाहे किसी तरीके और अ़लामत से ज़ाहिर हो।

रक्अ़त : नमाज़ मे खड़ा होकर कुरआन पढ़ना एक रक्अ़त और सज्दे के बाद दूसरी बार खड़े होकर पढ़ना दूसरी रक्अ़त हुई

तौहीद : अल्लाह को उसकी ज़ात और सिफ़ात (गुण) में एक मानना, अल्लाह की ख़ालिस इबादत और पूरी इताअ़त (आज्ञा–पालन) जो अकेले उसी का हक़ है।

खुतब–ए–जुमा : जुमा की नमाज़ से पहले तक़रीर (सम्बोधन) जिसमें अल्लाह की स्तुति हो और अल्लाह के रसूल सल्ल0 पर दुरूद व सलाम और अच्छी व नेक बातों का हुक्म हो।

सुन्नत : वह काम जो फ़र्ज़ (अनिवार्य) न हो, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने किया हो और करने को कहा हो या पसन्द किया हो।

www.abulhasanalinadwi.org

उम्मत : जमाअ़त (समुदाय) और क़ौम।

सअ़ी : हज में एक ख़ास जगह दौड़ने और तेज़ चलने को कहते हैं।

इस्तिन्जा : पाख़ाना और पेशाब के बाद पाकी व पवित्रता के लिए पानी, ढेले का प्रयोग।

शरअ़ी : दीन के अनुसार कार्य।

ज़बीह : अल्लाह के नाम पर ज़िबह किया हुआ जानवर।

दुरूद : अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्ल0 के लिए रहमत की दुआ।

अरकान : बुनियादें, स्तम्भ।

तदफ़ीन : दफ़न करना (मृत्यु के बाद) अन्त्येष्टि।

आयत : कुरआन का एक वाक्य।

खुलअ़ : पति–पत्नी के न निभने पर पत्नी अपने पति से (कुछ दे दिला कर) छुटकारा पा ले इसको खुलअ़ कहते हैं।

प्राक्कथन

आज वसुन्धरा अपनी तमाम विशालताओं के बावजूद एक घर की तरह हो गई है जिसमें रहने वाले लोग यद्यपि विभिन्न क़ौमों, सम्प्रदायों और वर्गों से सम्बन्ध रखते हों, किन्तु वे एक ही घर के रहने वाले हैं। वसुधैव कुटुम्बकम। अतएव सहअस्तित्व, जो सभ्य और शान्तिपूर्ण जीवन का माना हुआ सिद्धान्त है, के लिए और विभिन्न क़ौमों, सम्प्रदायों और आबादी के विभिन्न तत्वों की एकात्मकता, विश्वास, प्रेम व सम्मान तथा सहयोग व सहभागिता के लिए आवश्यक है कि हर क़ौम, दूसरी क़ौम के मिज़ाज व अभिरूचि तथा उसकी धार्मिक परम्पराओं व आस्थाओं से न केवल परिचित हो अपितु उनके विषय में उसमें उदारता हो।

लेकिन यह कितने दुःख का विषय है कि एक घर के रहने वाले लोग, एक क्षेत्र के वासी, बाज़ारो और मंडियों मे साथ आने जाने वाले, शिक्षण संस्थाओं, कार्यालयों, कचहरियों में एक साथ उठने बैठने वाले, रेलों, बसों हवाई जहाज़ों में साथ यात्रा करने वाले, और जिन को आसानी से एक दूसरे से परिचय के अवसर प्राप्त हों, वह एक दूसरे की आस्था, उपासना, धार्मिक शिक्षा और विशेषताओं से लगभग ऐसे अन्जान और अजनबी हों, जैसे एक दूसरे से, प्राचीन समय की तरह, जब कि आज जैसी सुविधाएं उपलब्ध न थीं, एकदम ख़बर न होती थी।

हिन्दुस्तान में लगभग एक हज़ार वर्ष से हिन्दु–मुसलमान इकट्ठा रहते हैं शहरों, क़सबों, देहातों और मुहल्लों में उनकी मिली जुली आबादी निवास करती है। बाज़ारों मंडियों, शिक्षण संस्थाओं कचेहरियों और अब सौ वर्ष से भी अधिक हो रहा है कि राजनैतिक आन्दोलनों सामाजिक कार्यो, स्टेशन और डाक घरों, रेलों और बसो में उनको एक दूसरे से मिलने जुलने और एक दूसरे को जानने पहचानने के अवसर आसानी से प्राप्त हैं। लेकिन यह दुनिया की आश्चर्यजनक घटना और एक प्रकार की पहेली है जिसका बूझना आसान नहीं कि एक को दूसरे के धार्मिक विश्वास, सभ्यता व रहन सहन, तौर तरीक़े

www.abulhasanalinadwi.org

और क़ौमी विशेषताओं से लगभग उतनी अनभिज्ञता और अजनबियत है जैसी पुराने समय में प्रायः दो देशों के वासियों के बीच हुआ करती थी। हर एक का ज्ञान दूसरे के प्रति, दोषपूर्ण, सरसरी और अधिकतर सुनी सुनाई बातों और कल्पनाओं पर आधारित है। प्रत्येक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय के बारे में तीव्र भ्रन्तियों से ग्रसित, और कभी कभी घृणा फैलाने वाले साहित्य, राजनीतिक प्रोपगन्डे, विशाक्त इतिहास, पाठ्यक्रम की किताबों और अप्रमाणित दास्तानों और कहानियों के आधार पर अपने मन मस्तिष्क में उसकी एक ग़लत और घिनावनी तस्वीर क़ायम किये हुए हैं। एक सम्प्रदाय के उदार प्रवृत्ति, नेकदिल और सादा तबीअ़त व सहज स्वभाव के लोगों से यदि दूसरे सम्प्रदाय के मूलभूत विश्वास, रीति रिवाज, और रहन सहन के सिद्धान्तों के बारे में पूछा जाये तो या तो वे अज्ञानता व्यक्त करेंगे अथवा ऐसे उत्तर देंगे कि जिनसे एक जानकार आदमी को बे–इख़्तियार हंसी आ जायेगी। लेखक को जो प्रायः यात्रा करता है, और रेलों और बसों में हर वर्ग और हर स्तर के लोगों से उसका मिलना जुलना होता है, अनेक बार इसका अनुभव हुआ है लेकिन यह हंसी की बात नहीं रोने का मुक़ाम है कि सैकड़ों वर्ष से साथ रहने के बावजूद हम एक दूसरे से इतने अपरिचित हैं। इसका उत्तरदायित्व मात्र एक सम्प्रदाय पर नहीं, सब पर है। और विशेषकर धार्मिक, सामाजिक कार्य करने वालों, देश से सच्चा प्रेम रखने वालों और मानवता के प्रेमियों पर है कि उन्होंने एक दूसरे से सही ढंग पर परिचित कराने का गम्भीर प्रयास नहीं किया अथवा किया तो अपर्याप्त। सभ्य संसार में अब यह सिद्धान्त स्वीकार कर लिया गया है कि प्रेम व श्रद्धा, विश्वास व शान्ति के साथ रहने और नेक उद्देश्यों के लिए एक दूसरे से सहयोग करने के लिए एक दूसरे से सम्बन्धित सही ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। आबादी के हर तत्व, और हर सम्प्रदाय और हर गिरोह को ज्ञात होना चाहिये कि दूसरा तत्व, दूसरा सम्प्रदाय और गिरोह किन सिद्धान्तों पर आस्था रखता है, किन नियमों का अपने को पाबन्द और उन को अपने लिए ज़रूरी समझता है। उसकी सभ्यता और संस्कृति का विशेष रंग क्या है? उस को जीवन के कौन से मूल्य व मान्यताएं प्रिय हैं? उसको आन्तरिक शान्ति और भरोसेमन्द जीवन यापन के लिए क्या चीज़ें वांछित हैं? कौन सी आस्थाएं और

उद्देश्य उसको जान से अधिक प्यारे और औलाद से अधिक प्रिय हैं? हमें उस से बातचीत करने में, उस के साथ सुख और दुःख के क्षण, बिताने में किन भावनाओं का ध्यान रखना चाहिये? सह अस्तित्व के लिए, जो सभ्य व शान्तिपूर्ण जीवन का माना हुआ सिद्धान्त है, पहली शर्त है कि ज़रूरी हद तक एक दूसरे के प्रति जानकारी हासिल हो।

प्रेम व मुहब्बत के साथ रहने, हंसने बोलने, जीवन का आनन्द उठाने और एक दूसरे पर भरोसा करने और एक दूसरे की सभ्यता व पंथ के प्रति आदर व सम्मान की दौलत से हम वंचित हैं। इस वस्तुस्थिति का नुक़सान हिन्दुओं–मुसलमानों को समान रूप से पहुंचता है, और जो देश तथा अन्ततः मानव जाति को नुक़सान पहुंचाती है। विभिन्न सम्प्रदायों के बीच बड़ी–बड़ी खाइयाँ क़ायम है कि कुछ सम्प्रदायो और इसके कहने में कोई डर व हर्ज नहीं कि विशेषकर मुसलमानो की क्षमताएं और शक्ति अपनी सफ़ाई और बचाव में ख़र्च हो रही है।

जहां तक मुसलमानो के पिछले युग और उसके इतिहास का प्रश्न है, और यह कि मुसलमानों ने देश के विकास और निर्माण, तथा संगठन व संजोने में क्या रोल अदा किया है, सभ्यता व संस्कृति, साहित्य और ज्ञान तथा कला–कौशल के क्षेत्र में क्या अभिवृद्धि की, और क्या क्या यादगारें छोड़ीं तो इस विषय पर अच्छी किताबें लेखकों की लेखनी से निकल चुकी हैं, और स्वयं इस पुस्तक के लेखक की किताब ''हिन्दुस्तानी मुसलमान'' कई वर्ष हुए अरबी, उर्दू और अंग्रेजी में प्रकाशित हो चुकी है, किन्तु यह इतिहास का विषय है और अधिकतर विद्यार्थियों और शोध कार्य करने वालों का है।

इसी प्रकार आवश्यकता एक ऐसी किताब की थी जिसमें मुसलमान जो कुछ हैं और जैसे कुछ हैं, इस से हटकर कि उनको कैसा होना चाहिए, उनको उनके असली रंग व रूप में उनके हमवतनों के सामने पेश कर दिया जाये। न चित्रकारी की जाये, न कल्पना की उड़ान हो, न अतिश्योक्ति से काम लिया जाये और न कंजूसी न हक़तल्फ़ी से। इसके लिए लेखक ने

www.abulhasanalinadwi.org

''हिन्दुस्तानी मुसलमान एक नज़र में'' लिखी जो उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी मे कई वर्ष हुए प्रकाशित हो चुकी है।

लेकिन इसी के साथ एक ऐसी किताब की ज़रूरत बाक़ी थी जो हल्की फुल्की हो और जिसका पढ़ना आसान हो और जिस में इस्लाम की सही तस्वीर पेश की गई हो तथा उसका संक्षिप्त परिचय आ गया हो। मेरे कई मित्र इस ज़रूरत को पूरी करने की बात बार–बार मुझ से कहते रहे। और मुझे उत्प्रेरित करते रहे।

हर्ष का विषय है कि प्रिय सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी ने संकलन का यह कार्य बड़े परिश्रम और संयम से किया और लेखक की अनेक किताबों के वे अंश बड़ी सफलतापूर्वक एकत्र कर संकलित कर दिये जो उक्त आवश्यकता की पूर्ति करते हैं और जो इस्लाम की सही तस्वीर के साथ–साथ उसका संक्षिप्त व सारगर्भित परिचय प्रस्तुत करते हैं। मेरे प्रिय मुहम्मद हसन अंसारी, जिन्होंने मेरी कई पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद किया है, ने इसे हिन्दी में अनुदित कर हिन्दी भाषा भाषी भाई बहनों के लिए विशेषकर और ग़ैर मुस्लिम भाई बहनों के लिए इसे ग्राहय बना दिया है। श्री राम कुमार तिवारी, एम॰ए॰ (संस्कृत) इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रति मैं आभार ज्ञापन हूं कि जिन्होंने हिन्दी अनुवाद की पाण्डुलिपि को पढ़ा और अपने बहुमूल्य सुझाव दिये।

आशा है कि प्रस्तुत पुस्तक, जो हर प्रकार से लाभप्रद, महत्वपूर्ण और प्रमाणिक है, सभी सम्प्रदायों, शिक्षित समाज और न्याय प्रिय लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

सैय्यद अबुल हसन अली नदवी
तकिया कलां, रायबरेली,
(अली मियां) 25 सितम्बर, 1995 ई0

दो शब्द

इस्लाम के परिचयात्मक विषय पर अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं, और अनेकों लेखकों ने इस्लाम का परिचय कराने और उसके मूल सिद्धान्तों का उल्लेख व वर्णन करने का सफल प्रयास किया है। वे सब और उनके प्रयास सराहनीय हैं। लेकिन इस्लाम का परिचय विषय पर एक ऐसी किताब की ज़रूरत महसूस की जा रही है जो संक्षिप्त भी हो और सारगर्भित भी जो सहज भी हो और सन्तुलित भी और जिस के पढ़ने से इस्लाम की सही और सच्ची तस्वीर भी पढ़ने वालों के सामने आ जाये। क्योंकि स्वयं मुसलमानों का एक बड़ा तब्क़ा और विशेषकर भारत में रहने वाले बहुत से मुसलमान अज्ञानता का शिकार हैं।

इस संकलन की तैयारी में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि जो भी संकलित किया जाये वह विश्वविख्यात लेखक, महान विचारक और प्रसिद्ध इतिहासकार श्रद्धेय सैय्यद अबुल हसन अली नदवी की पुस्तकों से लिया जाये, क्योंकि अपने संतुलित, सारगर्भित और सौम्य विचारों के लिए जो लोकप्रियता और ख्याति श्रद्धेय नदवी को प्राप्त है वह किसी अन्य समकालीन व्यक्ति को प्राप्त नहीं है और जिस प्रकार विभिन्न वर्गों को आप पर भरोसा है, आपकी निष्ठा, सहृदयता और मानवता के प्रति आप के प्रेम पर विश्वास है वह आप ही का हिस्सा है। इस प्रकार इस पुस्तक को लेखक की महान कृतियों का, विषय वस्तु से सम्बन्धित, सुगन्ध फैलाने वाला सारगर्भित संग्रह कह सकते हैं जिसके अधिकतर अंश ''अरकाने अरबा'' (चार स्तम्भ) ''दस्तूरे हयात'' (जीवन–संहिता) और ''हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में'' से लिये गये हैं।

संकलन कार्य में जिन प्रियजनों ने अपना सक्रिय सहयोग प्रदान किया है उनमें से सर्व श्री रिसालुद्दीन नदवी, वसी सुलेमान नदवी के नाम उल्लेखनीय हैं। हम उनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं। अल्लाह से प्रार्थना

www.abulhasanalinadwi.org

भी करते हैं कि वह इस प्रयास को सफल बनाये और इस पुस्तक को इस्लाम के परिचय का साधन और स्रोत बनाकर हिदायत (सन्मार्ग) का ज़रीआ़ बनाए।

अब्दुल्लाह हसनी नदवी
संकलनकर्ता

अध्याय–एक

इस्लाम का अर्थ और क्षेत्र

इस्लाम रब के सामने पूरी सुपुर्दगी और अपने को बिना शर्त रब के हवाले (surrender) करने का नाम है। इस्लाम दीन धर्म पूरी ज़िन्दगी को अपने घेरे में लिए हुए है, यह एक बुनयादी सच है जो बन्दे व रब (भक्त और ईश्वर) के सम्बन्ध को समझे बिना समझ में नहीं आ सकता। हर मुसलमान रब का आज्ञाकारी बन्दा है, और उसका सम्बन्ध खुदा से स्थायी है, आम है, गहरा भी है और व्यापक भी, सीमित और भरपूर भी। कुरआन मजीद में है –

अनुवाद – ''ऐ ईमान वालो, इस्लाम में पूरे दाख़िल हो जाओ और शैतान के पीछे न चलो, वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है।''

(सूरः अलबक़रः 208)

यहां रिज़र्वेशन नहीं, आरक्षण नहीं, कि इतना आप का है और इतना हमारा, इतना देश का, इतना स्टेट का, इतना रब का और इतना ख़ानदान और क़बीले का, इतना दीन धर्म का और इतना राजनीतिक लाभ का। इसमे जो कुछ है वह सब रब का है, यहां सब इबादत ही इबादत है। मुसलमान की पूरी ज़िन्दगी खुदा के सामने मुहताजी और दासता है। यहां दीन का दायरा पूरी ज़िन्दगी पर हावी है, और इसमें किसी को कोई संशोधन करने का कोई हक़ नहीं। बड़े बड़े विद्वानों और धार्मिक नेताओं को भी इन चीज़ों का कोई हक़ नहीं। बड़े बड़े विद्वानों और धार्मिक नेताओं को भी इन चीज़ों में जो कुरआन मजीद से साबित हैं, एक शब्द, एक अक्षर, के संशोधन की इजाज़त नहीं।

अल्लाह मुताल्बा करता है, इस्लाम मुताल्बा और मांग करता है, उसकी अपेक्षा है कि पूरे के पूरे दाख़िल हो जाओ। मैं सफ़ाई से कहता हूँ और अपना फ़र्ज़ समझता हूँ कि साफ़ कहूं कि हम मुसलमानों का रहन सहन, शादी ब्याह के तरीक़े, विरासत के तरीक़े और हम मुसलमानों के मुआ़मले शरीअ़त से दूर हैं और बहुत दूर हैं। कुछ लोग तो ऐसे हैं जो अक़ीदे (विश्वास) में दीन के पाबन्द हैं, तौहीद (अद्वैतवाद) के बारे में उनका ज़ेहन साफ़ है,

www.abulhasanalinadwi.org

रिसालत (अल्लाह के सन्देश को उसके बन्दों तक पहुंचाने का सिलसिला पैग़म्बरी, ईशदूत) के बारे मे, आस्था के बारे में, जो बुनयादी अक़ीदे हैं, उनके बारे में उनकी सोच और समझ साफ़ है, लेकिन इबादत में कच्चे हैं। और बहुत से वह हैं जो अक़ीदे व इबादत में पक्के हैं, लेकिन मुआमला और अख़लाक़, आचार व्यवहार को न पूछिये, इनमें बड़े अविश्वसनीय किसी के मुआमले में पड़ेंगे तो ख़ियानत (गबन, हेराफेरी) से न चूकेंगे, नाप तौल में कमी करेंगे, तिजारत करेंगे और उसमें साझेदारी होगी तो उसमें नाइन्साफ़ी और ख़ियानत करेंगे, अपने पड़ोसी को दुख पहुंचायेगा। हदीस में आता है –

अनुवाद – ''मुसलमान वह है जिस की ज़बान, हाथ (यातना, कष्ट, तकलीफ़) से मुसलमान सुरक्षित रहें।''

अनुवाद – ''तुम में से कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक उसका पड़ोसी उसकी यातना से असके नुक़सान से सुरक्षित न हो जाये।''

मुसलमानों का एक तबक़ा ऐसा है कि न पूछिये, उसने आचार व्यवहार को दीन से ख़ारिज कर रखा है और यह समझ रखा है कि बस अक़ाइद व इबादत ही हैं, न मुआमले की सफ़ाई न वअदा की पाबन्दी, न अमानत का ख़याल, न इन्साफ़ के साथ बंटवारा, कोई चीज़ नहीं। बन्दों के हक़ की अदायगी नहीं, नाते, रिश्तों और हक़दारों के बारे में बिल्कुल आज़ाद। नौकरों के साथ, मुआमलात में, तिजारत और ज़िन्दगी के दूसरे क्षेत्रों में भी मनमानी कार्रवाई करते हैं।

अल्लाह के रसूल ह॰ मुहम्मद सल्ल॰ ने जिन मुसलमानों को तैयार किया था वह सहाबा थे, वह दीन के पूरी अनुयायी थे, वह दीन के सांचे मे ढल गये थे, उनके अक़ाइद उनकी इबादत, उनके मुआमले, उनका आचरण उनकी रस्में, उनके आयोजन, उनकी विजय, उनकी हुकूमत व शासन व्यवस्था सब चीज़ें और जीवन के सब विभाग शरीअत के अनुसार थे [1]

1. अल्लाह (परमेश्वर) के प्रत्येक आज्ञाकारी भक्त को इन तमाम बातों का ख़्याल रचाना चाहिए। इसका सर्वोत्कृष्ट नमूना मुहम्मद सल्ल0 का उत्कृष्ट गुणों से परिपूर्ण व्यक्तित्व था, और फिर सहाबा की ज़िन्दगी जिस की एक झलक ''आचरण की सभ्यता'' के बयान मे नज़र आयेगी, जो इस पुस्तक के पृष्ट 91 से प्रारम्भ होते हैं। अल्लाह के हर मानने वाले को वैसी ही ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करनी चाहिए।

इस्लाम में अक़ीदे (विश्वास) का महत्व

भक्ति और बन्दगी की बुनियाद अक़ीदा (विश्वास) और ईमान के सही होने पर है। जिसके अक़ीदे में ख़लल, विश्वास में विकार और ईमान में बिगाड़ हो उसकी न कोई इबादत मक़बूल न उसका कोई कर्म सही माना जायेगा और जिसका अक़ीदा दुरूस्त और ईमान सही हो उसका थोड़ा अमल (कर्म) भी बहुत है। इसलिए सबसे पहले उन बातों को मअलूम करने की ज़रूरत है जिन पर अक़ीदा रखना, ईमान लाना और उस के अनुसार आचरण करना आवश्यक है और जिन पर विश्वास के बिना कोई व्यक्ति मुसलमान कहलाने का अधिकारी नहीं यह वह शर्त है जो तमाम दुनिया के मुसलमानों के लिए एक समान है।

इस्लाम के आधारभूत (विश्वास) अक़ीदे

1. तौहीद (अद्वैतवाद का विश्वास इस्लाम का विशुद्ध और बे मेल विश्वास है। इसके अन्तर्गत भक्त और ईश्वर उपासक और उपास्य के बीच दुआ और इबादत के लिए किसी बिचौलिये की ज़रूरत नहीं है। इस अक़ीदे में न अनेक और बहुसंख्य देवताओं और माअबूदों (जिसकी पूजा की जाय) की गुंजाइश है, न ईश्वर के अवतार अथवा छाया की परिकल्पना की और न हीं खुदा के किसी मख़लूक़ (प्राणी) में सरायत (घुल मिल जाने) कर जाने और दोनों को मिलाकर एक हो जाने के विश्वास की कोई गुजाईश है। बल्कि एक अल्लाह जो किसी का मुहताज नहीं, के एकत्व की स्वीकारोक्ति और उसका इक़रार है जिसके न कोई बाप है न बेटा और न खुदाई में कोई उसका शरीक व साथी। इसी प्रकार सृष्टि की रचना, पैदाईश, संसार की व्यवस्था व संचालन, ज़मीन व आसमान का प्रभुत्व उसी के हाथ में है। अर्थात इस सृष्टि का एक बनाने वाला है जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा। वह सर्वगुण सम्पन्न है और हर प्रकार के अवगुण व कमज़ोरियों से अछूता है। समस्त

www.abulhasanalinadwi.org

प्राणी और समस्त ज्ञान उसके परिज्ञान में है।

यह पूरी सृष्टि (Universe) उसी के इरादे से है। वह ज़िन्दा है, सुनने वाला, देखने वाला है, न कोई उसकी तरह है, न उसका कोई मुक़ाबिल और बराबरी वाला। वह बेमिसाल (अद्वितीय) है, किसी मदद का मुहताज नहीं, सृष्टि के चलाने और उसकी व्यवस्था करने में उसका कोई शरीक, साथी और मददगार नहीं। इबादत का केवल वही मुस्तहिक़, और उसी का हक़ है, सिर्फ वही है जो रोगी को रोगमुक्ति देता, प्राणी को रोज़ी देता है और उनकी तकलीफों को दूर करता है। अल्लाह के अलावा दूसरों को मअ़बूद बनाना, उनके सामने अत्यन्त पतन, दीनता और आजिज़ी की अभिव्यक्ति, उनको सज्दः करना (माथा टेकना), उनसे दुआ़ और ऐसी चीज़ों में मदद मांगना जो मानव शक्ति से परे और केवल अल्लाह की कुदरत (सामर्थ्य) से सम्बन्ध रखती हैं (जैसे सन्तान देना, क़िसमत अच्छी बुरी करना, हर जगह मदद के लिए पहुंच जाना हर फ़ासले की बात सुन लेना, दिल की बातों और छुपी हुई बातों को जान लेना), इस्लाम में यह शिर्क है, और सब से बड़ा पाप है जो बिना तौबा के क्षमा नहीं होता।

कुरआन मजीद में कहा गया है कि ''उसकी शान यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो उससे कह देता है कि ''हो जा,'' तो वह हो जाती है।

(सूरः यासीन–82)

अल्लाह न किसी के शरीर में उतरता है, न किसी का रूप धारण करता है न उसका कोई अवतार है और न वह किसी जगह अथवा दिशा में सीमित है, जो वह चाहता है सो होता है, जो नहीं चाहता नहीं होता, वह ग़नी (सर्वसम्पन्न) और बेनियाज़ (जो किसी का मुहताज न हो) है, किसी चीज़ का भी मुहताज नहीं, उस पर किसी का हुक्म नहीं चलता, उससे पूछा नहीं जा सकता कि वह क्या कर रहा है? उसके अ़लावा कोई (वास्तविक) हाकिम नहीं।

2. तक़दीर अच्छी हो या बुरी अल्लाह की तरफ़ से है, वह पेश आने वाली चीज़ों को पेश आने और घटित होने से पहले जानता और उन को अस्तित्व में लाता है।

3. उसके प्रतिष्ठा प्राप्त फ़रिश्ते (देवदूत) हैं, खुदा की मख़लूक (कृत) शैतान भी हैं जो आदमियों के लिए बिगाड़ का कारण बनते हैं और उसी की मख़लूक़ में से जिन्नात भी हैं।

4. कुरआन अल्लाह की वाणी है। उसके शब्द अल्लाह की तरफ़ से हैं, वह परिपूर्ण हैं, उसमें कोई कमीबेशी और तबदीली न हुई है और न हो सकती है, वह हर कमीबेशी और तबदीली से सुरक्षित है। जो व्यक्ति इस में कमी अथवा ज़ियादती (तहरीफ) का क़ायल हो वह मुसलमान नहीं।

5. मुर्दों को अपने शरीर के साथ मरने के बाद ज़िन्दा होना निश्चित है, जज़ा (बदला) व सज़ा और हिसाब निश्चित है। जन्नत दोज़ख़ निश्चित है।

6. पैग़म्बरों का अल्लाह की तरफ से दुनिया में आना निश्चित है, यक़ीनी है और उनकी ज़बानी और उनके माध्यम से खुदा का अपने बन्दों का हुक्म करना और शिक्षा देना निश्चित है, बरहक़ है। मोहम्मद सल्ल॰ खुदा के अन्तिम पैग़म्बर हैं, आप के बाद कोई नबी नहीं। आप का आह्वान और पैग़म्बरी सारी दुनिया के लिए है। इस विशिष्टता में और इस जैसी दूसरी विशेषताओं मे वह सब नबियों मे अफ़ज़ल व उत्कृष्ट है। आप की रिसालत और पैग़म्बरी पर ईमान लाये बिना ईमान विश्वसनीय नहीं, और कोई दीन हक़ नहीं, इस्लाम ही अकेला दीन हक़ है। शरीअ़त के आदेशों से बड़े से बड़ा ऋषि–मुनि और परहेज़गार व इबादतगुज़ार लोगों को भी छूट नहीं है।

7. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ मोहम्मद सल्ल0 के बाद इमाम और ख़लीफ़ा–ए–बरहक़ थे, फिर हज़रत उमर (रज़ि॰), फिर हज़रत उस्मान ग़नी (रज़ि॰), फिर हज़रत अ़ली (रज़ि॰) सहाबा मुसलमानों

www.abulhasanalinadwi.org

के धार्मिक नेता और पथ प्रदर्शक हैं, उनको बुरा भला कहना हराम है और उनका मान सम्मान वाजिब व अनिवार्य है।

तौहीद द्धऐकेंीवादऋ का विंीवास मुसलमानों की अन्तर्राष्ट्रीय निशानी है

तौहीद मुसलमानों के सांस्कृति की निशानी और चिन्ह है, जो विश्वासों से लेकर कर्मों तक और इबादत (पूजा–पाठ) से लेकर हर सुख व दुख के अवसर पर स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ेगा। उनके मस्जिद के मीनारों से पांच बार इसकी घोषणा की जाती है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्यनीय नहीं, उनके भवनों और मकानों को भी इसलामी दृष्टिकोण से मूर्ति पूजा और शिर्क की निशानियों से सुरक्षित रहना चाहिए। स्टेचू, मूर्तियां, तस्वीर व फोटो आदि उनके लिए नाजाइज़ (अवैध) हैं। यहां तक कि बच्चों के खिलौने आदि में भी इसका ध्यान रखना चाहिए। धार्मिक कार्यक्रम हो या राष्ट्रीय पर्व हों, राजनेताओं का जन्म दिन हो अथवा ध ार्मगुरूओं का, तस्वीरों और मूर्तियों के सामने झुकना, उनके समक्ष हाथ जोड़ कर खड़े होना, या उनको हार फूल पहनाना, इन सभी कार्यों से मुसलमानों को रोका गया है और यह सभी कार्य उसके ऐकेशवादी संस्कृति के विरूद्ध हैं।

आखिरत द्धमहाप्रलयऋ के विषय में कुरआन का विवरण और उसके तर्क

अल्लाह तआ़ाला के एक होने और उसके गुणों के बारे में अन्बिया (सन्देशवाहक) अलैहिस्सलाम लोगों को सर्वप्रथम बताते हैं। उसके बाद दूसरा बड़ा ज्ञान जो वे संसार को देते हैं और जो उनके अतिरिक्त किसी और माध्यम से प्राप्त भी नहीं किया जा सकता, वह इस बात का ज्ञान है कि इन्सान मर कर पुनः जन्म लेगा और यह कि ब्रह्माण्ड टूट फूट कर पुनः निर्मित होगा। इस दूसरे जन्म में व्यक्ति को अपने पहले जीवन के कर्मो का हिसाब देना होगा और उसने दुनिया की ज़िन्दगी में जो कुछ किया होगा

उसको उसका फल मिलेगा।

मनुष्य के पास इस ज्ञान की प्राप्ति के लिए अम्बिया (सन्देष्टाओं) को छोड़ कर कोई दूसरा साधन व माध्यम नहीं है। मनुष्य के पास किसी वस्तु के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के जो स्त्रोत हैं उनसे न यह ज्ञान प्रारम्भ में प्राप्त किया जा सकता है और न ही उस ज्ञान के द्वारा इस ज्ञान को रद्द किया जा सकता है।

अब मनुष्य के लिए दो ही पथ रह जाते हैं या अम्बिया अलैहिस्सलाम पर भरोसा करके उनके दावे को तर्कों की कसौटी पर कस कर उनकी बात को सत्य मान ले अथवा किसी तर्क या प्रमाण पर दृष्टि डाले बग़ैर उनकी बात का इन्कार कर दे।

अनुवाद– ''आप कह दीजिए कि जो मखलूक़ (सृष्टि) भी आसमानों और ज़मीन में है, उनमें से किसी को ग़ैब (अप्रत्यक्ष) का ज्ञान नहीं, अल्लाह को छोड़ कर (और इस लिए) उन्हें पता नहीं कि वह कब उठाए जाएंगे। बल्कि आखिरत के बारे में उनकी समझ बिल्कुल बेकार हो गई है बल्कि वह उसके बारे में धोके में हैं बल्कि वह उससे बिल्कल अन्धे हैं।'' (सूरः नम्ल : 55,56)

लेकिन जैसा कि ऊपर कहा गया है भविष्य में पेश आने वाली बड़ी घटना के प्रमाण और उसके पेश आने की सम्भावना इस दुनिया और उसकी ज़िन्दगी में मिलते हैं, जिससे एक समझदार आदमी यह अनुमान लगा सकता है कि यह घटना हर प्रकार से सम्भव है और अक़्ल व बुद्धि की रोशनी में उसमें सन्देह का कोई अवसर नहीं है।

उसका एक बड़ा प्रमाण स्वयं मनुष्य का जन्म और उसकी ज़िन्दगी है, यह सर्वप्रथम कुछ भी न था फिर वह वीर्य के बून्द से खून, गोश्त, हड्डी फिर पूरे इन्सानी ढांचे में ढला, उसके बाद वह क्रमशः बचपन, जवानी और अधेड़ उम्र की आयु को पार करके बूढ़ा होता है। वह अपनी इस अल्पायु में कितने मरहलों से होता हुआ गुज़रता है। अब बुढ़ापे में फिर उस का हाल बचपन वाला हो जाता है अर्थात उसका उलटा सफर आरम्भ हो जाता है।

www.abulhasanalinadwi.org

उसकी शक्तियां एक–एक करके क्षीण होती जाती हैं, बुद्धि और दिमाग़ ने उसका साथ छोड़ दिया, वह बच्चे के समान लाचार व मजबूर, दूसरों के देख रेख का मोहताज, वह अपने आप को भूलने लगता है, उसके लिए हर जानी–पहचानी चीज़ अनजानी होती है, इस स्थान पर पहुंच कर यात्रा का एक भाग समाप्त होता है लेकिन उसकी यात्रा का अन्त नहीं हुआ, केवल यात्रा के बीच का एक पड़ाव आ गया है जिसका नाम मृत्यू और बरज़ख (क़ब्र) की ज़िन्दगी है।

अतः जिसको मनुष्य की अस्ल व वास्तविका (मिट्टी और पानी) का पता है, फिर उसके आरम्भ और जन्म के बारे में उसे ज्ञान है, वह मरने के बाद पुनः जीवित होने के बारे में क्योंकर सन्देह कर सकता है और जिसने एक व्यक्ति में इतने बहुत से परिवर्तन देखे हों, उसे एक अन्तिम परिवर्तन के बारे में क्या मुश्किल हो सकती है।

मृत्यू के पुनः जीवित होने का दूसरा खुला हुआ नमूना पृथ्वी का दोबारा जीवित हो उठने के दृश्य हैं, जो बार–बार आंखों के सामने आते रहते हैं, यह धरती जिसके भीतर हज़ारों पैदा होने वाले इन्सान और ज़िन्दा रहने वाले पशुओं की ज़िन्दगी की अमानतें (धरोहर) और ख़ज़ाने हैं। वह मृत्यावस्था में पड़ी होती हैं, उसके होठों पर सूख कर पपड़ियां पड़ जाती हैं। वह मिट्टी का एक बेकार व बेजान लाश होती है जिसके अन्दर न स्वयं कोई ज़िन्दगी होती है और न दूसरे के लिए ज़िन्दगी का कोई सामान, लेकिन जब उसके होंठों पर आकाशीय अमृत बूंदें गिरती हैं और वह हलक़ को तर करते हुए सीने तक पहुंच जाती हैं तो वह धरती मौत की नींद से अचानक उठ जाती है उसमें ज़िन्दगी की शक्ति और जवानी का जोश दौड़ जाता है, वह झूमती और मस्त होती प्रतीत होती है, वह हीरे जवाहरात के खज़ाने उगल देती है, सुगन्धित हरयाली, लहलहाती हुई खेती, और पृथ्वी के त्वचा पर उभरे हुए और फैल जाने वाले कीड़े, और जमीन के कीड़ों की ज़िन्दगी उसकी ज़िन्दगी के सामान का पता देती है, वर्षा और बहार के मौसम में ज़मीन की ज़िन्दगी का यह दृष्य अपनी आंखों से किसने नहीं देखा?

पुनर्जन्म के तर्क व प्रमाण हर स्थान पर देखे जा सकते हैं और प्रत्येक व्यक्ति उन्हें देख है फिर वे बादलों को उठाती हैं, फिर जिस तरह चाहता है आसमान में फैला देता है और उन्हें परतियों और टुक्ड़ों का रूप देता है, फिर तुम देखते हो कि उसके बीच वर्षा की बून्दें टपकी चली आती हैं फिर जब वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है उसे बरसा देता है तो वह खुश हो उठते हैं और इससे पहले तो वह इस बरसाए जाने के बारे में मायूस थे। तो अल्लाह की रहमत की निशानियों की ओर देखो वह किस तरह ज़मीन को उसे मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा करता है, बेशक वह मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है और वह हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थयवान) है।''

(सूरः रूम–48–50)

अनुवाद– ''और अल्लाह ही तो है जो हवाएं चलाता है फिर वे बादल को उभरती हैं, फिर हम उसे किसी सूखी निर्जीव ज़मीन की तरफ हांक देते हैं, फिर हम ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा कर देते हैं और इस तरह मरने के बाद ज़िन्दा हो कर उठना होगा।''

(सूरः फातिर–9)

अनुवाद– ''और यह चीज़ भी उसकी निशानियों में से है तुम देखते हो कि धरती दबी पड़ी (अर्थाथ) सूखी है, फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह लहलहाने लगती है और फूल जाती है, तो जिसने ज़मीन को ज़िन्दा किया वही मुर्दों को भी ज़िन्दा करने वाला है बेशक वह हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थय) है।''

(सूरः हामीम सज्दः–39)

अनुवाद– ''और जिसने आसमान से एक खास मात्रा में पानी उतारा, फिर हमने उससे मुर्दा ज़मीन को जिला दिया, इसी तरह तुम ज़मीन से निकाले जाओगे।''

(सूरः जुख़्रूफ़–11)

इन दो निशानियों और खुल हुए दो नमूनों के सिवा भी ब्रह्माण्ड

www.abulhasanalinadwi.org

पुनर्जन्म के नमूने और दृश्य दिन व रात पेश करता रहता है। यहां हर पल, हर क्षण वस्तुएं बनती और बन कर बिगड़ती रहती हैं। एक बेजान व मुर्दा वस्तु से जीती–जागती ज़िन्दा चीज़ निकलती है और एक जानदार चलती, फिरती हुई चीज़ एक पल में मुर्दा हो जाती है। बहुत सी वस्तुओं से उनकी गुणों व विशेषताओं से विरूद्ध दूसरी विशेषताएं सामने आती हैं, बहुत सी मखलूक़ में बराबर सेल्स के बनने व बिगड़ने का सिलसिला चलता रहता है। जिसने अल्लाह तआ़ला की इस सामर्थता, मखलूकात की जन्म और इस पूरे ब्रह्माण्ड के प्रबन्ध का कुछ भी अध्ययन किया होगा उसको एक पल के लिए भी पुनर्जन्म में सन्देह नहीं हो सकता और उसके लिए उसमें निसन्देह कोई सन्देह का अवसर नहीं है।

अनुवाद– ''क्या लोगों ने देखा नहीं कि अल्लाह किस तरह सृष्टि (कायनात) को पहली बार पैदा करता है? फिर उसको दोहराएगा, यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है। कहदीजिए ज़मीन में चलो फिरो और देखो कि उसने किस तरह पैदाइश सुरू की, फिर अल्लाह ही दोबारा उठा खड़ा करेगा, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत (सामर्थय) रखता है।''

(सूरः अनकबूत–19–20)

इस्लाम के स्तम्भ

अ़क़ीदे के बाद इस्लाम में जिस चीज़ का सबसे बड़ा महत्व है जिस पर बड़ा ज़ोर और जिसकी बड़ी ताकीद की गई है वह इबादत है जो इन्सानों की पैदाइश का प्रथम उद्देश्य है। कुरआन मजीद में है।

अनुवाद – ''और हमने जिन्न व इन्सान को सिर्फ़ इसलिए पैदा किया कि वह इबादत करें।''

इस्लामी शरीअत के अनुसार हर आक़िल–बालिग़ मुसलमान स्त्री–पुरूष पर पाँच चीज़ें फ़र्ज़ हैं और इसलिए इनको पाँच स्तम्भ कहते हैं (1) कलमः तौहीद (2) पाँच वक़्त की नमाज़ (3) अगर ज़कात की शर्तों के पूरा करें तो साल में एक बार अपने माल की ज़कात (4) रमज़ान के रोज़े (5) हज जो

सामर्थ्य रखता हो उस पर ज़िन्दगी में एक बार फ़र्ज़ है।

यह वह अनिवार्यताएं हैं जिनका इन्कार करने वाला इस्लाम की परिधि से बाहर हो जाता है और इनका बराबर छोड़ने वाला भी मुसलमानों की जमाअ़त से ख़ारिज है।

नमाज़ - इस्लाम का दूसरा स्तम्भ

इबादतों में प्रथम और महत्वपूर्ण स्तम्भ नमाज़ है। यह दीन का स्तम्भ और इस्लाम व मुसलमान की पहचान है। यहां तक कि इसको इस्लाम और ग़ैर –इस्लाम के बीच विभाजक रेखा (Line of Demarcation) क़रार दिया गया है। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है –

अनुवाद ''और नमाज़ पढ़ते रहो और मुशरिकों में से न होना।''

(सूरः रूम–31)

और हमारे नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः

अनुवाद– ''इस्लाम और कुफ़्र के बीच (विभाजक रेखा) नमाज़ को छोड़ना है।'' (बुख़ारी, तिर्मिज़ी)

नमाज़ नजात (मोक्ष) की शर्त है और ईमान की रक्षक है। नमाज़ हर आज़ाद, गुलाम, अमीर–ग़रीब, बीमार और तन्दुरूस्त, मुसाफिर और मुक़ीम (ग़ैर मुसाफ़िर) हर एक पर हमेशा के लिए, हर हाल में फ़र्ज़ है और इसको अल्लाह ने हिदायत (अनुदेश) और रहनुमाई तथा तक़वा परहेज़गारी (संयम) की बुनियादी शर्त के तौर पर बयान किया है। किसी बालिग़ मुसलमान को किसी ह़ाल में इससे छूट नहीं दी जा सकती। हां, अगर खड़े होकर न पढ़ सके तो बैठकर और बैठ कर भी न पढ़ सके तो लेटकर और अगर इसमें भी कठिनाई होती है तो संकेत से पढ़ सकता है, लेकिन नमाज़ माफ़ न होगी। यहां तक कि युद्ध क्षेत्र में भी (ख़ास तरीके पर) नमाज़ अदा करने का हुक्म है और इसे "सलातुल ख़ौफ़" कहा जाता है। सफ़र में यह रिआ़यत है कि चार रकअ़तों वाली नमाज़ (जुहर, अस्र, इशा) दो रकअ़तों में अदा करें। सफ़र में सुन्नत और नफ़िल नमाज़ें इख़्तियारी रह जाती हैं

www.abulhasanalinadwi.org

चाहे पढ़े या न पढ़े।

नमाज़ एक ऐसा फ़र्ज़ है जिससे किसी नबी और रसूल को भी छूट नहीं है। किसी वली, आ़रिफ़ व मुजाहिद का तो सवाल ही नहीं, नमाज़ मोमिन के ह़क़ में ऐसी है जैसे मछली के ह़क़ मे पानी। नमाज़ मोमिन की शरणस्थली और अमन की जगह है। अल्लाह फ़रमाता है :

अनुवाद– ''कुछ शक नहीं कि नमाज़ बेह़याई और बुरी बातों से रोकती है।

(सुरः अलअ़नकबूत–45)

नमाज़ एक आध्यात्मिक पोषण

चूंकि इन्सान को इस धरती पर अल्लाह का ख़लीफ़ा (प्रतिनिधि) बनना था और अत्यन्त संवेदनशील पद पर पदस्थापित होना था इसलिए उसमें इच्छाएं भी रखी गई हैं और उसके साथ कुछ ज़रूरतें भी साथ कर दी गई हैं। उसमें संवेग भी है और प्रेम की गरमाहट भी, दुःख का एहसास भी और सुख की अनुभूति भी, जिज्ञासा भी, वह जिज्ञासु भी है और ज्ञानमयी भी। वह भूतल की और भूमिगत समस्त सम्पदा से लाभ उठाने और उसे अपने उद्देश्यों के लिए प्रयोग में लाने के लिए भरपूर क्षमता रखता है। इस गरिमापूर्ण पद की ज़िम्मेदारियों को निबाहने के लिए उसको उसको ऊँचे–ऊँचे पहाड़ों, वनस्पति, जीव और निर्जीव की तरह निरन्तर खड़े रहने, निरन्तर झुके रहने, (रूकूअ़), निरन्तर सज्दः में रहने और निरन्तर अल्लाह के गुणगान करते रहने का पाबन्दी नहीं बनाया गया। इन तमाम तत्वों को दृष्टिगत रखते हुए मानव के लिए एक ऐसी उपासना पद्धति की आवश्यकता थी जो उस के स्वभाव, पद की ज़िम्मेदारियों, सृष्टि में उसकी प्रतिष्ठा व पद और ज़िम्मेदारी से मेल खाती हो जिसे संसार के सर्जनहार ने उसके कन्धों पर डाली है।

एक तरफ़ इबादत इन्सान के लिए ज़रूरी भी थी, क्योंकि यह उसकी प्रवृत्ति की मांग, उसके अस्तित्व का उद्देश्य, उसके अन्तःकरण की आवाज़, उसकी सज्जनता और कृतज्ञता की अभिव्यक्ति और आत्मा की

खुराक है, दूसरी तरफ़ यह भी ज़रूरी था, कि यह इबादत उसके शारीरिक गठन और व्यक्तित्व के अनुरूप और उसकी नाजुक व महत्वपूर्ण हैसियत और सृष्टि में उसके विशिष्ट स्थान के सर्वथा अनुकूल हो और उससे मेल खाती हो, और उस परिधान (लिबास) की तरह हो जो उसके शरीर पर पूरी तरह फिट आये और उस पर अच्छा लगे, न तंग हो, न ढीला, न कम हो न ज़ियादा।

नमाज़ वास्तव में यही परिधान है जो ठीक–ठीक उसके अस्तित्व पर पूरा उतर रहा है और जिसमें किसी प्रकार की कोई कमी बेशी नज़र नहीं आती।

यह पांचों नमाज़ें (जो फ़र्ज़ की गई हैं) उन्हें निर्धारित समय में अदा करना ज़रूरी है जो अल्लाह ने निश्चित किये हैं। कुरआन मजीद में इनके समय की ओर संकेत किया गया है। इन पांच नमाज़ों के लिए रकअ़तें भी निर्धारित हैं जिनकी पाबन्दी ज़रूरी है।

नमाज़ कैसे पढ़ी जाये

अल्लाह ने नमाज़ को सम्मान व श्रृद्धा, लगन और तन्मयता, प्रतिष्ठा व गम्भीरता, सहयोग और सामूहिकता का ऐसा वातावरण प्रदान किया है जिसकी नज़ीर किसी अन्य धर्म में नहीं मिलती।

अब आइये मालूम करें कि नमाज़ किस प्रकार पढ़ी जाये और इसमें क्या पढ़ा जाये, कैसे खड़े हों, कैसे झुकें और किस प्रकार इसे प्रारम्भ करें और समाप्त करें।

अज़ान

सबसे पहले अज़ान को लीजिये जो पांच वक्त बुलन्द आवाज़ से कही जाती है जिसकी गुंज से कोई गांव, कोई शहर और मिली जुली आबादी वाली कोई बस्ती मुश्किल से ख़ाली होगी। अज़ान के शब्द और उस का अनुवाद इस प्रकार है :

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर '2'	अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है।
अशहुद अल्ला इलाहा इल्लल्लाह '2'	मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं।
अशहुद अन्नामुहम्मदर्रसूलुल्लाह '2'	मैं गवाही देता हूं कि मोहम्मद स0 अल्लाह के रसूल हैं।
हैय्या अलस्सलाह़ '2'	आओ नमाज़ की ओर।
ह़ैय्या अ़लल्फ़लाह '2'	आओ कामयाबी की ओर।
अल्लाहु अकबर '2'	अल्लाह सबसे बड़ा है।
लाइलाह इल्लल्लाह '1'	नहीं है कोई मअ़बूद सिवाय अल्लाह के [1]

नमाज़ के एलान का नाम अज़ान है

नमाज़ के एलान के लिए और नमाज़ के बुलावे के तौर पर जो वाक्य कहे जाते हैं उसमें इस्लाम के उद्देश्य, अद्वैतवाद की पहचान और दीन का निचोड़ संक्षेप में सहज रूप से सारगर्भित है और इस एलान में इस्लाम की सुनिश्चित और ठोस दअ़वत सन्निहित है। अज़ान में दीन इस्लाम का सारांश और खुलासा आ गया है। अज़ान अल्लाह की बड़ाई का एलान है कि वह हर बड़े से बड़ा है फिर इसमें दोनों गवाहियां मौजूद हैं, तौहीद की गवाही भी और रिसालत की गवाही भी। अज़ान में नमाज़ की दअ़वत और पुकार है कि नमाज़ लोक परलोक दोनों में भलाई का रास्ता है। अज़ान के शब्द मन–मस्तिष्क दोनों को एक साथ सम्बोधित करते हैं, मुस्लिम, ग़ैर–मुस्लिम दोनों को आकर्षित करते हैं, सुस्त आदमी में चुस्ती पैदा करते हैं और ग़ाफ़िल को होशियार करते हैं।

1. सुबह़ की अज़ान में ह़य्या अलल फ़लाह के पश्चात 'अस्सलातु ख़ैरूम्मिनन्नौम' भी कहते हैं जिसका अर्थ है 'नमाज़' नींद से बेहतर है।

पाकी द्धतहारतत्र

नमाज़ के लिए तहारत का हुक्म दिया गया है। कुरआन मजीद में अल्लाह तअ़ला का इरशाद है:

अनुवाद– ''ऐ ईमान वालों जब तुम नमाज़ को उठो तो अपने चेहरे और अपने हाथों को कोहनियों सहित धो लिया करो और अपने सरों पर मसह कर लिया करो और अगर तुम जनाबत (मैथुन के पश्चात, स्नान की आवश्यकता, अशुचि, अपवित्रता) की हालत में हो तो (सारे शरीर को) पाक साफ़ कर लो और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में से कोई इस्तिन्जा (शौच) से आये तो तुम ने मैथुन किया हो फिर तुम को पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लिया करो अर्थात अपने चेहरे और हाथों को इससे मसह़ कर लिया करो। अल्लाह नहीं चाहता कि तुम्हारे ऊपर तंगी डाले, बल्कि वह तो चाहता है कि तुम्हें खूब पाक साफ़ रखे और तुम पर अपने नेअ़मत (वरदान) पूरी करे ताकि तुम शुक्रगुज़ारी करो।'' (सूरः माइदा–6)

पाकी और वुज़ू अगर ईमान व एह़तिसाब[1] के साथ अमल मे आये तो वह मनुष्य के अन्दर एक प्रकार की चुस्ती को जागृत करता है और नमाज़ के स्वागत और उसे क़बूल किये जाने की क्षमता उत्पन्न करता है।

ह॰ मुह़म्मद (सल्ल॰) ने वुज़ू व तहारत में दातून करने की भी शिक्षा दी है और ताकीद की है।

1. ईमान व एहतिसाब का अर्थ है कि अल्लाह के वादों और उसके रसूल के बताये हुए बदले और सवाब पर पूरा विश्वास हो और वह इन क्रियाओं को निष्ठा और लगन के साथ करे। कर्म की क़बूलियत और वज़न में इसको बड़ा दख़ल है। हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फ़रमाया ''जब मुस्लिम बन्दा वुज़ू करता है और अपना मुंह धोता है तो उसके चेहरे से हर गुनाह जो उसने अपनी निगाहों से किया है पानी के साथ या पानी की अन्तिम बूंद के साथ धुल जाता है, जब वह अपने हाथ ध ोता है तो उसके हाथों के सारे गुनाह जो उसके हाथों से हुए हैं वह पानी के साथ या पानी की अन्तिम बूंद के साथ निकल जाते हैं। यहां तक कि वह गुनाहों से बिल्कुल पाक–साफ़ हो जाता है।(तिर्मिज़ी) सह़ीह़ मुस्लिम में इतना और है कि जब वह अपने पैर धोता है तो पैरों से जिनसे चलकर उसने कोई गुनाह किया है, सब गुनाह धुल जाते हैं।''

www.abulhasanalinadwi.org

नमाज़ से पहले वुज़ू

नमाज़ से पहले मुसलमान को वुज़ू करना होता है। वुज़ू तहारत के उस ख़ास तरीक़े का नाम जिस के बिना नमाज़ नहीं होती। वुज़ू में पहले पहुंचे तक तीन बार[1] हाथ धोये जाते हैं, फिर तीन बार कुल्ली की जाती है, फिर तीन बार नाक, पानी से साफ़ की जाती है, फिर तीन बार मुख को माथे के बालों से ठुड्डी के नीचे तक और इस कान से उस कान की लौ तक धोते हैं, फिर दाहिना हाथ कोहनियों सहित तीन बार धोकर बायां हाथ कोहनियों सहित तीन बार धोते हैं, फिर एक बार सारे सर का मसह करते हैं, अर्थात हाथ तर करके सर के बालों पर एक बार फेर लेते हैं, फिर दाहिना पांव टखनों तक तीन बार धोते हैं, फिर बायां पांव इसी प्रकार धोते हैं। पेशाब, पाख़ाना और रियाह (हवा) आदि ख़ारिज होने से यह वुज़ू ज़रूरी हो जाता है इसके बिना नमाज़ दुरूस्त नहीं होती, सो जाने से वुज़ू की ज़रूरत पड़ जाती है। एक वुज़ू से (अगर वह न टूटे) कई–कई वक्त की नमाज़ें पढ़ी जा सकती हैं।

मस्जिद में मुसलमान का मअमूल और तरीक़ा

मस्जिद जाकर अगर वुज़ू है तो उसी वक़्त नहीं तो वुज़ू करके आदमी सुन्नत या नफ़ल पढ़े, अगर वह पढ़ चुका है तो ख़ामोश नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठ जाये या कुरआन शरीफ़ की तिलावत (पाठ) अथवा वज़ीफ़ों में व्यस्त रहे। जमाअ़त का वक़्त आता है तो पहले इक़ामत कही जाती है जो जमाअ़त के शुरू होने का एलान है, इसमें सब वहीं शब्द हैं जो अज़ान में कहे जाते हैं, केवल दो वाक्य अधिक होते हैं– क़द क़ामतिस्सलाह क़द क़ामतिस्सलाह (नमाज़ खड़ी होने जा रही है, नमाज़ खड़ी होने जा रही है) यह वाक्य हय्य अल्ल फ़लाह के पश्चात बढ़ाये जाते हैं।

सफ़बन्दी और जमाअ़त

जो लोग मस्जिद में इधर उधर या किसी नेक काम में लगे होते

1. हर अंग तीन बार धोना सुन्नत है, वुज़ू दो या एक बार धोने से भी हो जाता है।

हैं सब सफ़ (क़तार) में आकर खड़े हो जाते हैं। इक़ामत के ख़ात्मे पर इमाम जो मुहल्लों का कोई धार्मिक विद्वान, अथवा ह़ाफिज़ या कोई पढ़ा लिखा मुसलमान होता है,[1] तकबीर कहता हुआ कानो की लौ तक हाथ उठाकर नाफ़ पर हाथ बांध लेता है और नमाज़ शुरू कर देता है और इस तरह इमाम और मुक़तदी (अनुसरण करने वाले) गुलामों की तरह़ हाथ बांधे हुए खुदा के सामने खड़े हो जाते हैं। इमाम नमाज़ियों से आगे बीच में खड़ा होता है। कुछ देर इमाम व मुक़तदी सब ख़ामोश होकर एक दुआ़ पढ़ते हैं जो इस प्रकार है :

''सुबह़ानकल्लाहुम्मा व बिह़म्दिका व तबारकसमुका व तआ़ला जद्दुका व लाइलाहा ग़ैरूक''

अनुवाद – ऐ अल्लाह तू ख़ूबियों वाला है, तेरा नाम मुबारक है, तेरी शान बुलन्द है और तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं है।

फिर अगर नमाज़ जहरी होती है तो इमाम आवाज़ से क़िराअत शुरू कर देता है।[2] इस दुआ के बाद वह सूरः फ़ातिहा पढ़ता है, यह हर नमाज़ में पढ़ी जाने वाली सूरः है और कुरआन मजीद का आमुख (Preface) और इस्लाम का खुलासा है। यह कुरआन का सबसे अधिक पढ़ा जाने वाला भाग है और इस्लाम में इसका बड़ा दर्जा है। सूरः फ़ातिह़ा का अनुवाद इस प्रकार हैः

अनुवाद – शुरू अल्लाह का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।

1. इस्लाम में कोई प्रीस्ट क्लास (पुरोहित वर्ग) नहीं है जिनके बिना मुसलमानों की इबादतें न अदा हो सकें, कोई मुसलमान इस काम को कर सकता है। लेकिन अब व्यवस्था और सहूलत के कारण प्रायः मस्जिदों में इमाम और मुअज़्ज़िन मुक़र्रर हैं और चूंकि वह इस काम के लिए अपने को फ़ारिग़ कर देते हैं इसी काम पर रहते हैं इसलिए मुहल्ले अथवा मुसलमानों की जमाअ़त या औक़ाफ़ से इनको वेतन दिया जाता है।

2. पांच नमाज़ों में से तीन जहरी है– मग़रिब, ईशा, फ़ज्र और दो सिर्री अर्थात इनमें तकबीरों के सिवा इमाम ज़ोर से कुछ नहीं पढ़ता, वह ज़ुहर और अस्र की नमाज़ें हैं।

www.abulhasanalinadwi.org

सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम जहानों का पालनहार है। बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला। इन्साफ़ के दिन का मालिक है। ऐ अल्लाह हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं। हमको सीधे रास्ते पर चला, उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तू अपना फ़ज़्ल व करम करता रहा, न कि उनके जिन पर गुस्सा होता रहा और न गुमराहों के।

इस सूरः के ख़त्म होने पर इमाम और मुक़तदी 'आमीन' कहते हैं। जिसका अर्थ है 'ऐ अल्लाह हमारी दुआ कुकूल फ़रमा।'

सूरः फ़ातिहा के बाद कुरआन मजीद के कसी ऐसे भाग की तिलावत का हुक्म है जो याद हो और आसानी से ज़िहन में आ जाये। इसका उद्देश्य यह है कि यह अर्थ और भाव भली प्रकार मन में बैठ जाये और इनकी जड़ें गहरी और मज़बूत हो जाएं। इसलिए कि नमाज इबादत भी है और शिक्षा भी। इमाम कुरआन शरीफ़ की कोई सूरः या कुरआन की कुछ आयतें पढ़ता है। इसके बाद इमाम तकबीर कहता है और सब नमाज़ी आधा झुक जाते हैं इसको रूकूअ़ कहते हैं, इसमें तीन बार या इससे अधिक सुब्हान रब्बियल अज़ीम (मेरा रब जो बड़ी शान वाला है, पाक है) कहा जाता है, फिर इमाम कहता है, "समेअल्लाहु लेमन हमिदः (अल्लाह ने उसको सुना जिसने उसकी स्तुति बयान की) और लोग ज़रा देर के लिए सीधे खड़े हो जाते हैं और मुक़तदी ''रब्बना लकल हम्द'' (ऐ हमारे रब तेरे वास्ते सब खूबियां हैं) कहते हैं। फिर इमाम अल्लाहु अकबर कहते हुए सज्दे में जाता है और मुक़तदी भी उस की पैरवी करते हैं। सज्दे में माथा और नाक ज़मीन पर होती है, दोनों हथेलियां खुली हुई ज़मीन पर टिकी होती हैं, कोहनियां ज़मीन से उठी हुई और बग़लों से अलग होती हैं, घुटने ज़मीन से लगे होते हैं। सज्दे में तीन बार या इससे अधिक ''सुबहान रब्बीयल आ़ला'' (मेरा रब सब से बुलन्द है) कहा जाता है, इसके बाद ''अल्लाहु अकबर'' कहते हुए विशेष आकृति में सीधे बैठ जाते है, फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए इसी तरह दूसरे सज्दे में जाते हैं। सज्दः पूरी नमाज़ में खुदा के सानिध्य का सबसे अन्तिम रूप है और खुदा को सर्वाधिक प्रिय व पसन्दीदा है। हदीस

में आता है कि–

अनुवाद – ''बन्दा अपने रब से सर्वाधिक क़रीब सज्दे में होता है, इसलिए इसमें खूब दुआ करो।''

(अबू दाऊद)

अतएव नमाज़ी इस क़ीमती मौक़े को ग़नीमत जानता है। फिर दूसरी रकअ़त के लिए खड़े हो जाते हैं इसकी वही तरकीब है जो पहली रकअ़त में गुज़री इस पर हर रकअ़त को क़यास करना चाहिए। हर दो रकअ़त के बाद बैठना ज़रूरी है जिसको ''क़अ़दा'' कहते हैं जिस क़अ़दा के बाद खड़ा होना हो उसमें अत्तहीयात पढ़ते हैं जिसका अर्थ इस प्रकार है :–

अनुवाद – ''सब सलाम और रहमतें और पाक चीज़ें अल्लाह ही के लिए हैं। ऐ अल्लाह के नबी आप पर अल्लाह की रहमत और सलाम हो और उसकी बरकत नाज़िल हो और सलाम हम पर और खुदा के नेक बन्दों पर हो। मैं इक़रार करता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और में इक़रार करता हूं कि मुहम्द सल्ल॰ उसके बन्दे और रसूल है।''

और जिस क़अ़दा के बाद सलाम फेरना होता है उसमें इस दरूद को और बढ़ा देते हैं जिसका अनुवाद यह है :

''ऐ अल्लाह, मुहम्मद सल्ल॰ और उनके घर वालों पर रहमत नाज़िल कर जैसा कि तूने हज़रत इब्राहीम अ0 और उनकी आल पर नाज़िल फ़रमाई है। निश्चय ही तू तमाम खूबियों वाला है और बुजुर्गी वाला है ऐ अल्लाह बरकत नाज़िल कर ह॰ मुहम्मद सल्ल॰ और उनकी आल पर जैसी बरकत नज़िल की है हज़रत इब्राहीम अ0 और उनकी आल पर यक़ीनन तू खूबियों वाला और बुजुर्गी वाला है।''

www.abulhasanalinadwi.org

मोमिन का आत्म विश्वास

अल्लाह की स्तुति बयान करने, उसका हक़ अदा करने और हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ पर दुरूद व सलाम भेजने के बाद नमाज़ी को भी इस सलाम व रह़मत में से कुछ अंश अवश्य मिलता है। जिसका वह मुहताज है और जिस की कामना करता है और जो इस्लाम की पहचान है और यह मअ़लूम होता है कि वह हर जगह हर युग में नेकों के साथ है, और सलाम व सलामती में उनका साथी और बराबर का हिस्सेदार, भागीदार है। यह बात नमाज़ी में आशा और आत्मविश्वास पैदा करती है। निराशा को दूर करती है। नमाज़ नमाज़ी को उम्मत के दूसरे नमाज़ियों के साथ एक सफ़ में खड़ा कर देती है।

फिर नमाज़ी अपने लिए दुआ करता है और जहन्नम के अज़ाब, क़ब्र के अज़ाब, ज़िन्दगी व मौत की आज़माइशों से अल्लाह की पनाह चाहता है।

नमाज़ का समापन

नमाज़ की समाप्ति पर उसे हर प्रकार से भली–भांति अदा करने के बावजूद नमाज़ी अपनी भूल–चूक, अपनी कोताही को स्वीकार करता है, उसका ऐतिराफ़ करता है, मानों वह यह कहता है कि हमने आपकी वैसी इबादत न की जैसी इबादत करने का हक़ है और वह समापन पर जो दुआ पढ़ता है उसका अनुवाद इस प्रकार है :–

''ऐ अल्लाह मैंने अपने नफ़्स (अस्तित्व) पर बहुत जुल्म किया है, और तेरे सिवा नहीं है कोई इन गुनाहों को मआ़फ़ करने वाला। बस तू अपनी विशेष कृपा से मुझ मआ़फ फ़रमा। और मुझ पर रहम फ़रमा बेशक तू ग़फ़ूरूर्रहीम है।'' (सह़ीह़ बुख़ारी)

मुस्लिम समाज में मस्जिदों का महत्व

नमाज़ के लिए ऐसी मस्जिदें बनाई गई हैं जो अपनी सादगी,

गरिमा, शान्ति और सुख–चैन, पवित्रता व पाकीज़गी, अपने भरपूर शान्तिमय अध्यात्मिक वातावरण और तौह़ीद (अद्वैतवाद) के खुले हुए लक्षण में दूसरे धर्मों की इबादतगाहों से बिल्कुल भिन्न हैं। कुरआन मजीद में अल्लाह तआ़ला का इरशाद है :

अनुवाद – ''(वह) ऐसे घरों में है जिनके लिए अल्लाह ने हुक्म दिया है कि उनका अदब किया जाये और उनमें उसका नाम लिया जाये, इनमें वह लोग सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बयान करते हैं, ऐसे लोग जिन्हें न तिजारत ग़फ़लत में डालती है, न क्रय–विक्रय अल्लाह की याद से और नमाज़ पढ़ने से और ज़कात देने से। वह डरते रहते हैं ऐसे दिन से जिसमे दिल और आंखें उलट जायेंगी।''

(सूरः नूर 36–37)

अनुवाद – ''और यह कि मस्जिदें (ख़ास) अल्लह की हैं, तू अल्लाह के साथ किसी और की इबादत न कर और हर सज्दे की जगह अपना रूख़ सीधा रखा करो, और उसे (अर्थात, अल्लाह को) पुकारा करो, दीन को उसी के वास्ते ख़ालिस करके।''

(सूरः अअ़राफ़–29)

अनुवाद –''ऐ आदम की औलाद!हर सज्दागाह के मौक़े पर अपना लिबास पहन लिया करो।''

(सूरः अअ़राफ़–31)

मस्जिदें, बजातौर पर, मुसलमानों के धार्मिक केन्द्र और उनकी शिक्षा–दीक्षा, और उनके सुधार व मार्गदर्शन की स्रोत बन गई थीं, इनमे मुसलमानों के सामूहिक व धार्मिक मुआ़मले हल किये जाते थे, जीवन के विभिन्न संकायों में उनको निर्देश दिये जाते थे। जब कोई बड़ी घटना घटित होती और मुसलमानों को नये निर्देश देने होते तो अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ आदेश देते कि मुसलमानों मे एलान कर दिया जाये कि आज नमाज़ मस्जिदे नबवी में पढ़ें।

www.abulhasanalinadwi.org

मस्जिदों को यह केन्द्रत्व व व्यापता बराबर हासिल रही। सारा जीवन इसी धुरी पर घूमता था। ज्ञान वह मार्गदर्शन के स्रोत, सुधार व सन्देश के अभियान सब इसी केन्द्र से पैदा होते और फैलते थे। आज भी इन मस्जिदों में वह पुराना असर बाक़ी है।

जुमअः द्धजुमात्रू हफ़्ते की ईद

जुमा के दिन जुहर की नमाज़ के बजाय जुम्अे की विशिष्ट नमाज़ होती है वक़्त इसका वही है जो जुहर का है इसमें एक तरफ़ तो यह कमी कर दी गई है कि चार रकअ़त के बजाय दो रकअ़त होता है दूसरी तरफ़ यह बढ़ोत्तरी है कि नमाज़ से पहले खुत्बा होता है और नमाज़ जहरी होती है। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है :–

अनुवाद –''ऐ ईमान वालों जब जुम्ए के दिन अज़ान कही जाये तो नमाज़ के लिए चल पड़ा करो। अल्लाह की याद की तरफ और क्रय–विक्रय छोड़ दिया करो, यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है अगर तुम कुछ समझ रखते हो।'' (सुरः जुमअः–1)

हदीस में है :–

अनुवाद :–''जो तीन जुमअे़ सुस्ती और आलस में छोड़ देता है, अल्लाह उसके दिल पर मुहर लगा देता है।'' (मुस्लिम)

जुम्ए की नमाज़ के लिए नहाने, दातून करने, खुशबू लगाने और अधिक से अधिक पवित्रता की व्यवस्था करने का हुक्म है और इसमें नमाज़ से पूर्व खुत्बा भी दिया जाता है। हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ जो खुत्बा देते थे जो सम्बोधन करते थे उसमें जीवन की वास्तविकताएं साफ़ झलकती थीं।

खुत्बे को बहुत खामोशी और गम्भीरता के साथ सुनने का हुक्म है ताकि उसका भरपूर लाभ प्राप्त हो सके। खुत्बे के दौरान बात चीत की सख़्त मनाही है, यहां तक कि अपने पास बैठे हुए आदमी को बातचीत करने से रोकना भी मना है। हदीस में आता है कि ''जिसने जुमअः के दिन अपने साथी से कहा कि ख़ामोश रहो उसने भी ज़ायद और फुजूल बात की।''

एक अरबी खुत्बे का अनुवाद

भारत में अधिक लोकप्रिय और प्रचलित एक अरबी खुत्बे का अनुवाद यहां नमूने के तौर पर प्रस्तुत किया जा रहा है–

अनुवाद – ''हम्द व सलात के बाद, ''लोगों! तौहीद को अख्तेयार करो (अल्लाह को एक समझो और उसके साथ किसी को शरीक न समझो) इसलिए कि तौहीद खुदा की सबसे बड़ी फरमॉबरदारी और सबसे प्रिय अमल है। हर काम में अल्लाह से शर्म व लिहाज़ करो इसलिए कि शर्म व लिहाज़ लज्जा व भय की आदत तमाम नेकियों की बुनियाद है। अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ के आचरण को (सुन्नत) मज़बूत पकड़ो, इसलिए कि सुन्नत पर चल कर आदमी आज्ञाकारी बनता है। और जो अल्लाह व रसूल की बात मानेगा वह सीधी राह का राही और लक्ष्य को प्राप्त करने वाला होगा। दीन में जो नई नई बातें निकाली गई हैं (बिदअ़त) उन से दूर रहना, इसलिए कि इससे गुमराही में पड़ जाओगे। अपने पूरे जीवन में सत्यमार्ग अपना लो क्योंकि सच्चाई में मोक्ष और झूठ में मौत है। भलाई और नेकी को अपने जीवन में उतारो इसलिए कि अल्लाह को नेकी करने वाले प्रिय हैं। अल्लाह की रह़मत से कभी निराश मत हो क्योंकि वह तमाम रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है। मायाजाल में न फंस जाना कि सब कुछ खो बैठो। देखो किसी को तब तक मौत नहीं आ सकती जब तक कि उसको उसके हिस्से की रोज़ी न पहुंच जाये इसलिए खुदा की हलाल व हराम, जायज़ व नाजायज़ तरीक़े की रोज़ी कमाने का प्रयास निरर्थक है। अपने कामों में खुदा पर भरोसा रखो। इसलिए कि उसको अपने ऊपर भरोसा करने वालों का बड़ा ध्यान है। दुआ़ में कमी न करो इसलिए कि खुदा सबकी सुनता है और सब की झोली भरता है उससे अपने गुनाहों की बख़्शिश

www.abulhasanalinadwi.org

चाहते रहो। इससे तुम्हारे माल व औलाद में बरकत होगी। कुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है :–

''तुम्हारे परवरदिगार ने कह दिया है कि मुझ से मांगो मैं दूंगा। बेशक जिन लोगों को मेरी बन्दगी इख़्तियार करने से अभिरूचि नहीं है और उनकी शान को बट्टा लगता है वह नर्क में अपमानित होकर जायेंगे''।

(सूरः मोमिन–60)

अल्लाह हमको और तुमको कुरआन की दौलत अधिकाधिक प्रदान करे और हमको और तुमको कुरआन की आयतों और उसके उपदेशों से लाभ पहुंचाये। मैं अपने लिए, तुम्हारे लिए और तमाम ईश्वरीय संविधान पर चलने वालों के लिए खुदा के रहम की दुआ करता हूं, तुम भी उससे क्षमा याचना करते रहो, बेशक वह बड़ा क्षमा करने वाला और बड़ा दया (रहम) करने वाला है।

नमाज़ें विभिन्न हैं और नमाज़ियों के मर्तबे भी विभिन्न

कुरआन मजीद में नमाज़ों का उल्लेख दो प्रकार से आता है एक का बुराई के साथ दूसरे का अच्छाई के साथ। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है :–

अनुवाद –''सो बड़ी ख़राबी है ऐसे नमाज़ियों के लिए जो अपनी नमाज़ को भुला बैठते हैं (और) जो ऐसे हैं कि आडम्बर करते हैं। और हक़ीर (तुच्छ) चीज़ें तक रोके रहते हैं''।

(सूरः माऊन–4–7)

दूसरे प्रकार उल्लेख करते हुए इरशाद होता है–

अनुवाद –''निश्चय ही (वह) मोमिन कामयाबी पा गये जो अपनी नमाज़ में नम्रता रखने वाले हैं।

(सूरः मूमिनून–1–2)

इसी प्रकार हज़रत मोहम्मद सल्ल॰ ने भी दो प्रकार की नमाज़ों का

उल्लेख किया है– एक नम्रता, विनय और तन्मयता वाली नमाज़ और एक ग़फ़लत व लापरवाही वाली नाक़िस नमाज़। अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ ने फ़रमाया, ''जो मुसलमान भी अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर खड़े होकर दो रकअ़त नमाज़ अदा करता है, और अपने दिल और चेहरा दोनों के साथ नमाज़ में तल्लीन रहता है। तो उस पर जन्नत वाजिब हो जाती है'' दूसरे प्रकार की नमाज़ के बारे में फरमाया, ''आदमी नमाज़ से फ़ारिग़ भी हो जाता है और उसको उसकी नमाज़ का मात्र दसवां भाग नसीब होता है और कभी–कभी नवां, आठवां, सातवां, छठा, पांचवां, चौथाई, तिहाई और आधा।''

अल्लाह के रसूल ह0 मुहम्मद सल्ल॰ की नमाज़ सर्वोत्कृष्ट थी, हज़रत अबूबक्र रजि0 की नमाज़ किसी दूसरे की नमाज़ की अपेक्षा ह0 मुहम्मद सल्ल॰ की नमाज़ से सबसे ज़्यादा मिलती–जुलती और करीब थी, इस लिए आप सल्ल॰ ने अन्त समय में हज़रत अबूबक्र रज़ि0 को अपनी जगह इमामत का हुक्म फ़रमाया। लोगों के मर्तबे का सही अन्दाज़ा जितना नमाज़ से हो सकता है उतना किसी और चीज़ से नहीं हो सकता। नमाज़ ही वह सहीह़ पैमाना है जिस पर इन्सान के दीन का और इस्लाम में उसके मक़ाम का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

इस्लाम का तीसरा स्तम्भ ज़क़ात

कुरआन मजीद में सूरः तौबा की ग्यारहवीं आयत में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया –

अनुवाद –''लेकिन अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ के पाबन्द हो जाएं और ज़कात देने लगें तो वह तुम्हारे भाई हो जायेंगे।''

इस्लाम में ज़कात का महत्व

कुरआन मजीद में नमाज़ के साथ ज़कात का उल्लेख हर जगह आया है, इसके अलावा मुसलमानों के गुण जहां–जहां बयान किये गये हैं, वहां भी नमाज़ और ज़कात की बात एक साथ कही गई है। हज़रत मुहम्मद

www.abulhasanalinadwi.org

सल्ल॰ ने ज़कात को इस्लाम का स्तम्भ बताया है। आपका इरशाद है कि ''इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है, इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं, नमाज़ क़ायम करना, ज़कात देना, हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना''।

आप (सल्ल॰) से पूछा गया कि ''इस्लाम क्या है?'' आपने जवाब दिया कि ''अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न करो, फ़र्ज़ नमाज़ क़ायम करो, ज़कात अदा करो और रमज़ान के रोज़े रखो।''

इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था का मौलिक स्वरूप

कुरआन मजीद ने तमाम इन्सानी मुआ़मलों को अल्लाह के हवाले कर दिया है और इन्सान को सिर्फ एक चीज़ का ज़िम्मेदार बनाया है और वह चीज़ है ख़िलाफ़त का मन्सब। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है :

अनुवाद –''और अल्लाह के उस माल में से उन्हें भी जो उसने तुम्हे दिया है।'' (सूरः नूर–33)

''और जिस माल में से उसने तुमको दूसरों का जानशीन बनाया है उसमें से ख़र्च करो।'' (सूरः हदीद–7)

''तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते हो, अन्ततः आसमान और ज़मीन सब अल्लाह ही के रह जायेंगे।'' (सूरः हदीद–10)

इस वस्तुस्थिति के फलस्वरूप होना तो यह चाहिए कि इन्सान अपनी हर मिलकियत से हाथ खींच ले और उसको अपनी ज़मीन–जायदाद में तनिक भी उपयोग का ह़क़ बाक़ी न रहे, लेकिन अल्लाह की रहमत और हिकमत ने इन्सान के साथ यह मुआ़मला नहीं किया, यदि ऐसा होता तो इस में कोई आश्चर्य की बात न थी किन्तु इससे मानव आत्मविश्वास, हौसला और लगन, उमंग और तरंग तथा जिज्ञासा की ललक और संक्षेप में जीवन के उस रस व स्वाद से वंचित रह जाता जो उसे अपनी मेहनत का फल देख कर हासिल होता है। यह वह स्वाभाविक स्वाद है, जो बच्चों

को अपने घर और अपने माता पिता की चीज़ों को अपना बताने से प्राप्त होता है। यदि मानव इस भावना से वंचित हो जाये तो वह निष्ठा व लगन, सद्भावना, उन चीज़ों की सुरक्षा और उनके बढ़ावे की उमंग से कट कर रह जायेगा और मानव के अस्तित्व व विकास के लिए यह चीज़ें अपरिहार्य हैं। यदि जीवन में ललक और उमंग और अपना होने की भावना न हो तो यह दुनिया एक बड़ा कारख़ाना बन कर रह जायेगी। जिसमें मानव मशीन के गूंगे बहरे कलपुरज़ों की तरह सक्रिय होंगे न उनके पास दिल होगा, न आत्मा, न तुष्टि, न रस। जीवन नीरस होकर रह जायेगा। इसलिए कुरआन मजीद में माल को मानव की ओर समर्पित करने की बात बार–बार कही गई है, इरशाद होता है –

अनुवाद– ''और आपस में एक दूसरे का माल नाजाइज़ तौर पर मत खाओ, और न उसे हुक्काम तक पहुंचाओ जिससे लोगों के माल का एक हिस्सा तुम गुनाह से खा जाओ यद्यपि तुम जान रहे हो।''

(सूरः बक़रः–188)

ज़कात की एक निश्चित, विशिष्ट और व्यापक व्यवस्था

जब इस्लामी समाज का भरपूर विकास हो चुका और हर पहलू से उसमें मज़बूती आ गई और वह एक ऐसी विशाल सोसाइटी बन गई जिसमें मालदार भी थे और ग़रीब भी, मध्यवर्गीय लोग भी थे और कंजूस भी, उदार, सख़ी और अनुदार तथा स्वार्थी भी, पक्के ईमान वाले भी थे और कमज़ोर ईमान वाले भी, तो अल्लाह की बड़ी ह़िकमत थी कि उसने ऐसी सोसाइटी के लिए ऐसा स्पष्ट और निश्चित निसाब[1] (पैमाना) निर्धारित कर दिया जिसकी मात्रा, संख्या, सिद्धान्त, व शर्त, अलामत व निशान सब पूरी तरह स्पष्ट और निर्धारित हैं। यह निसाब न इतना अधिक है कि मध्यम वर्ग इसके बारे में परेशान हो जाये न इतना कम कि दौलतमन्द तबक़ा उदार लोगों की निगाह से गिर जाये। इसको किसी की राय या हिम्मत व हौसले पर नहीं छोड़ा गया, न भावुकता के हवाले किया गया जिसमे उतार चढ़ाव हर समय

1. वह धन जिस पर ज़कात वाजिब हो जाती है।

www.abulhasanalinadwi.org

होता रहता है, इसको क़ानून बनाने वालों और विद्वानों अथवा शासकों के हवाले भी नहीं किया गया, इस लिए कि उन पर भी पूरा भरोसा नहीं किया जा सकता और वह भी लालसा से सुरक्षित नहीं। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए ज़कात अपने निसाब व मिक़दार (मात्रा) के साथ फ़र्ज़ की गई।

ज़कात किस चीज़ पर वाजिब है?

हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ ने ज़कात की मात्रा निर्धारित कर दी है और उन चीज़ों को इंगित भी कर दिया है जिन पर ज़कात फ़र्ज़ है। आपने यह भी बता दिया है कि ज़कात कब वाजिब होगी। आपने इन चीज़ों की चार क़िस्में की हैं और यह चार ऐसी हैं जिन से लगभग हम सब को वास्ता पड़ता है – (1) खेती व बाग़, (2) पशु–ऊंट, गाय, बकरी आदि, (3) सोना, चांदी आदि और (4) तिजारत (व्यापार) का माल।

ज़कात साल में एक बार फ़र्ज़ है, खेती व बाग़ का साल उस समय पूरा समझा जायेगा जब फ़सल पक जाये। अगर ज़कात हर महीने या हर हफ़्ते देनी होती तो यह दौलतमन्द लोगों के लिए बड़े घाटे की हो सकती थी और यदि जीवन में एक बार फ़र्ज़ होती तो इस का घाटा दीन–दुखियों को उठाना पड़ता इस लिए इस को हर साल अदा करने को कहा गया है। ज़कात की मात्रा का निर्धारण निसाब के मालिकों की मेहनत, प्रयास, और उनकी सहूलत व मशक़्क़त को सामने रख कर किया गया है, अतएव जो माल आदमी को अचानक और एकबारगी मिल जाये (जैसे खनन से प्राप्त धन) तो उन पर साल बीतने का इन्तिज़ार न किया जायेगा, और जिस समय वह उसको प्राप्त होगा उसी समय उसका पांचवां हिस्सा उस पर वाजिब हो जायेगा। हां, जिसकी प्राप्ति में स्वयं उसकी मेहनत शामिल हो तो उस पर दसवां हिस्सा वाजिब होगा। जैसे वह खेती व बाग़ आदि जिसके जोतने बोने का कार्य तो स्वयं करता है किन्तु उसकी न सिंचाई उसको करनी पड़ती है न उसके लिए कुआं खोदना और रहट आदि लगाना पड़ता है बल्कि बरसात के पानी से सिंचाई हो जाती है, हां यदि कोई व्यक्ति डोल अथवा किसी और साधन से उसकी सिंचाई करता है तो उस पर बीसवां

हिस्सा वाजिब होता है, अगर कोई ऐसा काम हो जिसमें बढ़ोत्तरी मालिक की मेहनत पर निर्भर हो और उसकी देख रेख व सुरक्षा उसके ज़िम्मे हो तो उस पर चालीसवां हिस्सा वाजिब होगा। नक़दी के लिए दौ सौ दिरहम और सोने के लिए बीस मिस्क़ाल[1] ग़ल्ला और फ़लों के लिए पांच वसक़ (जो ऊंट के पाचं बोझ के बराबर होता है) बकरी के लिए, चालीस बकरियां, गाय के लिए तीस और ऊंट के लिए पांच निर्धारित किए गये हैं।

ज़कात टैक्स या जुर्माना नहीं, इबादत है

ज़कात कोई टैक्स या जुर्माना या सरकारी मुताल्बा नहीं है। वह नमाज़, रोज़ा की तरह इबादत है, और खुदा को खुश व राज़ी करने का एक साधन है। इसके अदा करने में एहसान की भावना नहीं होनी चाहिए और अपने को बड़ा नहीं समझना चाहिए, बल्कि विनम्रता होनी चाहिए और ज़कात लेने वाले के प्रति इहसानमन्द होना चाहिए ज़कात के अधिकारी लोगों की स्वयं तलाश करनी चाहिए यह भी बेहतर समझा गया है कि एक ही जगह के मालदारों से निकालकर वहीं के ग़रीबों में तक़सीम हो (सिवाय इसके कि वहां इसके मुस्तहक़ न पाये जाते हों) कुरआन मजीद में ज़कात की जितनी प्रशंसा की गई है सूद (ब्याज) की उतनी ही निन्दा की गई है, सूद इस्लाम में हराम है।

आवश्यकता से अधिक माल को दान करने की प्रेरणा

हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ ने माल ख़र्च करने की उम्मत को ऐसी प्रेरणा और नसीहत फ़रमायी है कि जिन को पढ़कर ऐसा विचार होने लगता है कि फ़ाज़िल माल में शायद आदमी का कोई हक़ नहीं। निम्नलिखित हदीसों को पढ़ने के बाद एक व्यक्ति, जब अपनी ज़िन्दगी का जायज़ा लेता है, और उस आराम और सुख–सुविधा को देखता है जो उसे प्राप्त है तो

1. हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के ज़माने में एक मिस्क़ाल एक दीनार के बराबर था और एक दीनार दस दिरहम के बराबर इस प्रकार बीस मिस्क़ाल (बीस दीनार) दौ सौ दिरहम के बराबर हुए। दौ सौ दिरहम साढ़े बावन तोला चांदी के बराबर होते हैं। बीस मिस्क़ाल (या बीस दीनार) साढ़े सात तोला सोने के बराबर समझा गया है।

www.abulhasanalinadwi.org

उसको बड़ी कठिनाई महसूस होती है और उसको हर चीज़ आवश्यकता से अधिक और फ़ाज़िल महसूस होने लगती है और यह सुन्दर वस्त्र, तरह तरह के खाने, आरामदेह सवारियां और जीवन के सुख साधन की बाहुल्यता उसको ग़लत और नाजायज़ नज़र आती है, यद्यपि यह केवल प्रेरणा की बात है, शरई हुक्म और क़ानून की बात नहीं। लेकिन हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ का आचरण यही था। आप ने फ़रमाया–

''जिसके पास एक सवारी अधिक व फ़ाज़िल हो तो जिसके पास एक भी सवारी न हो उस को दे दे। जिसके पास एक नाश्ता फ़ाज़िल हो उसको देदे जिसके पास नाश्ता न हो।''[1]

''जिसके पास दो व्यक्तियों का खाना हो तो वह तीसरे को भी खाना खिलाये, और जिसके पास तीन का खाना हो वह चौथे को शामिल करे।''[2]

''मुझ पर ईमान नहीं लाया वह व्यक्ति जो पेट भर कर सोता रहा और उसका पड़ोसी भूखा रहा, यद्यपि उसको इस बात की ख़बर थी।''[3]

एक और हदीस में है कि एक व्यक्ति हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ के पास आया और कहने लगा, ''ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे कपड़ा पहनाइये।'' आप ने कहा क्या तुम्हारे कोई ऐसा पड़ोसी नहीं है जिसके पास दो जोड़े फ़ाज़िल हों। उसने निवेदन किया एक से ज़्यादह हैं। आपने फ़रमाया, ''फिर अल्लाह जन्नत में उसको और तुमको जमा न करें।''[4]

इस्लाम की नज़र में इन्सान की क़ीमत व सहृदयता का महत्व

हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ ने इन्सानी मर्तबा उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा सहृदयता को सर्वोत्कृष्ट बताया। मशहूर हदीसे कुदसी है कि ''अल्लाह क़यामत के दिन अपने बन्दे से कहेंगे कि मैं बीमार हुआ तू मेरा हाल लेने नहीं आया, वह कहेगा, ऐ मेरे रब! मैं कैसे आपका हाल लेने आता

1. अबूदाऊद 2. तिर्मिज़ी 3. तिबरानी 4. तिबरानी।

आप तो सारे जहानों के पालनहार हैं। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि तुझको मालून नहीं था कि मेरा अमुक भक्त बीमार था लेकिन तू उसे देखने नहीं गया, अगर तू उसकी इयादत करता तो मुझे उसके पास पाता। ऐ आदम की औलाद! मैंने तुझ से खाना मांगा था तूने मुझे खाना नहीं दिया, वह कहेगा ऐ मेरे रब मैं कैसे आप को खाना देता आप तो पालनहार हैं। अल्लाह तआ़ला फरमायेगा कि तुझको ख़बर नहीं कि मेरे फ़लां बन्दे ने तुझसे खाना मांगा और तूने उसको खाना नहीं दिया, अगर तू उसको खाना खिलाता तो वह खाना मेरे पास पहुंचता। ऐ आदम की सन्तान! मैंने तुझसे पानी मांगा तूने मुझे पानी नहीं पिलाया। वह कहेगा ऐ मेरे परवरदिगार! मैं आप को कैसे पानी पिलाता आप तो सारे जहान के पालनहार हैं। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि मरे अमुक भक्त ने तुझ से पानी मांगा था लेकिन तूने उसको पानी नहीं पिलाया अगर तू उसको पानी पिला देता तो मुझे उसके पास पाता।''[1]

हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ ने फ़रमाया : ''तुममें से कोई उस समय तक पूरा मुसलमान नहीं होगा जब तक कि अपने भाई के लिए भी वही न चाहे जो अपने लिए चाहता है।''[2]

इस्लाम का चौथा स्तम्भ रोज़ा

रोज़े का हुक्म

मुसलमानों पर रोज़ा हिजरत के बाद उस समय फ़र्ज़ किया गया जब उन पर सख़्तियों के बादल छंट गये, ग़रीबी और तंगदस्ती का दौर ख़त्म हुआ और मुसलमानों ने मदीना में इत्मिनान की सांस ली और उनकी ज़िन्दगी आराम से बसर होने लगी। ऐसा शायद इसलिए हुआ कि अगर परेशानी के दिनों में रोज़ा का हुक्म नाज़िल होता तो बहुत से लोग इसको मजबूरी का रोज़ा समझते और यह महसूस करते कि रोज़ा केवल ग़रीबों और पीड़ित लोगों के लिए है, अमीरों और खुशहाल लोगों के लिए, जो बाग़ों

1. मुस्लिम 2. बुखारी

www.abulhasanalinadwi.org

और ज़मीनों के मालिक हैं, नहीं।

कुरआन मजीद में सूरः बक़रः की आयत 183–185 में रोज़ा का हुक्त नाज़िल हुआ :

अनुवाद– ''ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गये जैसा कि उन लोगों पर फ़र्ज़ किये गये थे जो तुमसे पूर्व हुए हैं ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। वह भी गिनती के चन्द रोज़ के हैं। फिर तुममें से जो व्यक्ति बीमार हो या सफ़र मे हो तो दूसरे दिनों (में रोज़े रखकर) गिनती पूरी कर दे और जो लोग इसे मुश्किल से बर्दाश्त कर सकें उनके ज़िम्मे फ़िद्यः है (कि वह) एक ग़रीब का खाना है और जो कोई खुशी–खुशी नेकी करे उसके ह़क़ में बेहतर है और अगर तुम समझो तो बेहतर तुम्हारे ह़क़ में भी है कि तुम रोज़े रखो। रमज़ान के महीने में कुरआन उतारा गया है वह लोगों के लिए हिदायत है, और (उसमें) खुले हुए (तर्क हैं) ह़िदायत और बुराई और भलाई में अन्तर करने के खुले हुक्म मौजूद हैं। सो तुम में से जो कोई इस महीनें को पाये, लाज़िम है कि वह (महीना भर) रोज़ा रखे और जो कोई बीमार हो या सफ़र में हो तो (उस पर) दूसरे दिनों का शुमार रखना (लाज़िम है) अल्लाह तुम्हारे ह़क़ में सहूलत चाहता है, और तुम्हारे हक़ में दुशवारी नहीं चाहता और यह कि तुम गिनती को पूरा कर लिया करो और अल्लाह की बड़ाई किया करो, इस पर कि तुम्हें राह बता दी, अजब नहीं कि तुम शुक्रगुज़ार बन जाओ।''

यह आयतें ईमान व अक़ीदा (आस्था), अक़्ल व अन्तःकरण सबको अपील करती है और बलवान बनाती हैं और सहर्ष रोज़ा के स्वागत के लिए वातावरण को अनुकूल बनाती है।

रोज़े का हुक्म कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसका उद्देश्य अकारण मशक़्क़त और आज़माइश में डालना हो, यह साधना, प्रशिक्षण, सुधार, तपानें

और मांझने के लिए है। यह वास्तव में नैतिक दीक्षा निकेतन है जहां से आदमी परिपूर्ण होकर इस प्रकार निकलता है कि इच्छाओं की लगाम उसके हाथ में होती है, इच्छाएं उस पर शासन, नहीं करती वही इच्छाओं पर शासन करता है। जब वह मात्र अल्लाह के हुक्म से अवर्जित और पवित्र चीज़ों को त्याग देता है तो वर्जित चीज़ों से बचने का प्रयास क्यों न करेगा? जो व्यक्ति ठंडे मीठे पानी और पवित्र व स्वादिष्ट खाने को ईश्वर के आज्ञापालन में छोड़ सकता है, वह ह़राम व वर्जित तथा अपवित्र चीज़ों की तरफ़ नज़र उठा कर देखना कैसे गवारा कर सकता है। ''ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ'' में यही भाव निहित है। आगे कहा गया है कि महीनों की गिनती को ज़्यादह न समझना, यह तो चन्द गिने चुने दिन हैं जो देखते ही देखते ख़त्म हो जाते हैं।

रोज़े की विशेषताएं और उसका महत्व

इस्लाम में रमज़ान का पूरा महीना जिसमें कुरआन नाज़िल हुआ है, रोज़ों के लिए निश्चित है जिसके दिनों में रोज़ा रखने का हुक्म है और रातों को खाने पीने की इजाज़त है। हज़रत अबू हुरैरः (रज़ि0) ने बयान किया है कि हज़रत मुह़म्मद सल्ल॰ ने फ़रमाया, ''रमज़ान में आदम की औलाद का हर अमल (कर्म) कई गुना बढ़ा दिया जाता है, अन्य नेकी दस गुना से लेकर सात सौ गुना तक बढ़ा दी जाती है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि सिवाय रोज़े के इस लिए कि बेशक वह ख़ास मेरे लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा मेरी ख़ातिर अपना खाना और अपनी वासना सब छोड़ देता है। रोज़ेदार के लिए दो ख़ुशियां है। एक इफ़्तार के समय और एक अपने रब से मुलाक़ात के समय। और बेशक रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह के नज़दीक मुश्क (कस्तूरी) से ज़्यादा अच्छी और पाकीज़ा है।''

सहल बिन सअ़द बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, ''जन्नत में एक दरवाज़ा है जिसका नाम ''रय्यान'' है इसके लिए केवल रोज़ेदार बुलाये जायेंगे, जो रोज़ेदारों में से होगा वही उसमें दाख़िल होगा और जो उस में दाख़िल हो जायेगा वह कभी प्यासा न होगा।''

www.abulhasanalinadwi.org

रमज़ान के महीने में रोज़ा फ़र्ज़ करने के कुछ कारण हैं। सबसे बड़ा कारण यह है कि रमज़ान ही वह महीना है जिस में कुरआन मजीद नाज़िल हुआ, और भटकी हुई मानवता को भोर नसीब हुआ। इसलिए यह सर्वथा उचित था कि जिस प्रकार भोर के समय से रोज़े की शुरूआत होती है उसी प्रकार इस महीनें को भी जिसमें एक लम्बी और अन्धेरी रात के बाद पूरी मानवता की सुबह हुई, पूरे महीने के रोज़े के साथ सम्बद्ध कर दिया जाये। विशेषकर इसलिए और भी कि अपनी रह़मत व बरकत, आध्यात्मिक और आन्तरिक शुद्धता के लिहाज़ से भी यह महीना तमाम महीनों से अफ़ज़ल (उत्कृष्ट) था और इसके दिनों को रोज़े से और रातों को इबादत से सुसज्जित करना सर्वथा उचित था।

रोज़ा और कुरआन का घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ रमज़ान में कुरआन का अधिक पाठ करते थे। इब्ने अब्बास बयान करते हैं कि हज़रत मुह़म्मद सल्ल॰ सबसे ज़्यादह सख़ी (उदार) थे, लेकिन रमज़ान मे जब जिबराईल मिलने आते उस समय आपकी सख़ावत (उदारता) और अिधक बढ़ जाती है। जिबराईल रमज़ान में हर रात में आप के पास आते और कुरआन का पाठ करते। जिबराईल से मुलाक़ात के काल में आप सख़ावत और नेकी में तेज़ हवा से भी ज़्यादह तेज़ नज़र आते।

इबादत का विश्वव्यापी मौसम और सतकर्मों की बहार

इन तमाम चीज़ों ने रमज़ान को इबादत, जाप व कुरआन के पाठ और परहेज़गारी का एक ऐसा विश्वव्यापी मौसम प्रदान कर दिया है जिसमें पूरब से पश्चिम के तमाम मुसलमान, पढ़े लिखे और अनपढ़, अमीर व ग़रीब, कमज़ोर और ताक़तवर हर वर्ग के लोग एक दूसरे के साथी और दोस्त नज़र आते हैं। यह रमज़ान एक ही समय में हर शहर, गावं, हर देहात में होता है। अमीर के महल और ग़रीब की झोपड़ी दोनों मे यह व्याप्त होता है। फलतः न कोई व्यक्ति स्वयं अपना बखान करता है न रोज़े के लिए कोई छीना झपटी और झगड़ा पैदा होता है। इसे पूरी दुनियां में देखा जा सकता

है। ऐसा प्रतीत होता है कि पूरे इस्लामी समाज पर रमज़ान में चैन सुख का ज्योतिर्मय कोई शामियाना तान दिया गया है जो लोग रोज़े के मुआ़मले में कुछ सुस्त और काहिल हैं वह भी आम मुसलमानों से अलग होने के डर से रोज़ा रखने पर मजबूर होते हैं और अगर किसी वजह से रोज़ा नहीं रखते तो छिप कर और शर्म के साथ खाते हैं, सिवाय कुछ नास्तिकों के और झूठों के जिनको एलानिया भी इस बेशर्मी में कोई संकोच नहीं होता है, अथवा उन बीमारों और मुसाफिरों के जिन को शरिअ़त ने छूट दी है। यह एक सामूहिक और विश्वव्यापी रोज़ा है जिससे स्वतः एक ऐसा माहौल पैदा हो जाता है जिसमें रोज़ा आसान मअ़लूम होता है, दिल नर्म पड़ जाते हैं और लोग इबादत, नम्रता, हमदर्दी व सहृदयता के कामों की ओर स्वतः आकर्षित हो जाते हैं।

पिछले पहर उठकर सहरी खाना

रात को सुबह सादिक़ (भोर) से पहले पहले (रोज़े की ताक़त पैदा करने के लिए ताकि भूख प्यास ज़्यादा न सताये) कुछ खा लिया जाता है इसको ''सह़री'' कहते हैं। यह सुन्नत भी है और इस पर ज़ोर भी दिया गया है। हज़रत मुह़म्मद सल्ल॰ ने फ़रमाया, ''सहरी खाओ इसलिए कि सह़री में बरकत है।'' आपने इफ़्तार में देरी करने से मना फ़रमाया है। आप का दस्तूर यह था कि नमाज़ से पहले इफ़्तार करते, चन्द तर–खजूरें अगर मौजूद होतीं खाते अगर न मिलती तो सूखी खजूरें खा लेते अन्यथा पानी के चन्द घूंट पी लेते।

रोज़े का सार और उसकी सुरक्षा

इस्लामी शरीअ़त ने रोज़े के बाह्य स्वरूप के साथ उस के सार व ह़क़ीक़त पर भी बल दिया है। उसने रोज़ेदार के लिए रोज़े की हालत मे केवल खाने पीने और संभोग ही को हराम नहीं किया बल्कि हर उस चीज़ को वर्जित किया है जो रोज़े के उद्देश्यों के विपरीत और उसकी ह़िकमतों के लिए हानिकारक है। उसने रोज़े को विनय व परहेज़गारी, दिल व ज़बान की पवित्रता के घेरे में घेर दिया है। नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया, ''तुम में से

www.abulhasanalinadwi.org

कोई रोज़े से हो तो न बकवास करे न शोर व शरारत करे, अगर कोई उसको गाली दे और लड़ने–झगड़ने पर आमादा हो तो कह दे कि मैं रोज़े से हूं। आप (सल्ल॰) ने फरमाया, ''जिस ने झूठ बोलना और उस पर अमल करना न छोड़ा तो अल्लाह को उसकी कोई ज़रूरत नहीं कि वह अपना खाना–पीना छोड़े। ''वह रोज़ा जो परहेज़गारी से खाली हो वह ऐसा है, जैसे आत्माविहीन शरीर। नबी सल्ल॰ ने फ़रमाया, ''कितने रोज़ेदार हैं जिनको उनके रोज़े से सिवाय भूख प्यास के कुछ हाथ नहीं लगता और कितने ऐसे इबादतगुज़ार हैं कि जिनको अपने क़ियाम में रात जागने के सिवा कुछ नहीं मिलता।'' आप ने फ़रमाया, ''रोज़ा ढ़ाल है जब तक उसको फाड़ न डाला जाये।''

इस्लामी रोज़ा केवल कुछ चीज़ों से मनाही करने का नाम नहीं, जिसमे केवल खाने, पीने, ग़ीबत, चुग़लख़ोरी[1], लड़ाई–झगड़े और गाली–गलौज से मना किया गया हो, वह बहुत सी ऐसी बातों का भी मजमुआ (संकलन) है जिन्हें करने के लिए कहा गया है। यह इबादत, तिलावत (कुरआन का पाठ), जाप, अल्लाह की याद, हमदर्दी व सहृदयता और ग़रीबों की मदद करने का ज़माना है। नबी सल्ल॰ ने फ़रमाया, ''इसमें जो किसी एक कार्य से ईश्वर का सानिध्य प्राप्त करना चाहेगा वह दूसरे दिनों के फ़र्ज़ के अदायगी के बराबर समझा जायेगा और जो इस में फ़र्ज़ अदा करेगा वह उसकी तरह होगा जो अन्य दिनों में सत्तर फ़र्ज़ अदा करे। यह सब्र (धैर्य) का महीना है और सब्र का बदला जन्नत है और ग़मख़्वारी (सहृदयता) का महीना है।'' आपने फ़रमाया ''जो रोज़ेदार को इफ़्तार कराये उसको रोज़ेदार के बराबर बदला मिलेगा, और रोज़ेदार के सवाब में कोई कमी नहीं की जायेगी।'' रोज़े के महीनों में तरावीह की नमाज़ पढ़ी जाती है। नबी सल्ल॰ ने तीन दिन तरावीह की नमाज़ पढ़कर उसको इसलिए छोड़ दिया था कि कहीं यह उम्मत पर फ़र्ज़ न हो जाये और मशक़्क़त का कारण बने।

इन सब चीज़ों ने मिल कर रमज़ान को जश्ने आम, तिलावत का मौसम और परहेज़गारों के हक़ में बहार (बसन्त) का मौसम बना दिया है।

1. किसी के पीठ पीछे ऐसे अवगुण बयान करना जो उसमें हों (अनु0)

इसमें मुसलमान की धार्मिक भावना, इबादत का शौक़, और धर्म के प्रति आस्था पूरी तरह प्रकट हो जाती है और उसके दिलों की नरमी, उनकी तौबा, ईश्वर से लगाव, प्रायश्चित की भावना और नेक कामों में एक दूसरे से आगे निकलने की भावना अपनी चरम सीमा पर होती है।

एतिकाफ़

रमज़ान की अन्तिम दहाई मे एअ़तिकाफ़ बड़े सवाब का काम है यह एक प्रिय सुन्नत भी है रमज़ान के उद्देश्यों की पूर्ति का अवसर भी इससे प्राप्त होता है। एअ़तिकाफ़ के दौरान मस्जिद में रहकर और एक प्रकार से अल्लाह के दर पर पड़े रहकर नमाज़, तिलावत, अल्लाह की याद, तस्बीह, तकबीर, तह़मीद, तौबा व इस्तिग़फ़ार और नबी सल्ल॰ पर दुरूद में व्यवस्त रहना मुस्तह़ब है।

एतिकाफ़ की ह़ालत में पेशाब, पाख़ाना और नापाक हो जाने पर नहाने के अलावा मस्जिद से बाहर जाना मना है वुज़ू भी मस्जिद ही की सीमा में किया जाये।

ह़ज़रत मुह़म्मद सल्ल॰ रमज़ान की अन्तिम दहाई में बराबर एतिकाफ़ फ़रमाते थे।

शबे क़द्र

अल्लाह ने अपनी ह़िकमत व रह़मत से शबे क़द्र को रमज़ान की अन्तिम दहाई में निहित कर रखा है ताकि मुसलमान इसकी तलाश में रहें उनकी तलब और हिम्मत बढ़े और वह यह सब आख़िरी रातें उसकी लालच में इबादत और दुआ में गुज़ारें। नबी सल्ल॰ जब रमज़ान की अन्तिम दहाई शुरू होती थी, पूरी रात जागते थे, और अपने घर वालों को भी जगाते थे और कमर कस लेते थे। आपने फ़रमाया, ''शबे क़द्र रमज़ान की अन्तिम दहाई की ताक़ रातों में तलाश करो।''

कुरआन मजीद में सूरः क़द्र में शबेक़द्र के महत्व को बयान किया गया है। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है :–

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवाद– ''बेशक हमने इसे (कुरआन को) शबेक़द्र में उतारा है, और आपको ख़बर है कि शबे क़द्र क्या है? शबेक़द्र हज़ार महीनों से बढ़ कर है। इस रात फ़रिश्ते और रूहुलकुद्स उतरते हैं अपने पालनहार के हुक्म से हर अच्छी बात के लिए सलामती (ही सलामती) है वह रहती है सुबह होने तक।''

ईद के चांद पर रमज़ान ख़त्म हो जाता है

दिन गुज़रते देर नहीं लगती और 29–30 की औक़ात ही क्या। अभी इबादत के मतवालों का जी भी नहीं भरा था कि चांद रात आ गई। रमज़ान ने चलने की तैयारी की और अगले साल फिर आने का वअ़दा कर के मुसलमानों से विदा ली। ईद का चांद निकल आया। खुदा का एक मेहमान रूख़्सत हुआ दूसरा मेहमान आया, वह भी हुक्म था यह भी हुक्म। आज तक दिन में खाना गुनाह था, कल दिन में न खाना गुनाह होगा।

इस्लाम का पाँचवा स्तम्भ हज

''और लोगों में हज का ऐलान कर दो, लोग तुम्हारे पास पैदल भी आयेंगे और दुबली ऊंटनियों पर भी, जो दूर–दराज़ रास्तों से पहुंची होंगी ताकि अपने फ़ायदे के लिए मौजूद हों और ताकि इन निश्चित दिनों में अल्लाह का नाम लें। उन चौपायों पर जो अल्लाह ने उनको दिये हैं, बस तुम भी इनमें से खाओ और दुःखी–मुहताज को भी खिलाओ। फिर लोगों को चाहिए कि अपना मैल कुचैल दूर करें और अपने वाजिबात को पूरा करें और चाहिए कि (इस) प्राचीन घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करें।''

(सूरः हज–27–29)

इस्लाम का पांचवा स्तम्भ हज है। अगर कोई व्यक्ति इसकी शर्तों को पूरा करने के बावजूद हज न करे तो उस के लिए कुरआन व हदीस में ऐसे शब्द आये हैं जिनसे भय पैदा होता है कि वह इस्लाम के दायरे से और मुस्लिम समुदाय से ख़ारिज न हो जाये। हज विशेष समय में और विशेष स्थान पर अदा होता है अर्थात ज़िलहिज्जः के महीने में और मक्कः में।

कुअरान मजीद में हज़रत इब्राहीम अ0® का क़िस्सा और शान्ति की नगरी मक्के से उनका सम्बन्ध

हज़रत इब्राहीम (अ0) शहर के एक बड़े मुजाविर या पुरोहित के घर में पैदा हुए जिसका पेशा बुत बनाना था, और जो शहर के सबसे बड़े पूजाघर में पुरोहित था और अपनी आस्था और अपने पेशे दोनों से उस पूजाघर के साथ जुड़ा था। यह बड़ी कठिन स्थिति थी, क्योंकि जब अ़क़ीदा पेशों के साथ और धार्मिक भावना आर्थिक लाभ के साथ मिल जाती है और दोनों साथ चलने लगते हैं तो ऐसी दशा में पेचीदगी और दुशवारी पहले से कहीं अधिक बढ़ जाती है। इस कठोर और अन्धकारमय वातावरण में कोई ऐसी चीज़ न थी जो ईमान और मुहब्बत को उभार सके और इस मुशरिकाना[1] और बुत परस्ताना जेहालत (अज्ञानता) और हिमाक़त के ख़िलाफ़ बग़ावत पर आमादा कर सके, लेकिन उस ''क़ल्बे सलीम'' (निरोग हृदय) की बात ही और थी जिसको नुबुव्वत (पैग़म्बरी) और नवयुग के निर्माण के लिए तैयार किया जा चुका था। वह अपनी बग़ावत उस मरहले (सोपान) से शुरू करते हैं और जहां कभी कभी दुनिया के बड़े से बड़े इन्क़लाब का गुज़र नहीं होता। यह घरेलू ज़िन्दगी का स्टेज है, उस घर का स्टेज जहां इन्सान पैदा होता है, पलता बढ़ता है और जवान होता है और हर चीज़ का यही तक़ाज़ा होता है कि वह यही ज़िन्दगी गुज़ारे। अब वह सारी बातें पेश आती हैं जिनका कुरआन मजीद ने अपने साफ़, स्पष्ट, व्यापक और चकित कर देने वाली शैली में उल्लेख किया है। इनमें हज़रत इब्राहीम (अ0) का बुतों को तोड़ना, पुजारियों की इस पर सख़्त नाराज़गी, हैरत, लाचारी और इस बाग़ी नौजवान से बदला लेने की शिक्षा, उनके लिए अलाव जलाना और उसका हज़्त इब्राहीम (अ0) के हक़ में ठंडा औ सलामती का कारण बन जाना, जाबिर बादशाह के सामने हज़रत इब्राहीम (अ0) का सारगर्भित सवाल व जवाब सब चीज़ें शामिल हैं।

यह इन्कार और बग़ावत इस नतीजे तक पहुंचती है कि सारा शहर

1. ईश्वर के साथ किसी को साझी बनाने का कार्य (अनु0)

www.abulhasanalinadwi.org

उनका दुश्मन हो जाता है। पूरी सोसाईटी उनसे नाराज़ नज़र आती है। हुकूमत भी उनका पीछा करती है और यातना देती है लेकिन वह इनमें से किसी की भी परवाह नहीं करते और इसको कोई महत्व नहीं देते। ऐसा मअ़लूम होता है कि जैसे वह इसकी प्रतीक्षा में थे और इन परिणामों की प्रत्याशा में थे। वह अपने शहर से ठंडे दिल व दिमाग़ के साथ बहुत खुश और सन्तुष्ट होकर हि़जरत करते हैं, चले जाते हैं, इस लिए कि उनकी अस्ल पूंजी अर्थात ईमान की दौलत उनके हाथ में होती है, वह अकेले और बेयार व मददगार सफ़र करते हैं। उनके साथ एक आदमी भी नहीं होता। इस सफ़र में उनको इन्सानों का एक ही नमूना नज़र आता है। वही बुत परस्ती, शिर्क व जिहालत (अज्ञानता) और वासनाओं की गरम बाज़ारी जिस को छोड़कर चले थे, हर जगह उनको मिलती है। वह मिस्र पहुंचते हैं और वहां बड़े अपमान का सामना करना पड़ता है, वह अपनी पत्नी को जिन पर बादशाह की बुरी नज़र थी, लेकर कामयाबी के साथ वहां से निकल जाते हैं। इसके बाद शाम पहुंचते हैं, सीरिया की जलवायु उनको रास आती है और वहीं बस जाते हैं और तौहीद (अद्वैतवाद) की दावत और बुत परस्ती की निन्दा का कार्य दोबारा शुरू कर देते हैं।

सीरिया में जहां, हरियाली और खाद्यान्न के साधन प्रचुर मात्रा में थे और जहां नैसर्गिक सुन्दरता भी थी, उनका जी लगता है। लेकिन शीघ्र ही उनको एक ऐसे भूखण्ड की ओर जाने का हुक्म मिलता है जो हिरयाली और शादाबी में सीरिया के बिल्कुल विपरीत है। लेकिन हज़रत इब्राहीम (अ0) अपना कोई ह़क़ नहीं समझते और किसी क्षेत्र और वतन से उनको लगाव नहीं, वह हुक्म के बन्दे हैं, और सारी दुनिया को अपना वतन समझते और वसुधैव–कुटुम्बकम् के पक्षधर हैं। उनको हुक्म मिलता है कि अपनी पत्नी हाजिरा और दुध पीते बच्चे को लेकर यहां से हि़जरत कर जाएं।

एक ऐसी घाटी में पहुचंने के बाद जिस के चारों ओर जले हुए पहाड़ों के अलावा कुछ न था, जहां की जलवायु और मौसम बहुत सख़्त, पानी का आभाव, हर तरफ़ सन्नाटा था और कोई दोस्त व हमदर्द भी न था

जिससे दिल को सन्तोष मिलता, उनको यह हुक्म मिलता है कि अपनी कमज़ोर पत्नी और अपने छोटे बच्चे को अल्लाह के भरोसे और मात्र उसके हुक्म की तामील में छोड़कर यहां से चले जाएं। और इस तरह कि न आतुरता हो, न डर, न घबराहट, न बेदिली और न उकताहट, न अधीरता, न अल्लाह के वादे में शंका, बल्कि इसके बजाय मानवीय अनुभवों के विरूद्ध बग़ावत, प्राकृतिक संसाधनों का विरोध, साधनों से निश्चिन्त और अलग–थलग, और अल्लाह पर उस समय भरोसा हो जब क़दम फ़िसलने लगें और बदगुमानी पैदा होने लगे।

उनके जाने के बाद स्वाभाविक रूप से यह सब बातें घटित होती हैं जिनका डर था। बच्चा प्यास से बेताब हो जाता है, और मां भी प्यासी हो जाती है। लेकिन इस बियाबान में पानी कहां, वहां तो छोटे–छोटे गढ़े भी न थे जिनमें बचा खुचा पानी मिल जाता। मां की ममता जोश मारती है। उनको ख़तरे का एहसास होने लगता है और वह पानी की तलाश में या किसी ऐसे क़ाफ़िले की तलाश में जिस के पास पानी मिल जाये, बेताब व बेक़रार हो कर प्रेमपूर्वक दो पहाड़ियों के बीच में दौड़ने लगती हैं दूसरी पहाड़ी के पास पहुंचने के बाद फ़ौरन बच्चे का ख़्याल आता है कि वह न जाने किस ह़ाल मे हो, इस लिए रूके बिना फिर दोबारा वापस आकर इत्मीनान करती हैं कि वह बच्चा ज़िन्दा और खुशहाल है। इसके बाद फिर रहा नहीं जाता है वह दोबारा फिर उसी पहाड़ी ओर दौड़ती जाती हैं कि शायद कहीं कोई आदमी नज़र आ जाये या किसी जगह पानी दिखाई पड़ जाये। एक ओर वह बेताब व बेक़रार होती हैं दूसरे ओर वह धीरज नहीं खोती। यद्यपि वह नबी की पत्नी और नबी की मां हैं, बाह्य साधनों और प्रयास व तदबीर को ईमान व धैर्य के विपरीत नहीं समझती। वह बेक़रार अवश्य हैं किन्तु तनिक भी निराश नहीं। खुदा पर पूरा भरोसा है लेकिन थक हार कर बैठ नहीं जातीं। ऐस दृश्य शायद आसमान ने कभी नहीं देखा था। अल्लाह की रह़मत जोश में आई और चमत्कार यह हुआ कि एक स्रोत वहां फूट पड़ा, यह वह ज़मज़म का पवित्र और अमिट स्रोत है जो न कभी सूखता है न इसमें कोई कमी आती है। वह सारी दुनिया और तमाम नस्लों के लिए

www.abulhasanalinadwi.org

काफ़ी है और आज तक सारी दुनिया उससे लाभान्वित हो रही है। अल्लाह ने इसके पानी को स्वास्थ्यवर्धक भी बनाया है, इसमें पौष्टिकता भी है, सवाब भी और बरकत भी।

अल्लाह ने हज़रत हाजिरा की इस बेक़रारी को ऐसा दर्जा दिया कि दुनिया के बड़े से बड़े बुद्धिमान और विचारक को और बड़े से बड़े बादशाह को इसका पाबन्द कर दिया, फलतः जब तक इन दो पहाड़ियों के बीच 'सअ़ी' न कर लें उनका ह़ज पूरा नहीं हो सकता। यह दोनों पहाड़ियां वास्तव में हर लौ लगाने वाले की मंज़िल है, और यह 'सअ़ी' इस दुनिया मे मोमिन (सत्यवान) के नज़रये की बेहतरीन मिसाल है, क्योंकि वह भी बुद्धि और भावना और एहसास व अक़ीदे का संगम होता है, वह अ़क़्ल से भी पूरी तरह काम लेता है लेकिन कभी कभी अपनी उन भावनाओं के सामने भी माथा टेक देता है जिन की जड़ें अ़क़्ल से भी ज़्यादा गहरी और मज़बूत होती हैं। वह एक ऐसी दुनिया में रहता है जो प्रेरणा, वासना, श्रृंगार व सजावट और घटाओं से भरी हुई है लेकिन सफ़ा व मरवा पहाड़ियों के बीच सअ़ी करने वाले की तरह वह किसी तरफ़ नज़र उठाये और किसी और चीज़ में अटके बिना और किसी दूसरी जगह ठहरे बिना तेज़ी के साथ वहां से गुज़र जाता है। उसको सबसे अधिक चिन्ता अपने लक्ष्य और अपने भविष्य की होती है। वह अपनी ज़िन्दगी के कुछ गिने चुने चक्करों की तरह समझता है। यहां उसके सारे क्रिया–कलाप का निचोड़ दो शब्दों में 'प्रेम'' और ''ताबेदारी'' है।

अब यह बच्चा ''इस्माईल'' कुछ सयाना होता है और उस उम्र को पहुंचता है जब बाप को अपने बच्चे से स्वाभाविक रूप से अधिक लगाव होता है, वह अपने बाप के साथ बाहर जाता है, उनके साथ दौड़ता भागता है और साथ–साथ रहता है उनके पिता जिनमें इन्सानी हमदर्दी कूट–कूट कर भरी थी, अपनी आंखों की ठंडक और जिगर के टुकड़े से बड़ा प्रेम रखते हैं, और यही सबसे बड़ी मुश्किल है। मुहब्बत को सब कुछ गवारा है, शिर्कत गवारा नहीं, वह प्रतिद्धन्दी को कभी सहन नहीं कर सकती, यह आ़म इन्सानी मुहब्बत का हाल है तो यहां तो मामला अल्लाह की मुह़ब्बत का था, हज़रत

ख़लील का दिल अल्लाह के लिये मखसूस है। यह वह मौक़ा है जब हज़रत इब्रहीम (अ0) को अपने प्यारे बेटे की कुरबानी का इशारा मिलता है। नबियों का स्वप्न ''वही'' के बराबर होता है, इस लिए जब कई बार उनको इशारा मिलता है तो वह समझ गये कि अल्लाह की यही मन्शा है और उनका यह काम करना है। वह अपने बेटे का इम्तिहान लेते हैं क्योंकि यह काम उनकी रज़ामन्दी के बिना कर पाना कठिन है। बेटा भरपूर धैर्य का आश्वासन देता है। कुरआन मजीद में इरशाद है।

अनुवाद– ''उन्होंने कहा, बेटा मैंने स्वप्न देखा है कि मैं तुम्हें ज़ब्ह़ कर रहा हूं, सो तुम भी सोच लो, तुम्हारी क्या राय है। वह बोले, ऐ मेरे बाप आप कर डालिये जो कुछ आप को हुक्म मिला है, आप इन्शा अल्लाह मुझे सब्र करने वालों में पाएंगे।''

(सूरः साफ़्फ़ात–102)

अब वह बात पेश आती है जिसके सामने अ़क़्ल हैरान है। बाप अपने प्यारे बेटे को लेकर बाहर निकलते हैं और खुदा के इशारे पर अपने बेटे की कुरबानी करने जा रहे हैं और यह भी अपने रब के और अपने पिता के आज्ञापालन में उनके साथ चल रहे हैं, दोनों का उद्देश्य एक है अपने मालिक का हुक्म बजा लाना, और बिना हीला ह़वाला उस के आगे सर रख देना। रास्ते में उनको शैतान मिलता है जिसने इन्सान को हमेशा बहकाने की कोशिश की है, वह उनको बहकावे मे डालता है, उनका हमदर्द बनकर उन्हें अपने इरादे से मुकरने की कोशिश करता है, लेकिन वह उस की एक नहीं चलने देते, और अल्लाह के हुक्म की तअ़मील के लिए कमर कस लेते हैं। अब वह क्षण आते हैं जिसको देखकर फरिश्ते भी बेचैन हो जाएं और दानव और मानव भी। वह अपने लड़के को ज़मीन पर लिटा देते हैं और ज़ब्ह़ करने की पूरी कोशिश करते हैं, अब अल्लाह की मर्ज़ी बीच में हस्तक्षेप करती है, इसलिए कि उद्देश्य ह़ज़रत इस्माईल का ज़ब्ह़ करने का नहीं था बल्कि उस मुह़ब्बत को ज़ब्ह़ करना था जो खुदा की मुह़ब्बत में शरीक हो जाती है। और प्रतिद्वन्दी बनने लगती है, और यह मुहब्बत गले पर छूरी रखते ही ज़ब्ह़ हो चुकी थी हज़रत इस्माईल तो इस लिए पैदा हुए थे कि

www.abulhasanalinadwi.org

वह ज़िन्दा रहें, फूलें फलें, उनसे नस्ल चले और अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ भी उन ही की सन्तान में हों, इस लिए वह अल्लाह की मर्ज़ी पूरी होने से पहले ही ज़ब्ह कैसे हो सकते थे। अल्लाह ने हज़रत इस्माईल के ''फ़िदयः''[1] के तौर पर जन्नत से एक मेंढ़ा भेजा ताकि उसको उनकी जगह ज़ब्ह करो और हज़रत इब्राहीम (अ0) के तमाम अनुयायी और उनके बाद की तमाम नस्लो के लिए सुन्नत बना दिया।

कुरबानी के दिनों में इसी ''महान बलिदान'' (अज़ीम कुरबानी) की याद ताज़ा करते हैं और अल्लाह के रास्ते में अपने मालों को ख़र्च कर के कुरबानी देते हैं।

अनुवाद– ''फिर जब दोनों ने हुक्म को स्वीकार कर लिया और (बाप ने बेटे को) करवट पर लिटा दिया, और हमने तुम्हें आवाज़ दी ऐ इब्राहीम तुम ने ख़्वाब को सच कर दिखाया (वह समय ही अजब था) हम सच्चों को ऐसे ही बदला दिया करते हैं, बेशक यह भी खुला हुआ इम्तिहान, और हमने एक बड़ा ज़बीह़ा उसके बदले में दिया, और हमने पीछे आने वालों में यह बात रहने दी कि इब्राहीम पर सलात हो।''

(सूरः साफ़्फ़ात–103–109)

हज़रत इब्राहीम (अ0) और शैतान के इस क़िस्से को भी अल्लाह ने अमर बना दिया और उन जगहों पर जहां शैतान उनका रास्ता रोक रहा था और उनको बहका रहा था, कंकरियां मारने का हुक्म दिया और इसको ह़ज की एक क्रिया बना दिया। इसका उद्देश्य यह है कि शैतान से नफ़रत पैदा हो, उससे बग़ावत की अभिव्यक्ति हो। यह वह अदा है जिस में एक मोमिन को बड़ी लज़्ज़त महसूस होनी चाहिए। कहानी के इस किरदार (आचरण) को दोहराते समय उसको यह महसूस होता है कि वह बुराई की ताक़तों के साथ संघर्षरत है।

1. वह धन जो किसी क़ैद की मुक्ति के लिए दिया जाए, वह व्यक्ति जो किसी व्यक्ति के बदले मे अपनी जान दें। (अनुवादक)

अब इस घटना पर एक ज़माना गुज़र जाता है, यह बच्चा अब जवान हो चुका है। अल्लाह ने उसे पैग़म्बरी दी है। हज़रत इब्राहीम (अ0) के इस दीन के लिए अब एक ऐसे केन्द्र की ज़रूरत थी जिससे ईमान को बल मिलता, सम्बल प्राप्त होता इस दुनिया में बादशाहों के महल और बुतों के घर तो बहुत थे, लेकिन अल्लाह की ज़मीन पर अल्लाह ही की इबादत के लिए अब तक कोई घर न था। जिसमें सत्यनिष्ठा के साथ पूजा होती और उसकी इबादत करने वालों और ज़ियारत (दर्शन) करने वालों के लिए हर प्रकार के प्रदूषण और अपवित्रता से पाक व साफ़ रखा जाता। अब जब कि दीन अपने पैरों पर खड़ा हो गया है और मुस्लिम उम्मत की बुनियाद पड़ चुकी है, हज़रत इब्राहीम (अ0) को कअ़बे के निर्माण का निर्देश दिया जाता है। एक ऐसा घर जो सारी मानवता के लिए अमन का गहवारा (केन्द्र) हो, और जहां केवल अल्लाह की इबादत की जाये बाप बेटे दोनों मिलकर इस पवित्र घर का निर्माण करते हैं, जो देखने में बहुत सादा और मामूली है लेकिन अपनी बड़ाई के लिहाज़ से बहुत बुलन्द है। बाप बेटे दोनों पत्थर ढोते हैं और उसकी दीवारें उठाते हैं। यह घर ईमान व निष्ठा की उन बुनियादों पर क़ायम किया गया जिसकी नज़ीर दुनिया में और कहीं नहीं मिलती। अल्लाह ने उसे खूब–खूब चाहा, उसे अमर बनाया, उसको सौन्दर्य दिया और उसे दुनिया के लिए आकर्षण का केन्द्र बना दिया। लोग वहां सर के बल बल्कि आंखों और पलकों के बल आते हैं और उस पर जान व दिल निसार करते हैं, यह घर हर प्रकार के दिखावे और सजावट से खाली है और एक ऐसी नगरी मे स्थित है जो सभ्यता और संस्कृति के हंगामों से बहुत दूर है लेकिन फिर भी इसमें वह आकर्षण है कि लोग इसकी तरफ़ खिंच खिंच कर टूटे पड़ते हैं और इसकी एक झलक देखने के लिए बेताब रहते हैं जब वह घर बनकर तैयार हो गया तो ग़ैब (अदृश्य) से यह सदा आई, आकाशवाणी हुई –

अनुवाद– ''और लोगों मे ह़ज़ का एलान कर दो, लोग तुम्हारे पास पैदल भी आएंगे और दुबली ऊंटनियों पर भी जो दूर दूर से आई होंगी ताकि अपने लाभ के लिए आ मौजूद हों'' और ताकि सात

www.abulhasanalinadwi.org

दिनों में अल्लाह का नाम लें उन चौपाओं पर जो अल्लाह ने उन्हें दिये हैं, बस तुम भी उसमें से खाओ और दुखियारों को भी खिलाओ, फिर लोगों को चाहिए कि मैल कुचैल दूर करें और अपने वाजिबात को पूरा करें और चाहिए कि इस प्राचीन घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करें।

(सूरः ह़ज–27,28,29)

हज़रत इब्राहीम (अ0) के ज़माने में यह दुनिया कारणों की गुलाम थी और लोग इन पर आवश्यकता से अधिक भरोसे करने लगे थे बल्कि यह समझ बैठे थे कि उनका अपना अस्तित्व है और प्रभावशाली है फलतः इन कारणों (असबाब) ने पालनहारों (अर्बाब) का स्थान ले लिया। इस चीज़ ने एक नई बुतपरस्ती पैदा कर दी। हज़रत इब्राहीम का जीवन वास्तव में इन्हीं ''बुतगरों'' और ''बुतपरस्तों'' के विरूद्ध बग़ावत थी। वह विशुद्ध अद्वैतवाद (तौहीद) और अल्लाह की पूरी कुदरत पर ईमान की दअ़वत थी, आह्वान था और इस बात का खुला ऐलान कि वही तमाम चीज़ों को अस्तित्व प्रदान करता है, वही असबाब को पैदा करता है, और वही उनका मालिक है वह जब चाहता है असबाब को असबाब पैदा करने वाले से विलग करता है और चीज़ों से उनके गुणों को समाप्त कर देता है और उनसे वह चीज़ों प्रकट होती हैं जो उसकी विरोधी होती हैं, उसको जब चाहता है और जिस चीज़ के लिए चाहता है, प्रयोग करता है और जिस काम पर चाहता है लगा देता है। लोगों ने ह़ज़रत इब्राहीम (अ0) के लिए भट्टी तैयार की और कहा–

अनुवाद– ''इन्हें तुम जला दो और अपने माबूदों का बदला ले लो अगर तुम्हें (कुछ) करना है।''

(सूरः अंबिया–68)

लेकिन हज़रत इब्राहीम (अ0) जानते थे कि आग अल्लाह के इरादे के अधीन है, जलाना उसका स्थायी गुण नहीं जो कभी उससे अलग नहीं हो सकता, यह एक गुण है जिसे अल्लह ने उसमें अमानत के तौर पर रखा है, उसकी लगाम उसी के हाथ में है जब चाहे ढील देदे और जब चाहे खींच ले और उसी को देखते देखते चमन बना दे, इस ईमान व यक़ीन के साथ

वह उसमें इत्मीनान के साथ प्रवेश कर गये और वही हुआ जो उन्होंने सोचा था।

अनुवाद– ''हमने हुक्म दिया ऐ आग तू ठंडी और अराम देने वाली हो जा इब्राहीम के हक़ में। और लोगों ने उनके साथ बुराई करनी चाही थी, सो हमने उन्हीं (लोगों) को नाकाम कर दिया।''

(सूरः अंबिया–69–70)

सामान्यतः यह समझा जाता है कि जीवन पानी, उपजाऊ मिट्टी और खेत व बाग़ों पर क़ाइम है, अतएव इन दिनों भी लोग अपने बुतों और ख़ानदानों के लिए ऐसे क्षेत्र की खोज में रहते थे जहां यह चीज़ें उपलब्ध हों और जहां बसा जा सके। हज़रत इब्राहीम (अ0) ने एक विश्वास के विपरीत काम किया उन्होंने अपने छोटे से परिवार के लिए जिसमें पुत्र और पत्नी शामिल थे एक ऐसी ग़ैर आबाद घाटी का चयन किया जहां पानी नहीं था न ही कुछ उगता था, न व्यापार का अवसर जो अलग थलग व्यापारिक केंद्रों और राजमार्गों से दूर स्थित यहां पहुंचकर उन्होंने अल्लाह से दुआ़ की कि वह उनकी रोज़ी रोटी में बरकत दे, दिलों को उनकी ओर फेर दें और हर प्रकार के खाने पीने की चीज़ें और फल वहां पहुंचते रहें। उन्होंने दुआ़ की :–

अनुवाद– ''ऐ हमारे परवरदिगार मैंने अपनी कुछ औलाद को एक ग़ैर खेती वाले मैदान में आबाद कर दिया है, तेरे महान घर के निकट, इसलिए कि वे लोग नमाज़ पढ़ें, सो तू कुछ लोगों के दिल इनकी तरफ फेर दे, और उन्हें खाने को फल दे जिससे यह शुक्रगुज़ार रहें।''

(सूरः इब्राहीम–37)

अल्लाह ने उनकी दुआ़ कुबूल फ़रमायी और उनके शहर को हर प्रकार के फलों और अपने विभिन्न वरदानों से भर दिया–

अनुवाद– ''क्या हमने उनको अमन व अमान करने वाले ह़रम में जगह नहीं दी जहां हर प्रकार के फल खिंचे चले आते हैं, हमारे पास से बतौर खाने के, लेकिन इन में से अक्सर लोग (इतनी बात

www.abulhasanalinadwi.org

भी) नहीं जानते।''

(सूरः क़सस–57)

हज़रत इब्राहीम (अ0) ने अपने घर वालों को एक ऐसी ज़मीन में लाकर छोड़ दिया जहां ह़लक़ तर करने के लिए पानी भी न था, किन्तु ऐसी रेगिस्तानी और पथरीली ज़मीन से अल्लाह ने एक सोता– जारी कर दिया। रेत से पानी स्वतः उबलने लगा, और आज तक उसी प्रकार जारी है। लोग जी भर के उसको पीते हैं और पीपे भर कर अपने साथ ले जाते हैं।

वह अपने घर वालों को एक ऐसी वीरान और ग़ैर आबाद जगह छोड़ देते हैं जहां आदमी का साया भी नज़र नहीं आता लेकिन देखते देखते वह जगह ऐसी आबाद हो जाती है कि दुनिया के हर इलाक़े के लोग वहां देखे जा सकते हैं ह़ज़रत इब्राहीम (अ0) का जीवन उनके युग की सोसाइटी की ह़द से बढ़ी हुई भौतिकवादिता के विरूद्ध एक चुनौती था और ईश्वरीय ताक़त पर भरपूर भरोसे की अभिव्यक्ति अल्लाह हमेशा असबाब (कारण) को ईमान के अधीन बना देता है।

ह़ज ह़ज़रत इब्राहीम द्धअ0क्र के कर्मों की यादगार है

ह़ज और उससे सम्बन्धित तमाम क्रिया–कलाप वस्तुतः तौह़ीद (अद्धैतवाद), अल्लाह पर भरोसा, उसके रास्ते में क़ुरबानी, कारणों को नकारने और खुदा के आज्ञापालन और खुशनूदी को अपने जीवन में उतारने की कोश्शि का नाम है। वह आदत, रस्म व रिवाज, झूठे स्टेन्डर्ड, बनावटी मुल्यों के विरूद्ध एक खुली हुई बग़ावत और ईमान, सच्चे प्रेम, अद्वितीय त्याग व बलिदान व निःस्वार्थ भावना का नवीनीकरण है। वह ह़ज़रत इब्राहीम (अ0) के रास्ते पर चलने, और उनकी शिक्षा व दअ़वत के झंडे को ऊंचा रखने की दअ़वत है।

ह़ज का वातावरण अध्यात्मक पाकीज़गी से इस क़दर भरा होता है कि कठोर से कठोर ह्रदय भी मोम और पत्थर जैसे दिल भी पानी हो जाते हैं। वह आंखें जिन से कभी भय या प्रेम के दो आंसू भी न टपकते थे, मक्का पहुंचकर रो पड़ती हैं। ठंडे दिलों में एक बार फिर गरमाहट आ जाती है

और अल्लाह की रह़मत बरसती है, शैतान को मुंह छिपाने की भी जगह नहीं मिलती।

ह़ज के दिनों में वातावरण को मानों किसी करन्ट ने छू लिया हो। दूर–दूर से आने वाले मुसलमान वीरान और ख़ाली दिलों को फिर से आबाद करते हैं। वह स्वयं भी ईमान, प्रेम और उल्लास का ख़ज़ाना लूटते हैं। और अपने देश वापस जाकर अपने दूसरे भाइयों को भी उनसे लाभान्वित करते हैं। ह़ज अज्ञानी में ज्ञान का शौक पैदा करता है, कमज़ोरों के ह़ौसले बुलन्द करता है निराश लोगों को आशावान बनाता है।

इस्लामी भाईचारे की अभिव्यक्ति

हज इस्लामी भाईचोर की अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करता है, यह देश, जाति, भाषा और इलाक़ाई इकाईयों के विरूद्ध इस्लामी क़ौमियत की जीत है। मक्का पहुंचकर तमाम ह़ाजियों का एक पहनावा होता है जिसे ''इहराम'' कहते हैं जो मात्र दो बिना सिली हुई चद्दरें होती हैं, हज के दिनों में सारे हाजियों का एक ही तराना होता है :

अनुवाद– ''ऐ मेरे अल्लाह मैं ह़ाज़िर हूं। तेरा कोई शरीक नहीं, मैं हाज़िर हूं। सारी तारीफें और नेअ़मतें तेरे लिए ज़ेबा हैं और हुकूमत व बादशाहत भी, तेरा कोई शरीक नहीं।''

इन में ह़ाकिम व मह़कूम आक़ा व नौकर, अमीर व फ़क़ीर और छोटे बड़े का कोई भेद–भाव नहीं होता यही हाल ह़ज के सारे कार्यों का है। सफ़ा और मरवा की दो पहाड़ियों के बीच सब साथ दौड़ते हैं, मिना सब साथ सफ़र करते हैं अरफात साथ जाते हैं। सब एक साथ वापस आते हैं, एक साथ चलते हैं, एक साथ ठहरते हैं।

ह़ज एक निश्चित अवधि में मक्का में ही अदा होता है

हज उन्हीं मुसलमानों पर फ़र्ज़ है जिनके पास ह़ज के सफ़र का पूरा ख़र्च और बाल–बच्चों के लिए इतना ख़र्च हो कि वह उसके पीछे

www.abulhasanalinadwi.org

गुज़ारा कर सकें। रास्ते का अम्न कअ़बा शरीफ़ तक पहुंचने के साधन और इतनी सिह़त व कुव्वत (स्वास्थ्य) भी ज़रूरी है कि यह सफ़र किया जा सके।

हज की इबादत का सम्बन्ध मक्का और उसके पास स्थित मिना और अरफ़रत के स्थलों से है। हज के मनासिक (कृतियों व संस्कार) वहीं अदा होते हैं और यह मनासिक ज़िलहिज्जः की आठ तारीख़ से बारह तारीख की अवधि में अदा किये जाते हैं। इसके अलावा किसी अवधि अथवा स्थान पर ह़ज अदा नहीं हो सकता। ह़ज अल्लाह के दो प्रिय पैग़म्बरों इब्राहीम व ह़ज़रत इस्माईल (अ0) की तौह़ीद की भावना, गहरा प्रेम और उनके त्याग व बलिदान की यादगार और उनके आ़शिक़ाना अमल की नक़्ल है।[1]

1. इस्लाम के इन अरकान (स्तम्भ) के विस्तृत वर्णन के लिए लेखक की पुस्तक ''अरकाने अर्बअ़'' देखें जिसे अकेडमी आफ़ इस्लामिक रिसर्च एण्ड पब्लिकेशन, पो0 बाक्स 119, नदवा, लखनऊ (से प्राप्त किया जा सकता) ने प्रकाशित किया है।

अध्याय–दो

मुसलमानों की कुछ धार्मिक विशेषताएं

1. एक निश्चित विश्वास और शरीअ़त

दुनिया के तमाम मुसलमानों की पहली विशेषता यह है कि उनके अस्तित्व की बुनियाद एक निश्चित विश्वास और शरीअ़त पर है। जिसको संक्षेप में मज़हब कहते हैं।[1] उनकी मिल्लत का नाम और विश्वव्यापी पदवी किसी नस्ल, ख़ानदान, धार्मिक नेता, धर्म के संस्थापक और देश के बजाय एक ऐसे शब्द से लिया गया है जो एक निश्चित विश्वास को व्यक्त करता है। दुनिया की मज़हबी क़ौमें प्रायः अपने–अपने धार्मिक नेताओं, संस्थापकों, पैग़म्बरों, मुल्कों के नाम से लिये गये हैं। जैसे यहूदी, यहूद और बनी इस्राईल कहलाते हैं। यहूद हज़रत याकूब के बेटों में से एक बेटे का नाम और इस्राईल स्वयं हज़रत याकूब अलै0 का नाम है। ईसाई पैग़म्बर ईसा के नाम से जुड़ा है, कुरआन में इन्हें 'नसारा' के नाम से भी याद किया गया है, नासिरा पैग़म्बर मसीह के वतन का नाम है। मजूसियों के धर्मावलम्बियों का, जिन को आ़मतौर पर हिन्दुस्तान में पारसी कहा जाता है, सही नाम ज़ोरास्ट्रियन अथवा ''ज़रतशती'' है जो इस धर्म के संस्थापक ''ज़रतश्त'' से लिया गया है। 'बौद्धमत' अपने संस्थापक ''गौतमबुद्ध'' से बना है।

मुसलमानों को कुरआन और धार्मिक व साहित्य किताबों में ''मुस्लिमून''

1. दुनिया के अनेक धर्म विशेषकर ईसाई दुनिया में जो विशेष अनुभवों और आज़माइशो से गुज़रा है और जहां स्टेट जीवन के तमाम संकायों पर हावी है और जिसका प्रारम्भ से ही यह कथन रहा है कि जो कुछ खुदा का है, वह खुदा को दो और जो कुछ राजा का है वह राजा को दो, धर्म का एक सीमित दायरा रह गया है, और वहां साधारणतः यह सच्चाई स्वीकार कर ली गई है कि धर्म मनुष्य का प्राइवेट मुआ़मला है। इस प्रकार भारत में भी बहुत जगह धर्म मात्र उपासना और कुछ संस्कारों की पूर्ति का नाम रह गया है। इस्लाम में धर्म का अर्थ इससे कहीं अधिक व्यापक और हावी है।

www.abulhasanalinadwi.org

और ''उम्मते मुस्लिमा'' के नाम से याद किया गया है, और अब भी दुनिया के हर कोने में वह ''मुस्लिम'' के नाम से जाने पहचाने जाते हैं। ''मुस्लिम'' शब्द ''इस्लाम'' की ओर निस्बत है। मुसलमानों की निस्बत शब्द 'इस्लाम' की तरफ़ है। ''मुस्लिम'' का अर्थ है खुदा की बादशाही के सामने अपने को हवाले कर देना, सरेन्डर कर देना। यह एक निश्चित संकल्प, एक निर्धारित रवय्या, जीवन शैली और जीवन–डगर है। वह अपने पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद से गहरा सम्बन्ध और घनिष्ठ लगाव रखने के बावजूद एक क़ौम की हैसियत से मोहम्मदी नहीं कहलाते। हिन्दुस्तान में पहली बार अंग्रेज़ों ने उनको ''मोहम्मडन्स'' और उनके कानून को ''मोहम्मडन लॉ'' का नाम दिया, लेकिन उन लोगों ने जो इस्लाम की स्प्रिट से वाक़िफ और उसके जानकार थे, इस पर आपत्ति की, और अपने लिए उसी पुराने लक़ब (उपनाम) ''मुस्लिम'' को प्राथमिकता दी, और उन संस्थानों को जिनका नाम अंग्रेज़ी के प्रारम्भिक शासन काल में मोहमडन कालेज या मोहम्डन कान्फ्रेंस पड़ गया थ, मुस्लिम से बदल दिया।[1]

अक़ीदा (विश्वास और आस्था) और शरीअ़त मुसलमानों की पूरी जीवन व्यवस्था, सभ्यता, व समाज में बुनयादी महत्व रखते हैं और वे स्वाभाविक रूप से इनके मुआ़मले में असाधारण रूप से संवेदनशील (सेन्सेटिव) होते हैं। उनकी व्यक्तिगत और सामूहिक समस्याओं पर विचार करने तथा कानून बनाने यहां तक कि सामाजिक और नैतिक मुआ़मलों में इस बुनयादी तथ्य को सामने रखने की ज़रूरत है। यह बात भी ध्यान में रखने की है कि उनके पर्सनल लॉ का असल और बुनियादी हिस्सा कुरआन से उद्धरित है और उसकी विवेचना हदीस व फिक़्ह की किताबों में की गई है।

मुस्लिम पर्सनल लॉ मुसलमानों की शरीअ़त व मज़हब का हिस्सा है और कुरआन व हदीस से साबित है, किसी सामाजिक प्रयोग अथवा

1. उदाहरणार्थ स्वरूप सर सैय्यद अहमद खां द्वारा स्थापित ''मदरसतुल उलूम'' अलीगढ़ का नाम पहले ''एंग्लो मोहमडन कालेज'' था, जब यूनिवर्सिटी क़ायम हुई तो उसका नाम मुस्लिम यूनिवर्सिटी रखा गया, इसी प्रकार अलीगढ़ के विख्यात सम्मेलन का नाम प्रारम्भ में ''मोहमडन एजूकेशनल कान्फ्रेंस'' था। बाद में उसको मुस्लिम एजुकेशनल कान्फ्रेंस के नाम से लिखा और याद किया जाने लगा।

सामाजिक विज्ञान के अध्ययन अथवा बुद्धिजीवी वर्ग, कानून बनाने वालों और समाज सुधारकों की देन नहीं है, इसलिए कोई मुसलमान हुकूमत भी इसमे संशोधन नहीं कर सकती, वह इसलिए भी मज़हब का हिस्सा है और उसे व्यवहार में लाना हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि इस्लाम में मज़हब का दाइरा धर्म की परिधि विश्वास व उपासना तक सीमित नहीं, वह पारस्परिक सम्बन्धों, कर्तव्य–अधिकार और सभ्यता व समाज पर हावी है, इसलिए यदि मज़हब को सभ्यता व समाज से और सभ्यता व समाज को मज़हब से अलग कर दिया जाये तो मज़हब बेअसर, सीमित और कमज़ोर और सभ्यता व समाज बेनकेल का ऊंट बन जाते हैं और स्वार्थ तथा कामना उन पर हावी हो जाते हैं।

इनमें से कुछ अंश कुरआन में इतना स्पष्ट आया है या उस को निरन्तर इस प्रकार व्यवहार में लाया जाता रहा है और उस पर मुस्लिम विद्वानों का ऐसा मतैक्य रहा है कि उस का इन्कार करने वाला अब क़ानून के लिहाज़ से इस्लाम के दायरे से ख़ारिज समझा जायेगा। भले ही उसकी विवेचना और व्यवहारिकता में कितना ही ज़माने का लिहाज़ किया जाये, इसमें संशोधन, परिवर्तन अथवा परिवर्धन का प्रश्न ही नहीं उठता। इस मुआ़मले में किसी मुस्लिम बाहुल्य देश की निर्वाचित सरकार और विधायिका को भी किसी परिवर्तन का अधिकार नहीं, और मान लो यदि ऐसा किया गया अथवा करने का इरादा है तो एक काट–छाँट और धर्म में हस्तक्षेप का पर्याय है।

अलबत्ता जो मसाइल इज्तिहादी हैं, और जिन में समय के परिवर्तन के साथ बराबर लचक पैदा की जाती रही है और उनको, मुस्लिम विद्वान और फ़िक़्ह के माहिर जो इस के लिए सक्षम हैं अपने इरादा और इख़्तियार और आवश्यक विचार–विमर्श के बाद, नई परिस्थितियों की रिआ़यत करते हुए, समय और व्यवहारिक जीवन के अनुरूप बना सकते हैं। यह प्रक्रिया इस्लाम के इतिहास में हर युग में जारी रही है, और मुसलमानों की अन्तिम पीढ़ी तक ज़रूरी है।

www.abulhasanalinadwi.org

2. पवित्रता (तहारत) की विशिष्ट परिकल्पना और व्यवस्था

स्वच्छता क्लीनलीनेस और पवित्रता में अन्तर है। स्वच्छता का अर्थ है कि शरीर पर मैल कुचैल न हो, कपड़े साफ़–सुथरे हों। पवित्रता का अर्थ यह है कि शरीर या कपड़ों में पेशाब, पाख़ाना (मल–मूत्र) या ऐसी गन्दी चीज़ें जैसे शराब की बूंद, खून, कुत्ते की राल आदि पशुओं का गोबर अथवा चिड़ियों की बीट आदि नहीं लगी है। अब यदि शरीर अथवा कपड़े पर एक छींट भी लग जाये, या रक्त की कोई बूंद, या गोबर, बीट आदि लगी हो तो शरीर कितना ही साफ़ कपड़े कितने ही उजले क्यों न हों मुसलमान पवित्र (ताहिर) नहीं होगा और इस शरीर और कपड़े के साथ नमाज़ नहीं पढ़ सकेगा। इसी प्रकार यदि उसने पेशाब और पाख़ाने के बाद इस्तिन्जा[1] नहीं किया है, या उसे नहाने (स्नान) की ज़रूरत है तो वह नजिस (अपवित्र) है नमाज़ नहीं पढ़ सकता।

यही हुक्म बर्तनों, फ़र्श और ज़मीन का है कि यह ज़रूरी नहीं है कि अगर साफ़ सुथरे और बेदाग़ हों तो वह ताहिर (पवित्र) भी हों, इन चीज़ों के लग जाने से जिन का उल्लेख ऊपर आया है, इनमें से कोई चीज़ बिना पाक किये पवित्र नहीं होगी और वह प्रयोग के योग्य नहीं बनेगा।

3. तीसरी विशेषता आहार की व्यवस्था

मुसलमान खाने पीने और पशुओं व पक्षियों के माँस के प्रयोग में आज़ाद नहीं है कि वे जो चाहें खाएं पियें। उनके लिए कुरआन और शरीअ़त में ह़लाल व ह़राम, अवर्जित व वर्जित के बीच एक लकीर खींच दी गई है, वह इसका उल्लंघन नहीं कर सकते। पशुओं और पक्षियों के बारे में वह इसके पाबन्द हैं कि उनको बिना शरअ़ी तरीक़े पर ज़बह किये और ज़बह के समय अल्लाह का नाम लिए बिना उसका प्रयोग नहीं कर सकते। अगर कोई जानवर शरअ़ी तरीक़ों पर जबह नहीं हुआ या शिकार में किसी

1. पानी अथवा सूखी मिट्टी से मल–मूत्र की जगह (शरीर के अंग) की सफ़ाई।

चिड़िया को हलाल करने की नौबत नहीं आई तो वह उनके लिए मुर्दार का हुक्म रखती है। इसी प्रकार अगर जानवर को ज़बह किया जाये लेकिन गैरूल्लाह की नीयत से हो या उस पर ग़ैरूल्लाह का नाम लिया जाये भले ही वह कोई देवी, देवता, या बुत हो, अथवा कोई पैग़म्बर, वली और शहीद तो वह भी मुर्दार की हैसियत रखता है और उसका खाना जायज़ नहीं। जानवरों में सुअर और कुत्ता हमेशा ह़राम और नजिस (अपवित्र) हैं। कुछ जानवरों का खाना मना और माँस ह़राम है ह़लांकि वह अपनी जात से नजिस नहीं हैं जैसे शेर, तेन्दुवा, चीता आदि। इसी प्रकार कुछ पक्षी उनके लिए ह़लाल हैं और कुछ हराम, जैसे शिकर करने वाले और पंजे से खाने वाले पक्षी, शिकरा, बाज़ आदि हराम हैं, और ग़ैर शिकारी चोंच से खाने वाले ह़लाल हैं। वास्तव मे यह इब्राहीमी सभ्यता की पहचान है और उन्हीं की पसन्द को मुसलमानों को चाहे वह दुनिया के किसी देश और इतिहास के युग के हों, इस का पाबन्द बना दिया गया है।

4. चौथी विशेषता ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल) से हार्दिक लगाव

मुसलमानों की चौथी विशेषता उनका अपने पैग़म्बर से गहरा लगाव है। उनके यहां पैग़म्बर ह़ज़रत मुह़म्मद सल्ल॰ की हैसियत मात्र एक बड़े इन्सान, श्रद्ध का पात्र व्यक्तित्व, और मज़हबी पेशवा की नहीं, उनका सम्बन्ध अपने नबी के साथ इससे कुछ अधिक और इससे कुछ भिन्न है। जहां तक आप की महानता का सम्बन्ध है, उनको इस विख्यात पंक्ति से अधिक बेहतर तरीक़े पर अदा नहीं किया जा सकता।

मुसलमानों को अपने नबी के बारे में तमाम मुशरिकाना विचारों और उस अतिश्योक्ति से रोका गया है जो कुछ पैग़म्बरों की उम्मतों ने अपने पैग़म्बर के बारे में मान रखा है एक सह़ी हदीस में साफ़ तरीक़े पर कहा गया है, ''मुझे मेरी ह़द से न बढ़ाना, और मेरे बारे मे उस अतिश्योक्ति से काम न लेना जो ईसाइयों ने अपने पैग़म्बर के बारे में रचा रखा। कहना हो तो यूं कहना कि खुदा का बन्दा और उसका रसूल।''

www.abulhasanalinadwi.org

लेकिन इस अक़ीदा (श्रद्धा) के साथ मुसलमानों को अपने पैग़म्बर के साथ वह भावनात्मक लगाव है, जो हमारे सीमित ज्ञान व अध्ययन में किसी क़ौम और मिल्लत (धार्मिक समुदाय) में अपने पैग़म्बर के साथ नहीं पाया जाता, यह कहना सही होगा कि इनमें से हज़ारों लाखें लोग आप को अपने माँ–बाप, औलाद और जान से अधिक प्रिय रखते हैं, और आप की मर्यादा की हिफ़ाज़त को अपना फ़र्ज़ जानते हैं। वह किसी समय भी आपकी मर्यादा पर आंच आने तक को सहन नहीं कर सकते। मुसलमान इस मुआ़मले में इतने संवेदनशील हैं, और भावुक होते हैं कि ऐसी अशुभ घड़ी में वह बेक़ाबू हो जाते हैं और अपना जीवन बलिदान कर देने से भी नहीं हिचकिचाते। हर युग में इस बयान की पुष्टि के घटनाएं और दलीलें मिलेंगी। आज भी आप का नाम, आप की मर्यादा, आपकी नगरी, आप की वाणी, आपसे निस्बत रखने वाली चीज़ें मुसलमानों के लिए प्रियतम वस्तुएं हैं और उनके रगों में हरकत पैदा करती रहती हैं।

जिस कसरत से आप (सल्ल॰) पर दुरूद भेजा जाता है, और मुसलमानों के यहां इसका जो महत्व है, जितनी अधिक संख्या में ह़ज़रत मुहम्मद सल्ल॰ की पवित्र जीवनी पर दुनिया की विभिन्न भाषाओं में पुस्तकें लिखी गई हैं और लिखी जा रही हैं, आत्मा की जिस तड़प, प्रेम की जिस भावना से प्रेरित होकर, और काव्यशैली के जिन उत्कृष्ट नमूनों से भरपूर अलंकरति भाषा में आप से लगाव की अभिव्यक्ति ''नअ़तिया शाइरी''[1] में किया गया और किया जा रहा है, उसकी नज़ीर दुनिया के लिट्रेचर में नहीं मिलती।

मुसलमानों का यह भी अक़ीदा है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ अल्लाह के अन्तिम रसूल हैं और आप सल्ल॰ पर ''वह़ी'' (ईश–वाणी) व नुबूवत का सिलसिला हमेशा के लिए ख़त्म हो गया। अब आप के बाद जो नुबूवत का दअ़वा करेगा वह झूठा है। इस अ़क़ीदे की बुनयाद पर कुरआन,

1. हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की प्रशंसा और शौक़ व याद में जो कविता लिखी जाती है उसे ''नअ़तियः शाइरी कहते हैं।

ह़दीस, और तवातुर[1] पर है और इसने मुस्लिम समाज के लिए हमेशा एक सीमा रेखा (लाइन आफ़ डिमारकेशन) का काम दिया है, और हमेशा इसने मुसलमानों को होशियार और चालाक लोगों की साज़िश का शिकार होने से बचाया है।

मुसलमान उन सब लोगों की, जिन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ का ज़माना पाया और जिन्हें आपके के सानिध्य का सुअवसर प्राप्त हुआ जिन्हें आमतौर से ''सहाबा'' कहते हैं, श्रद्धा उनके बारे में सद्विचार और उनकी सेवाओं की स्वीकारोक्ति करना आवश्यक समझते हैं और उनको मिसाली मुसलमान अपना बुज़ुर्ग समझते हैं और अपने को उनके प्रति कृतज्ञ मानते हैं जब कभी वह इन विभूतियों में से किसी का नाम लेते हैं तो ''रज़िअल्लाहु अन्हु'' कहते हैं। अर्थात अल्लाह उनसे राज़ी हों। इनमें से चार उच्च कोटि के सह़ाबियों को जो क्रमशः मुहम्मद सल्ल॰ के जानशीन व ख़लीफ़ा हुए– हज़रत अबूबक्र, हज़रत उमर, हज़रम उस्मान, और हज़रत अली रज़ि0 को इन सह़ाबा में भी सर्वोच्च स्थान देते हैं और जुमा, ईद–बक़रीद के खुत्बा – (सम्बोधन) में ह0 मुहम्मद सल्ल॰ के बाद उनका नाम लेते हैं। इनके अ़लावा छः और सह़ाबी भी हैं जिनको मुहम्मद सल्ल॰ ने उनके जीवन काल में ही जन्नत की खुशखबरी दी है, यह दस लोग ''अ़शर–ए–मुबश्शरा'' कहलाते हैं और हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ के ख़ानदान के लोगों को ''अहले बैत'' कहते हैं, जिनमें आपकी बीवियां, लड़कियाँ और आपके नवासे (ह़ज़रत हसन रज़ि0 और हज़रत हुसैन रजि0) शामिल हैं। मुसलमान इनसे मुहब्बत रखना भी अपना फ़र्ज़ समझते हैं और उनको हमेशा श्रद्धा व सम्मान के साथ याद करते हैं और इसको अपने पैग़म्बर से मुह़ब्बत का तक़ाज़ा समझते हैं।

यही मुआ़मला मुसलमानों का कुरआन मजीद के साथ है। वह कुरआन को मात्र समझदारी, नैतिक उपदेशों और सामाजिक क़ानून का कोई संकलन नहीं समझते जो किसी दर्जे में श्रद्धेय हैं और जब सहूलत से सम्भव

1. किसी कथनी या करनी के सुनने या देखने वाले और फिर उसको नक़्ल करने वाले हर युग में इतनी अधिक संख्या में रहे हैं कि मानव–बुद्धि इन सबको अविश्वसनीय क़रार न दे सके।

www.abulhasanalinadwi.org

हो उस पर अ़मल कर लिया जाये और व्यवहार में लाया जाये बल्कि वह इसको आदि से अन्त तक शब्द से और अर्थ से अल्लाह का कलाम (ईश वाणी) समझते हैं जिसका एक एक अक्षर और एक एक नुक़ता सुरक्षित है और इसमें किसी मात्रा का भी संशोधन या परिवर्तन नहीं हो सकता। मुसलमान कुरआन को हमेशा वुज़ू के साथ पढ़ते और ऊंची जगह रखते हैं।

कुरआन मजीद को कंठस्थ (हिफ़्ज़) करने का तमाम दुनिया में रिवाज है और इसके लिए मदरसे क़ाइम हैं जहां कुरआन मजीद को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ने की शिक्षा दी जाती है और हिफ़्ज़ कराया जाता है। केवल भारत में ह़ाफ़िज़ों की संख्या हज़ारों से बढ़कर लाखों तक पहुंच गई है और इसमें ऐसे ऐसे ह़ाफ़िज़ भी हैं जो एक रात में पूरा कुरआन सुना देते हैं। और ऐसी विभूतियां भी पाई जाती हैं जिनका रमज़ान के महीने में प्रतिदिन एक कुरआन हिफ़्ज़ प्रतिदिन पढ़ लेना वर्षो से चला आ रहा है। इन ह़ाफ़िज़ों में दस–दस, बारह–बारह वर्ष के बच्चे भी बड़ी संख्या में हैं जिनको यह मोटी–बड़ी किताब[1] ज़बानी याद है, कंठस्थ है। और इसको वह प्रवाह के साथ पढ़ सकते हैं औरतों में हर युग में भी एक बड़ी संख्या ह़ाफ़िज़ों की रही है।[2]

5. विश्वव्यापी इस्लामी बिरादरी से सम्बन्ध और उसकी समस्याओं से दिलचस्पी

मुसलमानों की पांचवी विशेषता यह है कि अपने को एक विश्वव्यापी मिल्लत (समुदाय) और अपने दीन व धर्म को लौकिक और

1. ग़ैर मुस्लिमों के लिए लिखा जाता है कि कुरआन में तीन लाख चालीस हज़ार सात सौ अक्षर हैं और मिस्री टाईप में इसकी औसत मोटाई 800–900 पृष्ठों के बीच आमतौर पर होती है। भारत में भी आमतौर पर औसत साइज़ के कुरआन मजीद 600 से 800 पृष्ठ में होते हैं।

2. केवल मेरे छोटे से परिवार में मेरे बचपन में लगभग एक दर्जन हाफ़िज़ औरतें थीं जिन मे केवल मेरे घराने में मेरी मां, मेरी ख़ाला, एक फूफी, एक मुमानी और ख़ालाज़ाद बहन थीं। वह रमज़ान में कुरआन शरीफ़ सुनाती थीं, और औरतों की एक बड़ी संख्या उनके पीछे होती थी। (लेखक)

विश्वव्यापी दीन समझते हैं। उनकी इस मिल्ली विशेषता का समझना और लिहाज़ करना ह़क़ीक़त पसन्दी का तक़ाज़ा है मुसलमान अपने देश से (जहां के वह वासी हैं) लगाव और मुहब्बत तथा वफ़ादारी व निष्ठा की पूरी भावना और उसके निर्माण व विकास में सक्रिय भागेदारी के साथ अपने को इस अन्तर्राष्ट्रीय परिवार अथवा मिल्लत का एक व्यक्ति मानते हैं, और वह सामन्य इस्लामी समस्याओं से दिलचस्पी लेते, दूसरे इस्लामी देशों की समस्याओं से प्रभावित होते और यथासम्भव क़ानून की सीमा के अन्दर रहते हुए उनके साथ सहानुभूति और नैतिक सहायता को देशभक्ति और देश के प्रति वफ़ादारी के प्रतिकूल नहीं मानते। बल्कि इसे धर्म मानवता, प्रकृति और इन्साफ़ का तक़ाज़ा समझते हैं और इसको अपने देश के लिए लाभपद्र और स्थायित्व का कारण मानते हैं। यह मुसलमानों का मिल्ली मिज़ाज और उनकी शिक्षा व इतिहास का स्वाभाविक तक़ाज़ा है, और उनके बारे में कोई राय क़ायम करने अथवा कोई कार्यशैली निर्धारित करने से पहले उनकी इस मिज़ाजी विशेषता को समझ लेना बहुत ज़रूरी है।

www.abulhasanalinadwi.org

अध्याय–तीन

मुसलमानों के दो बड़े त्योहार

मुसलमानों के दो सबसे बड़े त्योहार ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हा हैं जिनको ईद और बक़रईद के नाम से भी याद किया जाता है। ईद रमज़ान के महीने की समाप्ति और शव्वाल (जो इस्लामी कैलेण्डर का दसवाँ महीना है) के चाँद निकलने पर शव्वाल की पहली तारीख़ को होती है। चूंकि रमज़ान का महीना रोज़े का महीना है और वह सब्र व साधना तथा धार्मिक व आध्यात्मिक व्यस्तता में गुज़रता है, इस लिए स्वाभाविक रूप से ईद के चाँद का बड़ा इन्तिज़ार होता है, विशेषकर उन्तीसवीं के चांद की अधिक खुशी होती है। रमज़ान की उन्तीस को सुर्यास्त के समय, मुसलमानों की निगाहें आसमान की तरफ़ होती हैं और हर उम्र और हर तबक़े के लोग चाँद की तलाश में लगे होते हैं। उन्तीसवीं को चाँद नज़र नहीं आता तो अगले दिन फिर रोज़ा रखा जाता है, और तीस का चाँद निश्चित हो जाता है। जैसे ही चांद पर नज़र पड़ती है हर तरफ़ से मुबारक, सलामत का शोर हो जाता है। छोटे बड़ों को सलाम करते हैं। बच्चे परिवार के बड़े बूढ़ों और औरतों को ईद की खुशख़बरी सुनाते हैं। और उन की दुआएँ लेते हैं, जो लोग पढ़े लिखे हैं और सुन्नत पर अमल करने की कोशिश करते हैं वह चाँद देख कर दुआ पढ़ते हैं जिसका अर्थ इस प्रकार है :

> ''(ऐ चाँद) मेरा और तेरा परवरदिगार अल्लाह है तू हिदायत और भलाई का चाँद है। ऐ अल्लाह इस महीने को हमारे ऊपर अम्न और ईमान सलामती और आज्ञापालन तथा अपनी मर्ज़ी की तौफीक़ के साथ शुरू कर।''

कई दिन पहले से ईद की तैयारी शुरू हो जाती है। लेकिन ईद की रात में बड़ी हमाहमी और बाज़ारों और घरों में चहल–पहल होती है। सुबह से ईद की तैयारी शुरूअ हो जाती है। इस सच्चाई की अभिव्यक्ति के लिए

कि आज रोज़ा नहीं है और खुदा ने 29 या 30 दिन के विपरीत आज खाने पीने की इजाज़त दे दी है, सुबह ही सुबह हैसियत के अनुसार खजूर या खुर्मे का नाश्ता किया जाता है फिर स्नान किया जाता है और खुदा ने जिनको सामर्थ्य दिया है वह इस दिन नया जोड़ा पहनना ज़रूरी समझते हैं नहा धो कर, कपड़े पहन कर इत्र खुशबू लगाकर लोग ईदगाह को प्रस्थान करते हैं।

ईदगाह जाने से पहले ग़रीबों के लिए कुछ ग़ल्ला या नक़्द निकालते हैं जिसको ''सदक़–ए–फ़ित्र'' कहते हैं। यह मानो रमज़ान के रोज़ों का शुक्रिया है। यह अगर गेहूँ के रूप में हो तो उसका वज़न पौने दो सेर के क़रीब (एक किलो 633 ग्राम) होता है और अगर जौ हो तो इसका दुगना, और इसकी क़ीमत भी अदा की जा सकती है जो ग़ल्लो के भाव के अनुसार घटती बढ़ती रहती है। यह सदक़ा बालिग़ों के अलावा बच्चों की तरफ़ से भी अदा किया जाता है। ईद की नमाज़ सूर्य चढ़ने के बाद अदा करना सुन्नत है, और इसमें जितनी ही जल्दी हो उतना ही बेहतर है। ईद की सबसे बड़ी जमाअ़त शहर या क़स्बे की ईदगाह में होती है।

मुसलमान ईद की नमाज़ पढ़ने जाते और वहां से आते समय अल्लाह की प्रशंसा और शुक्र के शब्द धीरे–धीरे कहते हुए जाते हैं। सुन्नत तरीक़ा यह है कि एक रास्ते से ईदगाह जाएँ और दूसरे रास्ते से वापस आएँ ताकि दोनों ओर अल्लाह की बड़ाई और मुसलमानों के एका और इबादत के शौक़ की अभिव्यक्ति हो जाये। इससे यह भी लाभ है कि भीड़ में कमी हो जाती है।

पाँच वक़्त की नमाज़ों और जुम्ए के विपरीत ईद–बक़रीद की नमाज़ से पहले न अज़ान है न इक़ामत न कोई सुन्नत, न नफ़िल नमाज़ है जैसे ही मुसलमान जमा हो जाते हैं या नमाज़ का समय हो जाता है, इमाम आगे बढ़ जाता है, और नमाज़ शुरू कर देता है। आम नमाज़ों की हर रकअत में दो तकबीरें हैं एक तकबीरे तहरीमा जिससे नमाज़ शुरू की जाती है और एक रूकू की तकबीर, लेकिन ईदैन (ईद–बक़रीद) की नमाज़

www.abulhasanalinadwi.org

की हर रकअ़त में ह़नफ़ियों के यहाँ तीन–तीन तकबीरें ज़्यादा कही जाती हैं। सलाम फेरने के बाद फ़ौरन इमाम मेम्बर पर चला जाता है और ईद का खुत्बा (सम्बोधन) देता है। जो जुमए की तरह़ दो हिस्सों में बंटा है। एक खुत्बा देकर कुछ सेकेण्ड के लिए इमाम बैठ जाता है, फिर खड़ा हो जाता है और दूसरा खुत्बा देता है। जुमे में पहले खुत्बा है फिर नमाज़, ईद में पहले नमाज़ और फिर खुत्बा। खुत्बे में ईद और उसके सन्देश, और समय की माँग पर प्रकाश डाला जाता है।

बक़रईद में केवल कुरबानी की अभिवृद्धि है। इस में ''सदक़–ए–फ़ित्र'' नहीं दिया जाता है। इसके अ़लावा एक अन्तर यह भी है कि ईद शव्वाल की पहली तारीख़ को होती है और ईदुल अज़ह़ा (जो क़मरी साल का बारहवां महीना है) की दस तारीख़ को होती है। यह वह दिन है जब मक्के में हाजी हज के अरकान से फ़ुरसत पा जाते हैं और ''मिना'' जो मक्का से चार मील पर शहर से बाहर है, अल्लाह की याद, इबादत, कुर्बानी और अल्लाह की नेअ़मतों के प्रयोग और खाने पीने में व्यस्त होते हैं दूसरा अन्तर यह है कि ईद एक दिन की होती है और बक़रईद तीन दिन, बक़रईद की नमाज़ तो दस तारीख़ को ही पढ़ी जाती है लेकिन कुरबानी बारह तारीख़ के सूर्यास्त तक हो सकती है। बक़रईद के मोक़े पर एक बात और भी अधिक है कि नौ तारीख़ की फ़ज्र से तेरह तारीख़ की अ़स्र तक हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद कुछ विशेष शब्द बुलन्द आवाज़ में कहे जाते हैं। जिन में खुदा की बड़ाई का एलान और उसकी प्रशंसा व वन्दना का तराना है। इनको ''तकबीराते तशरीक़'' कहते हैं। इनका अर्थ इस प्रकार है :

''अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई पूजने योग्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, और अल्लाह ही का शुक्र अदा किया जाता है।''

कुरबानी के गोश्त के तीन हिस्से किये जाते हैं, एक हिस्सा घर वालों और अपने लिए, एक हिस्सा मित्रों के लिए और एक हिस्सा दीन–दुखियों के लिए। यह दिन खाने पीने के गिने गये हैं।

ईद और बक़रईद दोनों मुसलमानों के अन्तर्राष्ट्रीय त्योहार हैं जिनसे कोई देश, कोई क़ौम और तब्क़ा अलग नहीं। और यही वह दो त्योहार हैं जिनकी शरअ़ी और दीनी हैसियत में किसी का विरोध नहीं, और न किसी युग में भी इन पर बहस की गई। और लगभग सारे देशों में चाह वह मुस्लिम बाहुल्य देश हों अथवा मुस्लिम अल्पसंख्यक इनके मनाने के तरीक़े और इनके स्वरूप में कोई बड़ा अन्तर नही।

www.abulhasanalinadwi.org

अध्याय–चार

मुसलमानों का रहन–सहन

जन्म से प्रौढ़ अवस्था तक

इस्लामी शरीअ़त ने मुसलमानों के लिए जन्म से मृत्यु तक ऐसी व्यवस्था बनायी है और ऐसा माहौल बनाने का प्रयास किया है जिसमें वह इस सच्चाई को भुला न पाए कि वह इब्राहीमी मिल्लत का एक व्यक्ति है, एक विशिष्ट शरीअ़त का अनुयायी है, वह एक खुदा को मानता है और उसका आज्ञाकारी भक्त है।

बच्चे का जन्म और उसके कानों में अज़ान व इक़ामत

किसी मुसलमान के घर में जब कोई बच्चा पैदा होता है, तो सबसे पहले परिवार या मुहल्ले के किसी नेक आदमी अथवा बड़े–बूढ़े को उस के पास लाते हैं, वह बच्चे के दाँए कान में अज़ान और बाएं कान में इक़ामत कहता है। यह अज़ान और इक़ामत नमाज़ के लिए है और बच्चा नमाज़ तो दरकिनार इस अज़ान और इक़ामत का मतलब और मक़सद भी नहीं समझता। शायद इसका उद्देश्य यह होता है कि सबसे पहले उसके कान में अल्लाह का नाम और उसकी इबादत की पुकार पड़े। ऐसे अवसर पर किसी बड़े–बूढ़े के चबाये हुए खजूर या छुहारे का एक रेज़ा बरकत के लिए उसके मुंह में देने का भी रिवाज है, यह बात पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ के व्यवहार से भी साबित है और यह सुन्नत वहीं से चली है।

बच्चे का अक़ीक़ा व मुण्डन

सातवें दिन बच्चे का अक़ीक़ा करना "मुस्तहब"[1] है।

किसी कारणवश यदि सातवें दिन न हो सके तो चौदहवें दिन और इसी हिसाब से बाद में होता है। अगर बच्चा है तो दो बकरे और अगर बच्ची है तो एक बकरा ज़बह़ किया जाता है, और उसका गोश्त ग़रीबों और प्रियजनों में बांटा जाता है, और घर में भी पका कर खाया और खिलाया जाता है, लेकिन अक़ीक़ा शरअ़ी हैसियत से न फ़र्ज़ है और न वाजिब है और न उन जानवरों को ज़ब्ह़ करना। यदि किसी को इस का सामर्थ्य नहीं तो ज़रूरी नहीं है।

बच्चे का नामकरण

आ़मतौर पर अक़ीक़े के समय ही बच्चे का नामकरण कर दिया जाता है। प्रायः परिवार के किसी बड़े–बूढ़े अथवा मुहल्ला या मस्जिद के किसी विद्वान और नेक आदमी से नाम तजवीज़ कराया जाता है या स्वयं माता–पिता अथवा उनके बुज़ुर्ग अपनी पसन्द का कोई नाम चुन लेते हैं। नाम रखने में प्रायः अरबी तर्ज़ के नाम को प्राथमिकता दी जाती है ताकि बच्चे के नाम से इस्लामियत की अभिव्यक्ति हो और नाम से ही समझ लिया जाये कि वह मुसलमान है। मुसलमान बुद्धिजीवी इसमें बहुत से मनोवैज्ञानिक लाभ बताते हैं और कुछ ऐसे देशों (जैसे चीन) का ह़वाला देकर इस पाबन्दी के महत्व पर बल देते हैं जहां नाम से यह अन्दाज़ा नहीं कया जा सकता है कि वह आदमी मुसलमान है या ग़ैर मुस्लिम। जहां तक इस्लामी शरीअ़त का सम्बन्ध है इस बारे में शरीअ़त ने क़ानूनी तौर पर मुसलमानों को ख़ास नामों का पाबन्द नहीं किया है। केवल इतना बताया है कि बेहतरीन नाम वे हैं जिन से खुदा की बन्दगी अर्थात तौह़ीद की अभिव्यक्ति हो, इसलिए दुनिया के तमाम इस्लामी मुल्कों के मुसलमानों के अधिकांश वह नाम हैं जो

1. जिस काम को करने पर अच्छा बदला मिले और न करने पर कोई गुनाह न हो उसे मुस्तह़ब कहते हैं।

www.abulhasanalinadwi.org

''अ़ब्द'' (भक्त) के शब्द से प्रारम्भ होते हें जैसे अब्दुल्लाह, अब्दुर्रहमान, अब्दुलवाहिद, अब्दुल अ़हद, अब्दुस्समद, अब्दुल अ़ज़ीज़, अब्दुल माजिद, अब्दुल मजीद आदि।[1] यह भी आवश्यक है कि नाम से शिर्क घमण्ड या अवज्ञापालन की अभिव्यक्ति न हो, इस लिए मालिकुल मुलूक और शहंशाह के शब्द नापसन्द किये गये हैं।

मुसलमान बरकत के नेकनामी के लिए नबियों और सहाबियों के नामों को प्राथमिकता देते हैं। इस सिलसिले में स्वाभाविक रूप से मुसलमान का ध्यान सबसे पहले अपने पैग़म्बर, उनके साथियों और उनके परिवार के आदरणी व्यक्तियों की ओर जाता है।

नामों के सिलसिले में यह तथ्य उल्लेखनीय है कि हज़रत मुहम्द सल्ल॰ का नस्ली सम्बन्ध इस्माईली शाख़ा से है और बनी इस्माईल और बनी इस्राईल (अ़रबों और यहूदियों) के मध्य विरोध प्रारम्भ से ही चला आ रहा है लेकिन चूंकि मुसलमानों के अ़क़ीदे में खुदा के सभी पैग़म्बर श्रद्धेय हैं और उन पर ईमान लाना ज़रूरी है, चाहे वह इस्माईली शाखा में हुए हों अथवा इस्राईली शाखा में। इस लिए मुसलमान नामों के बारे में नस्ली पक्षपात का शिकार नहीं। इसी का नतीजा है कि अकेले हिन्दुस्तान में लाखों की संख्या में ऐसे मुसलमान होंगे जिनका नाम इसहाक़ और उनकी औलाद के नाम पर रखा जाता है और वह इसहाक़, याकूब, यूसुफ़, दाऊद, सुलेमान, मूसा, हारून, अ़ीसा, इमरान, ज़ारिया और यह्या कहलाते हैं, और यह सब इस्राईली शाखा से सम्बन्ध रखते हैं। इसी प्रकार औ़रतों में मरियम, और आसिया नाम पाया जाता है। जो इस्राईली शाख़ा की बुजुर्ग औरतों के नाम हैं।

पाकी और तहारत की शिक्षा

बच्चा जब कुछ सयाना हो जाता है और कुछ समझने बूझने लगता

1. इन नामों का दूसरा अंश रह़मान, वाहिद, अह़द आदि अल्लाह के गुणवाचक नाम हैं, रह़मान का अर्थ है बड़ा मेहरबान, वाहिद का अकेला, अह़द का एक, समद का बेनियाज़, अर्थात जो किसी का मुहताज न हो और जिसके सब मुहताज हों।

है तो उसको तहारत की तालीम दी जाती है। अर्थात पेशाब, पाख़ाना के बाद पानी से पाकी हासिल करने, नापाक चीज़ों से बचने और शरीर व कपड़ों को नापाकी से बचाने के निर्देश दिये जाते हैं ज़ाहिर है कि बच्चा इस बारे में पूरे तौर पर एह़तियात नहीं कर सकता। और इसमें माह़ौल, शिक्षा–दीक्षा, परिवारिक परिवेश और पेशे को भी बहुत कुछ दख़्ल है, लेकिन फिर भी दीनदार माँ–बाप इस बात पर ध्यान देते हैं। और देना चाहिए।

नमाज़ पढ़ने की हिदायत

इस अवस्था में बच्चे को वुज़ू करना भी सिखा दिया जाता है और नमाज़ का भी शौक़ दिलाया जाता है। बाप या ख़ानदान के बुज़ुर्ग बच्चे को अकसर अपने साथ मस्जिद ले जाते हैं और वह अपने बड़ों और मुहल्ले वालों के साथ खड़ा हो कर नमाज़ की नक़ल करने लगता है हदीस में आता है कि बच्चा जब सात वर्ष का हो जाये तो नमाज़ की ताकीद करो जब दस वर्ष का हो तो मार कर नमाज़ पढ़ाओ, और उनके बिस्तर अलग कर दो।

इस्लामी शिष्टाचार की शिक्षा-दीक्षा

इसी अवस्था में दीनदार माँ–बाप और पढ़ी लिखी माएं बच्चे को इस्लामी अदब की शिक्षा देती हैं जैसे सब अच्छे काम (खाना खाना, पानी पीना, मुसाफः करना आदि) दाएं हाथ से किये जाएं और शौच आदि बाएं हाथ से। पानी बैठ कर और तीन सांस में पिया जाये, बड़ों को सलाम किया जाये, छींक आने पर ''अल्हम्दु लिल्लाह'' (सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है) कहा जाये, खाना बिस्मिल्ला कह कर शुरू किया जाये और हम्द व शुक्र पर ख़त्म किया जाये। इसी अवस्था में उसको कुरआन की छोटी–छोटी सूरतें और प्रतिदिन की दुआएं याद कराई जाती है। खुदा के पैग़म्बर और भक्तों के ऐसे हालात बयान किये और सुनाये जाते हैं जिस से उस के विश्वास परिपक्व, दुरूस्त और विचार नेक और अच्छे बनें और बच्चा उन को अनुकरणीय समझने लगे।

www.abulhasanalinadwi.org

बालिग होने के साथ, जिसके लिए पन्द्रह वर्ष की आयु काफ़ी समझी जाती है, बच्चे पर नमाज़, रोज़ा और ख़ास शर्तों के साथ ज़कात और हज़ फर्ज़ हो जाते हैं और इनको छोड़ने पर वह गुनाहगार ठहरता है। अब हलाल–हराम, सवाब व अज़ाब का क़ानून उस पर जारी हो जाता है।

प्रौढ़ावस्था से मौत तक

निकाह (शादी)

इस्लाम में निकाह शादी का आयोजन बहुत सादा और संक्षिप्त है। इस को जीवन का एक फ़र्ज़, फ़ितरत का एक तक़ाज़ा और एक इबादत की हैसियत से अदा किया जाता है। केवल ईजाब और क़ुबूल के दो शब्द और दो गवाह इसके लिए ज़रूरी हैं। इसका उद्देश्य यह है कि यह सम्बन्ध जो दो समझदार बालिग़ लोगों के बीच हो रहा है, आपराधिक और गोपनीय ढंग से चोरी छिपे नहीं है। इसी लिए (अनावश्यक अनिवार्यताओं से बचते हुए) किसी क़दर एलान व तशहीर के साथ इसका होना ज़रूरी है और इसके लिए गवाह अनिवार्य हैं। मर्द, महर अदा करना ज़रूरी समझे, और औरत की हिफ़ाज़त व इज़्ज़त और नान व नफ्क़ा की जिम्मेदारी ले। इसके सिवा और कोई चीज़ ज़रूरी नहीं।

इस्लाम के इतिहास में ऐसी भी उदाहरण मिलते हैं कि बावजूद इसके हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ के ज़माने में मदीने के मुसलमानों की संख्या बहुत कम और मदीने की जनसंख्या बहुत सीमित थी, बअ़ज़ ऐसे सहाबी जो मक्के से हिजरत करके आये थे और जिनके पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ से बहुत गहरे और परिवारिक सम्बन्ध थे, ने मदीने में शादी की और स्वयं पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ को (जिनका सम्मिलित होना बरकत और इज़्ज़त दोनों का कारण बनता) निकाहोत्सव में आमंत्रित करने की ज़रूरत नहीं समझी। और हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ को उन सहाबी के निकाह का ज्ञान निकाह हो जाने के बाद वह भी संयोगवश हुआ।

निकाह का ज़्यादा सहीह़ तरीक़ा यह है कि लड़की का बाप या

कोई दूसरा वली[1] निकाह़ पढ़ाये, इस लिए कि ह़ज़रत फ़ात्मा रज़ि0 का निकाह स्वयं पैग़म्बर ह0 मुहम्मद सल्ल॰ ने हज़रत अली रज़ि0 के साथ पढ़ाया। निकाह के समय दो गवाह और एक वकील।[2] लड़की के पास जाकर उसको बताते हैं कि उसका निकाह अमुक मर्द से इतने महर पर किया जा रहा है। इसका जवाब अ़ामतौर से खामोशी से दिया जाता है और इसको लड़की की स्वीकारोक्ति समझा जाता है। यह गवाह और वकील प्रायः खानदान के लोग और लड़की के क़रीबी रिश्तेदार होते हैं। निकाह पढ़ाने वाला इस के बाद बुलन्द आवाज़ से कुरआन शरीफ़ की आयतें, ह़दीसें और दुआ के कुछ वाक्य अरबी में कहता है जिसको खुत्ब–ए–निकाह़ कहते हैं, इसके बाद ईजाब व क़ुबूल करवाता है जिसके आमतौर पर यह शब्द होते हैं ''मैंने अमुक व्यक्ति की लड़की जिसका नाम यह है, को उनकी तरफ़ से इतने महर पर तुम्हारे निकाह़ में दिया, तुमने क़ुबूल किया?'' इस पर दुल्हा इतनी ही आवाज़ में जो क़रीब से सुन ली जाये कहता है, ''मैंने क़ुबूल किया'' फिर क़ाज़ी (निकाह पढ़ाने वाला) और सभी उपस्थित लोग दुआ के लिए हाथ उठाते हैं और दुआ करते हैं कि दुल्हा दुल्हन में प्रेम व मुहब्बत हो और उसका वैवाहिक जीवन सुखमय हो।

इधर कुछ दिनों से बुहत से उलमा खुत्बे का अरबी हिस्सा पढ़ने के बाद उर्दू में संक्षिप्त सम्बोधन करते हैं जिसमें निकाह़ और उसकी ज़िम्मेदारियों पर प्रकाश डालते हैं। और प्रयास किया जाता है कि निकाह मात्र एक रस्म और तफ़रीह़ी चीज़ हो कर न रह जाये बल्कि इसमें दुल्हा और उपस्थित लोगों को धार्मिक और नैतिक सन्देश मिले और उनके अन्दर ज़िम्मेदारी का एहसास जागे।

1. वली लड़की के उस मर्द रिश्तेदार को कहते हैं जो आक़िल बालिग़ हो, वारिस हो सकता हो, और शरीअ़त ने उसको तसर्रुफ़ (दख़ल देना) का अधिकार दिया हो।

2. वकील वह व्यक्ति है जो किसी दूसरे के हुक़ूक़ में उसकी इजाज़त या हुक्म से बतौर नाइब के तसर्रुफ़ करने का अधिकार रखता हो। (यह दोनों ''फ़िक़्ह'' की शब्दावलियां हैं)।

www.abulhasanalinadwi.org

एक तक़रीर का नमूना

(ख़ुत्बः-ए-मसनूनः के बाद)

सज्जनों! यह निकाह मात्र रस्म व रिवाज और प्राकृतिक तक़ाज़े की प्रतिपूर्ति नहीं। निकाह एक इबादत नहीं बल्कि कई इबादतों का जोड़ है। इससे एक शरअ़ी हुक्म नहीं, दर्जनों और बीसियों शरअ़ी हुक्म सम्बद्ध हैं। इसका महत्व कुरआन, हदीस और फ़िक़्ह (ज्यूरिस्प्रूडेन्स) की किताबों में खूब बयान किया गया है किन्तु इस सुन्नत से ग़फ़लत इतनी आ़म है कि जितनी किसी और सुन्नत से नहीं। उल्टे इसे अल्लाह की नाफ़रमानी और शैतान के आज्ञापालन और रीति रिवाज की पाबन्दी का मैदान बना लिया गया है। निकाह में हमारे जीवन के लिए भरपूर सन्देश है। खुत्ब–ए–निकाह़ में कुरआन की जो आयतें प्रारम्भ में पढ़ी गई हैं उसमें बताया गया है कि हज़रत आदम और उनकी पत्नी यह एक अकेला जोड़ा था, इनसे अल्लाह ने मानव वंशज को बढ़ाया और दुनिया को इन्सानों से भर दिया। अल्लाह ने इन दो हस्तियों में ऐसे प्रेम जागृत किये और उनके संयोग मे ऐसी बरकत दी कि आज दुनिया इसकी गवाही दे रही है तो खुदा के लिए यह क्या मुश्किल है कि इस जोड़े से, जिसका निकाह अभी पढ़ा गया, एक परिवार आबाद कर दे। आगे की आयत में कहा गया है, अपने उस परवरदिगार से शर्म करो जिसके नाम पर तुम एक दूसरे से सवाल करते हो।

सज्जनो! सारा जीवन सवाल ही सवाल है व्यापार, शासन शिक्षा सब एक प्रकार के सवाल हैं, एक पक्ष सवाल करने वाला है, दूसरा उस सवाल की पूर्ति करने वाला। यही सभ्य और विकसित समाज की विशेषता है। यह निकाह़ क्या है? यह भी एक सभ्य और शुभ सवाल है। एक शरीफ़ ख़ानदान ने दूसरे शरीफ़ खानदान से सवाल किया कि हमारे बेटे को एक जीवन साथी की ज़रूरत है। उसका जीवन अधूरा है उसे पूरा कीजिए। दूसरे शरीफ़ ख़ानदान ने इस एक सवाल को सहर्ष स्वीकार किया। फिर वह दोनों अल्लाह का नाम बीच में लाकर दूसरे से मिल गये। और दो आत्माएं जो कल तक एक दूसरे से अजनबी और दूर थीं, वह ऐसी क़रीब और बेगाना

से यगाना हो गई कि इनसे बढ़ कर सानिध्य की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती। एक की क़िस्मत दूसरे से सम्बद्ध और एक का सुख–दुःख दूसरे का सुख–दुःख बन गया। यह सब अल्लाह के नाम का करिश्मा है जिसने हराम को हलाल और नाजायज़ को जायज़ बना दिया। अल्लाह तआला फरमाता है कि अब इस नाम की लाज रखना। बड़े स्वार्थ की बात होगी कि तुम यह नाम बीच में लाकर अपनी ग़र्ज़ और स्वार्थ को पूरा कर लो और काम निकाल लो और फिर खुदा के नाम को साफ़ भूल जाओ और जीवन में इसके मताल्बे (मांग) को पूरा न करो। आगे भी इस नाम को याद और इसकी लाज रखना। फिर फ़रमाया कि हाँ रिश्तों का भी ध्यान रखना। आज एक नया रिश्ता हो रहा है, इस लिए ज़रूरत पड़ी कि पुराने रिश्तों को भी याद दिला दिया जाये कि इस रिश्ते से पुराने रिश्ते का हक़ समाप्त नहीं हो जाता है। ऐसा न हो कि पत्नी के इस रिश्ते को याद रखो और माँ के रिश्ते को भूल जाओ। ससुर की सेवा ज़रूरी समझो, यदि कोई यह सोचे कि ऐसी बातों की कौन निगरानी करेगा, और कौन इसे देख रहा है, तो समझ रखो कि अल्लाह सब कुछ देखता है, यह वह गवाह है कि जो हर समय साथ रहेगा। आगे की आयत में एक कटु सत्य याद दिलाया गया है। यह पैग़म्बर ही की शान है कि ऐसी खुशी के मौक़े पर ऐसे कटु सत्य का उल्लेख करें जिससे आदमी अपने लक्ष्य से ग़ाफ़िल न हो पाये और उस दौलत पर नज़र रखे जो साथ जाने वाली और हमेशा साथ रहने वाली है, अर्थात, ईमान की दौलत फ़रमाया कि यह जीवन कितना ही सुखमय और आनन्दमय हो और कितना ही लम्बा हो इसकी चिन्ता बनाये रखना कि इसकी समाप्ति अल्लाह के आदेशों के अनुपालन और ईमान पर हो। यही वह सच्चाई है जिस को दुनिया का एक अत्यन्त सफल मानव, जिसे अल्लाह ने सब कुछ दिया था और हर प्रकार से मालामाल किया था, चरमसीमा पर पहुंचने के बाद भी न भूलने पाया।

और अन्तिम आयत में फ़रमया ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्ची व पक्की बात ज़बान से निकालो। मानों दुल्हा को निर्देश दिया जा रहा है कि वह अपनी ज़बान से निकलने वाले शब्द की ज़िम्मेदारी और

www.abulhasanalinadwi.org

उसके दूरगामी परिणाम को महसूस करे। वह जब कहे कि ''मैंने कुबूल किया'' तो समझो कि उसने कितना बड़ा इक़रार किया है और इससे उस पर कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी आती है। फिर फ़रमाया कि यदि कोई ऐसे ही जांच तौल कर बात कहने का आदी बन जाये और उसके अन्दर स्थायी रूप से ज़िम्मेदारी का यह एहसास पैदा हो जाये तो उसका पूरा जीवन सच्चाई के सांचे में ढल जायेगा। वह एक अनुकरणीय पात्र बन जायेगा और अल्लाह की रज़ामन्दी का पात्र बन जायेगा। और अन्त में फरमाया कि असली कामयाबी अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों के अनुपालन में है, न काम व मोह की पैरवी में न रीति–रिवाज की पाबन्दी में।

खुत्ब–ए–निकाह़ और ईजाब व कुबूल के बाद छुहारे जो इसी मौक़े के लिए लाये जाते हैं, लुटाये या तक़सीम किये जाते हैं। यह निकाह की पुरानी सुन्नत है।

वैवाहिक जीवन की इबादत

इस्लाम में वैवाहिक जीवन को एक इबादत कर दर्जा दिया गया है, और हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ ने अपने जीवन में उसका सबसे बड़ा नमूना पेश किया है। आप ने फ़रमाया ''तुममें सबसे बेहतर वह है जो अपने घर वालों के लिए सबसे ज़्यादह बेहतर हो और अपने घर वालों के लिए तुम सबसे बेहतर मैं हूँ।'' फलतः आपके अन्दर नारी के प्रति जो सम्मान उसकी अनुभूति और कोमल भावनाओं का जो लिहाज़ था, वह नारी जगत के बड़े–बड़े वकील और नारी की प्रतिष्ठा के बड़े–बड़े दअ़वेदार के यहां नहीं मिलता। आप ने अपनी पत्नियों की दिलजोई (सांत्वना) उनकी जायज़ तफ़रीह़ में सहभागिता, उनकी भावनाओं का ध्यान और उनके बीच न्याय व इन्साफ़ की जो मिसाल छोड़ी है उसकी नज़ीर नहीं मिलती। उन्हीं के साथ नहीं बल्कि बच्चों के साथ भी आप इस प्रकार का व्यवहार करते थे कि नमाज़ जैसी चीज़ को आप इस लिए संक्षिप्त कर देते थे कि किसी माँ को तकलीफ़ न हो। अगर कोई बच्चा रोता था तो आप नमाज़ को संक्षिप्त कर देते थे। बहुत बड़ा त्याग है।

आपके लिए तो नमाज़ से बढ़कर कोई चीज़ थी ही नहीं। इस से बढ़ कर कोई कुरबानी नहीं हो सकती थी। आपने फ़रमाया, कभी–कभी मैं चाहता हूं कि लम्बी नमाज़ पढ़ूं लेकिन जब किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनता हूँ तो मुझे ख़्याल होता कि कहीं इसकी मां का दिल न लगा हो, इसकी मां परेशान न हो जाये, इस लिए नमाज़ संक्षिप्त कर देता हूँ।

अन्य स्वाभाविक बातें और मुसलमान

बीमारी आज़ारी इन्सान के साथ लगी हुई है। एक मुसलमान के लिए बीमारी की हालत में भी नमाज़ मुआ़फ़ नहीं है। अलबत्ता इस्लामी शरीअ़त ने इस बारे मे बीमार को बहुत सी सहूलतें दी हैं, अगर वह मस्जिद जाकर जमाअ़त के साथ नमाज़ नहीं पढ़ सकता तो घर में नमाज़ अदा करने की इजाज़त है। अगर खड़े होकर नमाज़ अदा नहीं कर सकता तो बैठ कर और अगर बैठ कर भी उसके लिए पढ़ना दुश्वार हो तो लेट कर और अगर लेट कर भी नमाज़ के अरकान (सोपान) अदा नहीं कर सकता तो इशारे से पढ़ सकता है। अगर पानी का प्रयोग उसके लिए हानिकारक है तो वुज़ू के बजाय तयम्मुम की इजाज़त है। यथा सम्भव पवित्रता (तहारत) का ध्यान भी रखना ज़रूरी है।

बीमार को देखने जाने (अयादत) का इस्लाम में बड़ा महत्व है। यह बड़े पुण्य का काम है। लेकिन बीमार के पास अधिक देर न बैठे और कुशल जानकर जल्द चला आये क्योंकि देर तक बैठने और लम्बी बात करने से उसके तीमारदारों को असुविधा होती है, ऐसी परिस्थितियों की बात और है जिनमें बीमार स्वयं ही देर तक बैठना पसन्द करता हो और उसका दिल बहलाने की ज़रूरत हो।

मुसलमान को अन्त समय की चिन्ता बराबर रहती है, और उसकी मनोकामना होती है कि वह दुनिया से ईमान के साथ रूख़सत हो और उसका अन्त कल्म–ए–शहादत, तौहीद और रिसालत के अक़ीदे पर हो। मुस्लिम समाज मे जहाँ थोड़े बहुत शिक्षा का भी प्रभाव है, यह परम्परा चली आ रही है कि जब कोई मुसलमान किसी मुसलमान से दुआ़ के लिए कहता

www.abulhasanalinadwi.org

है, या जब किसी नेक बन्दे के सम्पर्क में आता है और उसे मिलता है तो उससे अनुरोध करता है कि दुआ कीजिए कि ख़ातिमा–बिल–ख़ैर हो। और इसको बड़ा अहोभाग्य समझता है कि कल्मा पढ़ता हुआ और खुदा का नाम लेता हुआ दुनिया से रूख़्सत हो, विदा हो।

जीवन के अन्तिम क्षणों का आभास होने पर घर वाले और अन्य सम्बन्धी व अन्य लोग पास होते हैं उसे कल्मा पढ़ने को कहते हैं या अल्लाह का नाम लेने को कहते है।। यदि कमज़ोरी के कारण वह बोल नहीं पाता तो वहां मौजूद लोग स्वयं कल्मा पढ़ने लगते हैं। हलक़ सूख जाने का डर हो तो ज़म ज़म अगर घर में हो या पानी, क्योड़ा आदि रोगी के मुंह में टपकाते हैं। इस मौक़े पर सूरः यासीन पढ़ने का बड़ा महत्व बताया गया है। लोग सूरः यासीन पढ़ते हैं और अन्तिम क्षणों का आभास होने पर क़िबला रूख़ (काबा की ओर मुख) कर देते हैं।

मृत्यु और कफ़न-दफ़न

मृत्यु के बाद मय्यत को गुस्ल देने की तैयारी और कफ़न की व्यवस्था की जाने लगती है। कफ़न में एक बेसिला कुर्ता, एक तहबन्द और एक ऊपर की चादर होती है। औरतों के कफ़न में इनके अलावा एक सरबन्द या कसावा और सीना बन्द भी होता है। गुस्ल (सन) का भी ख़ास तरीक़ा है। गुस्ल हर मुसलमान दे सकता है। नेक लोगों द्वारा गुस्ल ज़्यादा अच्छा समझा जाता है।

जब जनाज़ा तैयार हो जाता है तो नमाज़ शुरूअ़ होती है जिस मे शामिल होने का बड़ा सवाब है। नामज़े जनाज़ा जमाअ़त के साथ है। लेकिन इसमे रूकुअ़ और सज्दा नहीं। सब लोग सफ़े बांधकर (लाइन बनाकर) खड़े हो जाते हैं। एक या तीन या पांच या सात या ताक संख्या (विषम संख्या) में सफ़ें बन जाती हैं और कोई आ़लिम या नेक आदमी या मुहल्ले की मस्जिद का इमाम थोड़ा सा आगे बढ़ कर जनाज़ा सामने रख कर खड़ा हो जाता है और नमाज़ शुरूअ़ हो जाती है। जनाज़े की नमाज़ में चार तकबीरें हैं। सब कुछ ख़ामोशी के साथ पढ़ा जाता है। पहली तकबीर

के बाद वह दुआ पढ़ी जाती है जो हर नमाज़ में पढ़ी जाती है, दूसरी तकबीर के बाद दुरूद शरीफ़ पढ़ा जाता है। तीसरी तकबीर के बाद सब मुसलमान (बिना आवाज़ के) दुआ पढ़ते हैं जिसका अर्थ इस प्रकार है :–

''ऐ अल्लाह! हमारे ज़िन्दा और मुर्दा, हाज़िर व ग़ाइब, छोट बड़े और मर्द व औरत की बख़शिश फ़रमा। ऐ अल्लाह हममें से जिसको ज़िन्दा रखे, उसको इस्लाम पर ज़िन्दा रख और जिसको तू दुनिया से उठाये उसको ईमान पर उठा।''

जनाज़ा अगर किसी नाबालिग़ बच्चा या बच्ची का हो तो दूसरी दुआ पढ़ी जाती है। जिसका अर्थ यह है कि ''ऐ अल्लाह! इस बच्चे को हमारा पेशरौ (आगे जाने वाला) हमारे लिए बदला और हमारे लिए (क़ियामत में) सिफ़ारिश करने वाला बना और इसकी सिफ़ारिश कुबूल फ़रमा।''

चौथी तकबीर के बाद सलाम फेरा जाता है और लोग जनाज़े को कान्धा देते हुए क़ब्रिस्तान ले जाते हैं कन्धा देने और मय्यत को क़ब्र तक पहुंचाने और उसकी तदफ़ीन (दफ़नाने) तक वहां रहने का बड़ा महत्व है। और इसका बड़ा सवाब बयान किया गया है। इसलिए आमतौर से लोग कन्धा देने की कोशिश करते हैं और क़ब्रिस्तान कितना ही दूर हो, मौसम कितना ही सख़्त हो, जनाज़ा हाथों हाथ मुसलमानों के कान्धों पर जल्द क़ब्रिस्तान पहुंच जाता है।

क़ब्र आ़मतौर पर पहले से तैयार होती है। जनाज़ा पहुंचने पर कुछ लोग क़ब्र के अन्दर उतरते हैं और मय्यत को क़ब्र में इस प्रकार रखते हैं कि उसका मुख क़िबले की ओर हो। फिर बांस या तख़्ते रखकर ऊपर से मिट्टी डाल देते हैं। जिसको मय्यत को मिट्टी देना कहते हैं मिट्टी देते समय कुरआन शरीफ़ के जो शब्द ज़बान पर होते हैं उनका अर्थ इस प्रकार है :–

''हमने तुमको इसी मिट्टी से पैदा किया है और इसी में हम तुम को वापस करेंगे और फिर इसी से तुम को दोबारा बाहर निकालेंगे''।

(सूरः ताहा–55)

www.abulhasanalinadwi.org

जब क़ब्र तैयार हो जाती है और मिट्टी का एक कोहान सा बन जाता है, उस समय निकट सम्बन्धी कुछ देर ठहर कर मय्यत के लिए दुआ करते हैं और कुछ कुरआन पढ़ते हैं।

ग़मी के घर में आमतौर से ग़मी के दिन मित्रों, और सम्बन्धियों के घरों से ग़मी वाले घर के लोगों और वहां आये रिश्तेदारों के लिए खाना आता है। ऐसा रिवाज इसलिए है कि मय्यत वाले घर के लोगों को स्वयं खाने पकाने का मौक़ा नहीं होता है वह ग़मी में होते हैं। वास्तव में यह एक सुन्नत है।

अध्याय–पांच

इस्लामी सभ्यता व संस्कृति

नबी केवल विश्वास व अक़ीदा और शरीअ़त व आचार्य संहिता की पूर्ति का प्रयास नहीं करते बल्कि वे सभ्यता और संस्कृति के विकास पर भी बल देते हैं। इस्लामी सभ्यता व संस्कृति के कुछ विशेष लक्षण हैं जो उसे अन्य सभ्यताओं से मुमताज़ बनाते हैं।

मुसलमानों की सभ्यता का पहला तत्व आस्था व अक़ीदा पर आधारित इस्लामी जीवन शैली और आचरण है। यह तत्व (फैक्टर) दुनिया के मुसलमानों की सभ्यताओं में अभय खण्ड (कामन फैक्टर) की हैसियत रखता है। मुसलमान दुनिया के किसी भाग, किस देश में बसते हों और उनकी कोई भी भाषा हो और उनकी वेशभूषा कुछ भी हो, यह तत्व, समान रूप से अवश्य पाया जाता है और इस कारण वह एक कुटुम्ब के व्यक्ति और हर जगह एक ही सभ्यता के रखने वाले नज़र आते हैं। इस सभ्यता के लिए ''इब्राहीमी सभ्यता'' से अधिक उपयुक्त कोई शब्द नहीं।

इब्राहीमी सभ्यता की आधारशिला तौहीद, सहज प्रवृत्ति, सीधी सच्ची सोच, सद्व्यवहार, अल्लाह का डर, मायारूपी संसार के उलझावे से बचने, मानव जाति के प्रति उदारता व रहम और सुरूचि पर टिकी है। हज़रत इब्राहीम अ0 इस सभ्यता के प्रवर्तक थे और हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ उनके वारिस थे और आपने इब्राहीमी सभ्यता मे नये सिरे से जान डाल दी और इसकी पूर्ति की तथा इसे स्थायित्व प्रदान किया और इसे एक विश्वव्यापी सभ्यता का रूप दिया।

इब्राहीमी सभ्यता की तीन विशिष्ट विशेषताएं

इब्राहीमी सभ्यता की तीन विशिष्ट विशेषताएं हैं जो उसे दुनिया की सभ्यता में विशिष्ट स्थान प्रदान करती हैं– (1) अल्लाह के अस्तित्व का यक़ीन (2) तौहीद (अर्थात परमेश्वर एक है) का अक़ीदा (3) शराफ़त और

www.abulhasanalinadwi.org

मानव–मानव एक समान (इन्सानी बराबरी) की स्थायी परिकल्पना। इन विशेषताओं का इतना ज्वलन्त और विशिष्ट स्वरूप कहीं देखने को नहीं मिलता।

मुसलमानों की सभ्यता व संस्कृति को ऐसा समझना चाहिए जैसे अलग–अलग पसन्द, स्थानीय परिस्थितियों, जलवायु और मौसम के अनुसार अलग–अलग फैशन और डिज़ाइन के वस्त्र होते हैं, मगर इन सब कपड़ों पर रंग एक ही चढ़ा हो और उनके एक एक तार में अल्लाह के नाम और उसकी याद का रंग रच बस गया हो। अल्लाह का नाम मुसलमानों की सभ्यता में और उन्हीं की शिराओं में खून की तरह जारी है। मुसलमान बच्चा जब पैदा होता है तो सब से पहले उसके कान में अज़ान दी जाती है और इस प्रकार सबसे पहले स्वयं उसके नाम से पहले उसे जिस नाम से मानूस और परिचित किया जाता है वह अल्लाह का नाम है। वह सात दिन का होता है तो उसका अक़ीक़ा किया जाता है और उसका नाम रखा जाता है उसकी शिक्षा–दीक्षा का शुभारम्भ अल्लाह के नाम से और कुरआन की आयतों से होता है, भारतीय मुसलमानों में आज भी इसी रस्म को ''तस्मीयःख्वानी'' अथवा ''बिस्मिल्लाह कराना'' कहा जाता है और निकाह–विवाह के समय भी खुदा का नाम बीच मे लाया जाता है और उसके नाम की लाज रखने का संकल्प लिया जाता है, खुत्ब–ए–निकाह में खुदा के इस एकसान का उल्लेख किया जाता है कि उसने आदम के वंशज मे मर्द व औरत के जोड़े पैदा किये। ईद का दिन आता है तो भी ईदगाह जाते–आते समय अल्लाह की बड़ाई का तराना पढ़ा जाता है। बक़रईद में अल्लाह के नाम पर कुरबानी करने को कहा गया है।

हर मुसलमान की सबसे बड़ी इच्छा होती है कि जीवन के अन्तिम क्षणों में अन्तिम शब्द और आख़िरी बोल जो उसकी ज़बान पर आये वह अल्लाह का पाक नाम हो, और इसी नाम की रट के साथ वह दुनिया से विदा ले। किसी के इन्तिक़ाल (मृत्यु) का समाचार पाते ही, पढ़े लिखे हर मुसलमान की ज़बान से एकदम जो शब्द निकलता है वह है ''इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'' अर्थात ''हम अल्लाह ही के हैं और हमें उसी के

पास जाना है'' और जब अन्तिम विदा (नमाज़े जनाज़ा) का समय आता है तो उसमें आदि से अन्त तक अल्लाह ही का नाम होता है। जब मय्यत को क़ब्र में उतारा जाता है तो यह कह कर कि अल्लाह के नाम के साथ और उसके पैग़म्बर की मिल्लत व मज़हब पर। क़ब्र में जब उसे रखा जाता है तो उसका मुख अल्लाह के घर (कअ़बा) की ओर होता है और दफ़्न के बाद जब कोई मुसलमान उसकी क़ब्र के पास से गुज़रता है तो सूरः फ़ातिहा पढ़ता है जिसके प्रारम्भ में अल्लाह की बड़ाई बयान की गयी है इस प्रकार मुसलमान के पूरे जीवन में और हर हर क़दम पर अल्लाह का नाम होता है।

यह तो जीवन चक्र की बात हुई दैनिक जीवन में भी अल्लाह का नाम हर समय साथ रहता है। मुसलमान अल्लाह का नाम लेकर खाना शुरूअ़ करता है, अल्लाह के नाम और शुक्र पर खाना समाप्त करता है। उसका खाना–पीना, कपड़े बदलना, शौच का जाना सब अल्लाह के नाम और उसके ध्यान के साथ होता है। छींक आये तो उस पर भी अल्लाह का नाम लेने का निर्देश, और जो सुने उसको भी दुआ़ देने की शिक्षा दी गई है। माशा अल्लाह, इन्शा अल्लाह, लाहौल वला कूवतः इल्ला बिल्लाहि मुस्लिम समाज के अभिन्न अंग और उसकी पहचान व अ़लामत हैं।

मुसलमानों की सभ्यता की दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय विशेषता और पहचान उनका तौहीद का अक़ीदा और विश्वास है। यह अद्वैतवाद उनकी आस्था से लेकर कर्म तक और उपासना से लेकर आयोजनों तक हर जगह स्पष्ट दिखाई देती है। उन की मस्जिदों के मीनारें पांच बार इस अक़ीदे का एलान करती हैं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत और बन्दगी के लाइक़ नहीं। उनके घरों को भी इस्लामी उसूल के अनुसार बुतपरस्ती और शिर्क से सुरक्षित होना चाहिए। तस्वीरें, स्टेचु, मूर्तियां उनके लिए नाजायज़ हैं, यहां तक कि बच्चों के खिलौनों में भी इसका लिहाज़ ज़रूरी है। धार्मिक आयोजन हो या राष्ट्रीय त्योहार, राजनीतिक नेताओं का जन्म दिन हो अथवा मज़हबी पेशवाओं की जयन्ती या ध्वजारोहण तस्वीरों और स्टेचु के सामने झुकना, उनके सामने हाथ जोड़कर खड़ा होना या उनको हार

www.abulhasanalinadwi.org

पहनाना मुसलमान के लिए मना और उसकी तौहीद के विपरीत है और जहां कहीं मुसलमान अपनी इस्लामी सभ्यता पर क़ाइम और इस पर कारबन्द होंगे, वह इन कार्यों से बचेंगे। नामों में, आयोजनों में, क़सम खाने मे, बड़ों को श्रद्धा व सम्मान देने में इस्लामी तौहीद की सीमाओं से आगे निकाल जाना और इन बातों में किसी क़ौम की नक़्ल, इस्लाम से हटने का पर्याय है।

इस्लामी सभ्यता की तीसरी अन्तर्राष्ट्रीय पहचान इन्सान की शराफ़त और उत्कृष्टता की वह परिकल्पना और मानव समता का वह अक़ीदा है जो मुसलमान की घुट्टी में पड़ा है और जो उसका इस्लामी मिज़ाज बन गया है। इस अक़ीदे का कुदरती नतीजा यह है कि मुसलमान छुआ–छूत की आदत से अपरिचित है। निःसंकोच दूसरे मुसलमान बल्कि दूसरे इन्सान के साथ खाने के लिए तैयार हो जायेगा और दूसरे को अपने खाने में शामिल होने को कहेगा। कई लोग और विभिन्न लोग निःसंकोच एक बर्तन में खाएंगे, एक दूसरे का बचा हुआ पानी पी लेंगे। अमीर–ग़रीब, नौकर–मालिक सब एक कन्धा से कन्धा मिलाकर खड़े होकर नमाज़ पढ़ेंगे कोई कम हैसियत लेकिन इल्म वाला इमाम बन सकता है, और बड़े–बड़े घराने वाले और उच्च पदाधिकारी उस के पीछे नमाज़ पढ़ेंगे।

अन्य प्रमुख विशेषताएं

उक्त प्रमुख विशेषताओं के साथ इस्लामी सभ्यता की कुछ गौण विशेषताएं भी हैं। जैसे अच्छे कामों का दायें हाथ से करना, दायें हाथ से खाना, दायें हाथ से पानी पीना, किसी को कुछ लेना देना आदि।

इस्लामी समाज में पेशे न स्थायी हैं न तुच्छ

इस्लाम में पेशे और सेवाएं स्थायी हैसियत नहीं रखती हैं कि उन्हें बदला न जा सके, न ही उनकी बुनियाद पर क़ौमों और तबक़ों का गठन होता है। लोगों ने विभिन्न समयों में ज़रूरत और सहूलत के अनुसार कोई पेशा अपना लिया। कभी–कभी वह एक अवधि तक सीमित रहा और कभी

कभी कई पीढ़ी तक चला। अब भी कुछ बिरादरियों में एक ही तरह का काम होता है। लेकिन न तो इसकी कोई मज़हबी हैसियत है और न वह मुस्लिम समाज का अटल क़ानून है। इन बिरादरियों में जो व्यक्ति जब चाहता है अपना पेशा और व्यवसाय बदल लेता है। और इस पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होती और न इस्लाम में कोई पेशा घटिया दृष्टि से देखा जाता है।

मक्का–मदीना और अ़रब देशों में बड़े महान विद्वानों और प्रतिष्ठित मुसलमानों के नाम के साथ उस पेशे का नाम लगा हुआ है जो उनके पूर्वजों ने किसी ज़माने में इख़्तियार किया था, और इसमें न उनको कोई लज्जा महसूस होती है और न किसी दूसरे की निगाह में वह तुच्छ होते हैं।[1]

विधवा का दूसरा विवाह

विधवा का दूसरा विवाह मुसलमानों के यहां कभी दोषपूर्ण और आपत्तिजनक कार्य नहीं समझा जाता था। यह उनके नबी की सुन्नत थी, और हर युग मे महान विद्वान, ईश्वर के परम भक्त, और वैभवशाली राजा बिना हिचक विधवा नारी से स्वयं शादी करते थे, और अपनी विधवा बहनों और बेटियों का दूसरा विवाह कराते थे। अब भी बहुत सी मुस्लिम विधवाएं अपनी मर्ज़ी या किसी मजबूरी से दोबारा शादी के बिना रहती हैं। किन्तु विधवा की दोबारा शादी का चलन होना चाहिए। अन्य देशों में यह चलन अब भी पाया जाता है और विधवा से शादी कदापि ख़राब बात नहीं।

सलाम करने का रिवाज

मिलने जुलने आने जाने में सलाम का रिवाज है। सलाम करने वाला ''अस्सलामु अलैकुम'' कहता है जिसका अर्थ है ''तुम पर खुदा की

1. उदाहरण के लिए हरम शरीफ़ (मक्के की सबसे बड़ी मस्जिद जिसमें कअ़बः स्थित है) के इमाम के नाम का आवश्यक अंश ''खैयात'' (दर्जी) है इसी प्रकार कई विद्वानों के नाम के साथ ''हल्लाक़'' (नाई), ''ज़ैयात'' (तेली), सौवाफ़ (रूई वाला) ''क़स्साब'' (गोश्त बेचने वाला) लगा हुआ है, और उसमें ज़िल्लत अथवा अपमान का कोई पहलू नहीं पाया जाता।

www.abulhasanalinadwi.org

तरफ़ से सलामती हो'', इसका जवाब है। '' व अलैकुम अस्सलाम'' अर्थात तुम पर भी सलामती हो। यह मुसलमानों का अन्तर्राष्ट्रीय सलाम है।

इस्लाम में ज्ञान की प्रतिष्ठा

कुरआन की पहली ''वही'' 12 फरवरी सन् 611 ई0 के लगभग हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ पर मक्के के निकट ''हिरा'' नामी गुफ़ा में नाज़िल हुई। सूरः अलक़ की प्रारम्भिक इन पांच आयतों का अनुवाद इस प्रकार है–

''ऐ मुहम्मद अपने परवरदिगार का नाम लेकर पढ़ो जिसने पैदा किया, जिसने इन्सान को खून की फुटकी से बनाया। पढ़ो और तुम्हारा परवरदिगार बड़ा दयालु है जिसने क़लम के ज़रिऐ इल्म सिखाया और इन्सान को वह बातें सिखाई जिनका उसको ज्ञान न था।''

सृष्टा ने अपनी वाणी की इस पहली क़िस्त और दया व रहमत की बरसात के इस पहले छीटें में भी इस वास्तविकता के उद्घोषणा को स्थगित नहीं किया कि ज्ञान और क़लम का चोली दामन का साथ है। हिरा की गुफा में और उसकी तनहाई में जहां एक नबी जो पढ़ा नहीं था, अल्लाह की तरफ़ से दुनिया के मार्गदर्शन के लिए सन्देश लेने गया था और जिस का यह हाल था कि उसने क़लम चलाना स्वयं भी नहीं सीखा था, उस पर 'वही' नाज़िल होती है तो इसका शुभारम्भ ''इक़रा'' शब्द से होता है अर्थात पढ़ो। क्या विश्व के इतिहास में इसकी नज़ीर कहीं मिल सकती है? यह संकेत था इस ओर कि आप को जो उम्मत दी जाने वाली है, वह उम्मत मात्र ज्ञानार्जन ही न करेगी बल्कि जगतगुरू और ज्ञानमयी होगी वह ज्ञान को इस दुनिया में फैलाने वाली होगी। जो ज़माना आप के हिस्से में आया वह भय का ज़माना नहीं होगा, अज्ञानता का नहीं होगा, ज्ञान के विरोध का नहीं होगा। वह ज़माना वह युग ज्ञान का युग होगा, बुद्धि का युग होगा, हिक्मत का युग, निर्माण का युग होगा, मानव प्रेम और विकास का युग होगा।

आगे कहा गया है कि उस परवरदिगार के नाम से पढ़ो जिसने पैदा किया। उस समय बड़ी ग़लती यह थी कि ज्ञान का रिश्ता परवरदिगार से

टूट गया था, इसलिए ज्ञान सीधी राह से हट गया था। इस टूटे हुए रिश्ते को यहां जोड़ा गया और ज्ञान के साथ परवरदिगार का नाम आया, इसलिए कि ज्ञान उसी का दिया हुआ है, उसी का पैदा किया हुआ और उसी के मार्गदर्शन में ज्ञान का संतुलित विकास सम्भव है। यह दुनिया की सबसे बड़ी क्रान्तिकारी आवाज़ थी जिसे दुनिया के कानों ने सुनी थी जिसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता था। यदि दुनिया के साहित्यकारों और बुद्धिजीवों से कहा जाता कि आप बताइये कि 'वही नाज़िल होने वाली है, जो ईशवाणी होगी उसका शुभारम्भ किस शब्द से होगा, तो मैं समझता हूं, उनमें एक आदमी भी, जो उस ज़माने की अज्ञानता से परिचित था, यह नहीं कह सकता था कि वह 'वही' 'इक़रा' शब्द से प्रारम्भ होगी।

ज्ञान और शिक्षा का मार्ग बहुत लम्बा, जोखिमपूर्ण और जटिल् है इसलिए इसका शुभारम्भ खुदा के मार्गदर्शन मे किया गया, यह वह यात्रा है जहां दिन दहाड़े काफ़िले लुटते हैं, पग–पग पर ग़र्त हैं, घाटियां और नदियां हैं, सांप और बिच्छु हैं, इसलिए इस यात्रा में एक परिपूर्ण पथदर्शक की आवश्यकता है और यह परिपूर्णता केवल ईश्वर में है। बेल–बूटे बनाने का नाम ज्ञान नहीं, खिलौने से खेलने का नाम ज्ञान नहीं वह ज्ञान जो मात्र मनोरंजन के लिए हो, वह ज्ञान नहीं जो एक दूसरे को लड़ाने का नाम है, वह ज्ञान नहीं जो नेशन को नेशन से लड़ाने का काम करे, वह ज्ञान नहीं जो अपने पेट की ख़न्दक को भरने का साधन सिखाने का नाम है, वह ज्ञान नहीं जो ज़बान को केवल प्रयोग करना सिखाता है, बल्कि कहा गया है कि पढ़ो तुम्हारा परवरदिगार बड़ा दयालु है, वह तुम्हारी आवश्यकता से तुम्हारी कमज़ोरियों से कैसे अनभिज्ञ हो सकता है। आप विचार करें कि क़लम की प्रतिष्ठा इससे अधिक किसने बढ़ायी होगी कि हिरा की गुफ़ा में जो पहली ''वही'' नाज़िल हुई उसमे क़लम को भुलाया नहीं गया, वह क़लम जो उन दिनों शायद ढूंढने से भी मक्का में किसी घर में न मिलता।

अन्त में कहा गया कि ज्ञान अगाध और अपार है इसकी कोई सीमा नहीं। ''इन्सान को सिखाया जिसका उसको पहले से ज्ञान न था।'' साइंस क्या है? टेक्नोलोजी क्या है? इन्सान चांद पर जा रहा है, अन्तरिक्ष में उड़ाने

www.abulhasanalinadwi.org

भर रहा है, यह सब इसी ईशवाणी ''इन्सान को सिखाया जिसका उसको पहले से ज्ञान न था'' का करश्मिा नहीं तो क्या है?

ललित कलाएं और मुसलमान

इब्राहीमी सभ्यता की एक विशेषता उसकी गम्भीर यथार्थवादी दृष्टिकोण और ललित कलाओं के बारे में बहुत सोच विचार के मध्यम मार्ग अपनाने वाला दृष्टिकोण है। वह सौन्दर्य, सुव्यवस्था, सलीक़ा और सज–धज की क़दरदान है। किन्तु जिन मनोरंजक कलाओं को युरोप ने ''फाइन आर्ट्स'' का नाम दिया है उनकी कुछ शाखाओं को वह नाजायज़ करार देती है जैसे नाच, चित्रकला, (जीवधारी चीज़ों की) और बुत तराशी (मूर्तियों का गढ़ना), और कुछ में मध्यम मार्ग की शिक्षा देती है जैसे लय व नग़मा (गायन) कि विशेष बन्धनों के साथ मध्यम मार्ग अपनाते हुए इससे लाभान्वित होना या काम लेना जायज़ है। इन ललित कलाओं में व्यस्तता बहराहाल इसकी आत्मा और इसके उद्देश्य के विपरीत और खुदा से डर, परलोक की चिन्ता और उसके नैतिक स्तर के लिए हानिकारक है और एक मुसलमान से यह आशा की जाती है कि वह इनका ध्यान रखेगा।

मज़हब ज़िन्दगी का संरक्षक है

ज़माने के अन्दर ठहराव भी है और गतिशीलता भी यदि वह इन दोनों विशेषताओं में से किसी एक से वंचित हो जाये तो वह अपनी उपादेयता खो देगा। इसी प्रकार सृष्टि में जो भी चीज़ें हैं, व्यक्ति हैं सब के अन्दर धनात्मक और ऋणात्मक लहरें बराबर अपना काम करती हैं। इन दोनों धाराओं के मिलने से कर्म और कर्तव्य का जन्म होता है। मज़हब हर परिवर्तन का साथ दे यह ज़रूरी नहीं और न ही वांछनीय है। यह किसी थर्मामीटर की परिभाषा तो हो सकती है कि वह तापक्रम बतलाए, यह उस वेदरकाक (वायु की दिशा सूचक यन्त्र) की भी परिभाषा हो सकती। जो किसी हवाई अड्डे या ऊंचे भवन पर लगाया गया हो केवल यह मअ़लूम करने के लिए कि हवा किस ओर की चल रही है लेकिन मज़हब की

परिभाषा नहीं हो सकती। मैं समझता हूं कि आप में से कोई भी ऐसा नहीं होगा जो मज़हब को उसके उच्च स्थान से उतार कर थर्मामीटर अथवा वेदरकाक का स्थान देना चाहता हो और यह कि वह मात्र समय के परिवर्तन की पावती देता रहे, एकनालेज करता रहे। सही आसमानी मज़हब के तो क्या किसी तथाकथित मज़हब के अनुयायी अथवा उसके प्रतिनिधि भी इस पोज़ीशन को स्वीकार कर लेने के लिए तैयार नहीं होंगे।

मज़हब परिवर्तन को एक यथार्थ मानता है और इसके लिए वह सारी गुंजाईश रखता है जो एक सही और जायज़ व स्वाभाविक परिवर्तन के लिए ज़रूरी हों। मज़हब ज़िन्दगी का साथ देता है लेकिन साथ मात्र साथ देने के लिए नहीं है। उसका कर्तव्य यह भी है वह सदाचारी परिवर्तन और सदाचार विहीन परिवर्तन में अन्तर करे और देखे कि उसका झुकाव विध्वंसात्मक है अथवा रचनात्मक, उसका परिणाम मानवता के हक़ मे या कम से कम उस मज़हब के अनुयाइयों के हक़ में क्या होगा? मज़हब जहां गतिशील जीवन का साथ देने वाला है वहां जीवन का लेखाकार संरक्षक भी है। गार्जियन का काम यह नहीं कि जो उसके संरक्षकत्व में हो उसके हर सही ग़लत सोच का साथ दे और उसे प्रमाणित करे। मज़हब ऐसा सिद्धान्त नहीं है कि जहां एक ही प्रकार की मुहर रखी हुई है, एक ही तरह की रोशनाई है और एक ही तरह का हाथ है जो दस्तावेज़ और अभिलेख आये उस पर मुहर लगा दे। यह मज़हब का काम नहीं है। मज़हब पहले उसका जायज़ा लेगा फिर उस पर अपना फैसला सुनायेगा और अगर कोई ग़लत अभिलेख उसके सामने आया है जिससे वह सहमत नहीं अथवा जिसको मानवता के हक़ में अहितकर समझता है तो वह न केवल उस पर मुहर लगाने से इन्कार करेगा बल्कि यह भी प्रयास करेगा कि वह उसे रोके।

यहां नैतिकता और मज़हब मे एक अन्तर पैदा हो जाता है। मज़हब अपनी ज़िम्मेदारी और कर्तव्य समझता है कि ग़लत सोच को रोके। नैतिकता और मनोविज्ञान के विशेषज्ञ की ड्यूटी केवल यह है कि वह ग़लत सोच को इंगित कर दे, या अपना दृष्टिकोण बता दे, लेकिन मज़हब का प्रयास होगा कि वह उसका रास्ता रोक कर खड़ा हो जाये।

www.abulhasanalinadwi.org

अध्याय–छः

आचरण की सभ्यता और मन की सफ़ाई

हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ के अभ्युदय के प्रारम्भिक तथा बुनियादी उद्देश्यों का उल्लेख कुरआन में अल्लाह ने इस प्रकार किया है :–

अनुवाद– ''जिस प्रकार (और वरदानों को मिला करके) हमने तुम्हीं में से एक रसूल भेजा है, जो तुम को हमारी आयतें पढ़–पढ़ कर सुनाते और तुम्हें पवित्र व पाक बनाते, और किताब (अर्थात कुरआन) और समझदारी व दानाई सिखाते हैं और ऐसी बातें बताते हैं जो तुम पहले नहीं जानते थे।''

(सूरः अलबक़्र–151)

नबी के आह्वान और अभ्युदय के उद्देश्यों की परिधि में आचरण की सभ्यता और मन की सफ़ाई, आत्मा की शुद्धता का बड़ा महत्वूपर्ण स्थान है। ऊपर की आयत में हिकमत का अर्थ है उच्च आचरण और इस्लामी आदाब। सूरः अल–इस्त्रा की 39 वीं आयत के तुरन्त बाद ''हिकमत'' का शब्द आया है। खुदा फ़रमाता है :–

अनुवाद– ''(ऐ पैग़म्बर) यह उन (हिदायतों) में से हैं जो खुदा ने दानाई की बातें तुम्हारी तरफ़ ''वही'' की है।''

(सुरः अल–इस्त्रा–39)

स्वयं अल्लाह के नबी ने अपने अभ्युदय के उद्देश्य का उल्लेख करते हुए फ़रमाया :–

अनुवाद– ''मेरा अभ्युदय ही इस लिए हुआ कि मैं उच्च आचरण को परिपूर्णता तक पहुंचाऊ''

हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ सदाचरण का बेहतरीन नूमना और परिपूर्ण

आचरण थे। हज़रत आइशा रज़ि0 से आपके आचरण के बारे में पूछा गया तो उन्होंने फरमाया :–

''आपके अख़लाक़ (आचरण) मालूम करना हो तो कुरआन देखो।''

हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ के सानिध्य में एक ऐसी पीढ़ी पली–बढ़ी जो उच्च आचरण और सद्गुणों से सुसज्जित और बुरी आदतों, बुरे स्वभाव, अवगुणों, अज्ञानता के प्रभावों और शैतान के बहकावों से सुरक्षित थी। अल्लाह के नबी ने भी अपने इस कथन से इसकी पुष्टि की। आपने कहा–

''सबसे अच्छे लोग मेरे ज़माने के लोग हैं।''

एक बड़े सहाबी अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 ने बड़ी अलंकृत शैली में सहाबा का परिचय कराया है। वह कहते हैं।

''पवित्र आत्मा, ज्ञान के गहरे, औपचारिकताओं से बरी।''

इन्सान साज़ी (मानव निर्माण) का एक स्थायी कारख़ाना

हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ की वफ़ात (मृत्यु) के बाद नबी के सानिध्य का यह क्रम जब टूट गया तो कुरआन, हदीस और नबी की जीवनी इस रिक्ति की पूर्ति करते रहे। किन्तु विभिन्न राजनीतिक, नैतिक व आर्थिक कारणों के प्रभाव और समय परिवर्तन के कारण हदीस के शैक्षिक और नैतिक पक्ष पर समकालीन शैली जो समाज के लिए अधिक आकर्षक बन गयी थी, भारी पड़ती चली गयी और जीवन गाथा (सीरत) और हदीस वाद–विवाद और शास्त्रार्थ में सीमित हो कर रह गई। लेकिन इस पर भी हदीस व सीरत (कुरआन के बाद) आचरण की सभ्यता दिलों को मांझने और मानव आत्माओं को चमकाने का सबसे प्रभावी और आसान साधन है।

हदीस की किताबों में जो विषय वस्तु है वह दो प्रकार की है, एक का सम्बन्ध कर्म उनके बाह्य स्वरूप से है जो महसूस हो जैसे रूकूअ़, सज्दः, तिलावत, तस्बीह, दुआ, जाप, तबलीग़, जिहाद, सुलह व जंग में शत्रु के साथ व्यवहार आदि और दूसरी क़िस्म का सम्बन्ध अन्तःकरण की उनके

www.abulhasanalinadwi.org

अनुभूतियों से है जो इन कर्मों के सम्पादन के साथ पायी जाती थी। इनके अन्तर्गत निष्ठा व लगन, धैर्य व धीरज, सन्तोष व साधना, त्याग व तप, अदब व हया, तन्मयता व तल्लीनता, विनय व विनती, लोक पर परलोक को प्राथमिकता, परमेश्वर को राज़ी करने व उसके दर्शन की अभिलाषा, मध्यममार्गी स्वभाव, सुरूचि, सहृदयता दीन–दुखियों के साथ सहानुभूति, अनुभूति का रसास्वादन, भावनाओं की पवित्रता, साहस, एहसान व नेकी, सज्जनता व मानवता, अशुभ चाहने वालों को क्षमा, सम्बन्ध तोड़ने वालों के साथ उदारता और न देने वालों के साथ देने का बर्ताव आदि आते हैं।

यहां हम हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ के व्यापक और सारगर्भित गुणों का वर्णन करेंगे। यह उन लोगों के बयान किये हुए हैं जो उनके सर्वाधिक निकट और उनके जीवन के हर पहलू से भलीभांति परिचित थे और जो मानव प्रवृत्ति और नैतिक मूल्यों की गूढ़ता पर गहरी नज़र रखते थे।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का आचरण और स्वभाव

हिन्द बिन अबी हाला जो खदीजा रज़ि0 के बेटे और हसन व हुसैन रज़ि0 के मामा हैं, कहते हैं कि –

''अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ हर समय आख़िरत की सोच में रहते। यह सोच और चिन्ता बराबर बनी रहती, प्रायः खामोश रहते, देर–देर तक खामोश रहते, अनावश्यक न बोलते, बोलते तो प्रत्येक शब्द का साफ़ उच्चारण करते (अर्थात घमंडियों की तरह अधकटे शब्द का प्रयोग न करते), न अधिक बोलते न बुहत कम। आप के स्वभाव और बातचीत में नर्मी थी। आदत में कठोरपन और बेमुरव्वती न थी। न किसी का अपमान करते, और न अपने लिए अपमान पसन्द करते। नेअ़मत (वरदान) की बड़ी क़दर करते और उसको बहुत ज़्यादा जानते चाहे वह कितनी ही कम क्यों न हो और उसकी बुराई न करते। खाने पीने की चीज़ों की न बुराई करते न प्रशंसा। दुनिया और दुनिया से सम्बन्धित जो भी चीज़ होती उस पर कभी गुस्सा न करते, लेकिन जब खुदा के किसी हक़ को कुचला जाता तो उस समय आपके शैर्य के सामने कोई चीज़ ठहर न सकती, यहां तक कि आप उसका बदला ले लेते। आप को अपने लिए स्वयं क्रोध न आता, न अपने लिए बदला लेते, जब संकेत करते तो पूरे हाथ के साथ इशारा करते, जब किसी बात पर आश्चर्य करते तो उसको पलट देते। बात करते समय दाएं हाथ की हथेली को बाएं हाथ के अंगूठे से मिलाते, गुस्सा और नागवारी (अप्रिय) की बात होती तो मुख उधर से फेर लेते, प्रसन्न होते तो नज़रें झुका लेते, आप का हंसना अधिकतर मुस्कुराना था जिससे केवल आपके के दांत जो बरसात के ओलो की तरह पाक, साफ़ होते, ज़ाहिर होते।''

हज़रत अली रज़ि0 जो बड़े ज्ञानी और जानकार थे और जो हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ के निकटतम व्यक्तियों में से थे और ज्ञान व साहित्य मे विशिष्ट स्थान रखते थे, नबी के गुणों का बयान इस प्रकार करते हैं :–

आप स्वभाव से अपशब्द, बेहयाई व बेशर्मी से दूर थे, बाज़ार में कभी आप ज़ोर से न बोलते, बुराई का बदला बुराई से न देते, बल्कि क्षमा कर देते, आपने किसी पर भी कभी हाथ नहीं उठाया अल्लाह की राह में जिहाद को छोड़कर किसी सेवक अथवा औरत पर आप ने कभी हाथ न उठाया। मैंने आप को किसी जुल्म व ज्यादती का बदला लेते हुए भी नहीं देखा, जब तक कि अल्लाह के आदेशों का उल्लंघन न हो, और उस पर आंच न आये। हां, यदि अल्लाह के किसी आदेश को कुचला जाता और उस की गरिमा पर आंच आती तो आप उसके लिए सबसे अधिक क्रोधित होते। दो चीज़ें सामने होतीं तो हमेशा आसान चीज़ का आप चयन करते। जब घर पर होते तो आप आम इन्सानों की तरह नज़र आते, अपने कपड़ों को साफ़ करते, बकरी का दूध दुहते और अपने सारे कार्य स्वयं करते।

अपनी ज़बान सुरक्षित रखते और केवल उसी चीज़ के लिए खोलते जिससे आप को सरोकार होता। लोगों को सांत्वना देते और घृणा न फैलने देते, किसी क़ौम व बिरादरी का प्रतिष्ठित व्यक्ति आता तो उसको सम्मान देते, लोगों के बारे में नपी तुली बात कहते और अपनी प्रसन्नता व आचरण से उनको वंचित न रखते, अपने साथियों के हालात की बराबर ख़बर रखते। लोगों से लोगों के मुआ़मले के बारे में पूछा करते।

www.abulhasanalinadwi.org

अच्छी बात की अच्छाई बयान करते और उसे सशक्त बनाते। बुरी बात की बुराई करते और उसको कमज़ोर करते। आप का मुआ़मला मध्यम मार्गी और समता का था, इसमे उतार चढ़ाव न होता था। आप किसी बात से ग़फ़लत न करते, इस डर से कि कहीं दूसरे लोग भी ग़ाफ़िल न होने लगें और उकता जाएं। हर हाल और हर मौक़े के लिए आप के पास उस परिस्थिति के अनुरूप सामान था। न हक़ (सत्य) के मुआ़मले में कोताही करते न हद से आगे बढ़ते। आप के सानिध्य में जो लोग रहते थे वह सर्वोत्कृष्ट होते थे जो ग़म ख़्वारी व सहृदयता और परोपकार में सब से आगे हो। खुदा का नाम लेकर खड़े होते और खुदा का नाम लेकर बैठते। जब कहीं पदार्पण करते जहां तक लोग बैठे होते उसी जगह आसन ग्रहण करते, और इसका हुक्म भी देते। उपस्थित जनों में प्रत्येक व्यक्ति पर ध्यान देते। आप की संगत में बैठने वाला हर व्यक्ति यह समझता था कि उससे बढ़कर आप की निगाह में कोई और नहीं है। यदि कोई व्यक्ति आपको किसी ग़रज़ से बिठा लेता या किसी ज़रूरत में आपसे बात करता तो बड़े धैर्य के साथ उसकी पूरी बातें सुनते, यहां तक की वह स्वयं ही अपनी बात पूरी करके प्रस्थान करता। यदि कोई व्यक्ति आप से कुछ सवाल करता और कुछ मदद चाहता तो बिना उसकी ज़रूरत पूरी किये उसे वापस न करते या कम से कम नर्मी से जवाब देते। आप का सदाचरण तमाम लोगों के लिए आम था, और आप उनके हक़ में बाप हो गये थे तमाम लोग हक़ के मुआ़मले में आपकी नज़र में बराबर थे आप का सत्संग ज्ञान, भक्ति, हया और शर्म और धैर्य व अमानतदारी का सत्संग था। आपकी मजलिस में न कोई ज़ोर से बोलता था, न किसी के अवगुण बयान किये जाते थे, न किसी की प्रतिष्ठा को आघात पहुंचाया जाता था, न कमज़ोरियों का प्रचार किया जाता था। सब एक दूसरे के बराबर थे और केवल खुदा के डर के आधार पर उनको एक दूसरे पर प्राथमिकता प्राप्त होती थी। इसमे लोग बड़ों का आदर और छोटों के साथ दया प्रेम का मुआ़मला करते थे। ज़रूरत मन्द को अपने पर प्राथमिकता देते थे। यात्रियों और नव आगन्तुकों की सुरक्षा करते और उनकी सुख–सुविधा का ध्यान रखते।

आप सदैव प्रसन्नचित रहते। बड़े विनम्र थे। न कठोर प्रकृति के थे और न सख़्त बात कहने के आदी थे। न चिल्लाकर बोलने वाले, न घमंडियो की तरह बात करने वाले। न किसी को ऐब लगाने वाले। न तंग दिल और कंजूस। जो बात आप को पसन्द न होती तो उसके प्रति उदासीन रहते, और स्पष्टतः उससे निराश भी न होते और उसका जवाब भी न देते (अर्थात उसकी अनदेखी कर देते)। तीन बातों से आपने अपने को बिल्कुल बचा रखा था – एक झगड़ा, दूसरे घमंड और तीसरे अनावश्यक और बेमक़सद काम। लोगों को भी तीन बातों से आप ने बचा रखा था। न किसी की बुराई करते थे, न उसको ऐब लगाते थे (दोषारोपण), और न उसकी कमज़ोरियों और गोपनीय बातों के पीछे पड़ते थे। और केवल वह बात करते थे जिन पर सवाब (पुण्य) की उम्मीद होती थी। जब आप बात करते तो उपस्थित जन अदब से इस प्रकार सर झुका लेते थे कि मालूम होता था कि उनके सरों पर चिड़ियां बैठी हुई थी (अर्थात चुपचाप बिना हिले डुले) जब आप ख़ामोश होते तब यह लोग बात करते। आप के सामने कभी विवाद न करते। यदि आप की मजलिस में कोई व्यक्ति बात करता तो शेष सभी लोग शान्त होकर सुनते, यहां तक कि वह अपनी बात समाप्त कर लेता। आप के सामने हर व्यक्ति को पूरे इत्मीनान से अपनी बात कहने का अवसर मिलता। जिस बात पर सब लोग हंसते उस पर आप भी हंसते जिस पर सब आश्चर्य व्यक्त करते आप भी आश्चर्य व्यक्त करते। यात्री और परदेसी के हर प्रकार के सवाल को धैर्य से सुनते। आप कहते ''तुम किसी ज़रूरत मन्द को पाओ तो उसकी मदद करो।'' आप प्रशंसा उसी व्यक्ति की स्वीकार करते जो नार्मल होता। कोई बात कह रहा होता तो न बोलते और उसकी बात न काटते, हां यदि हद से बढ़ने लगता तो उस को मना करते, या मजलिस से उठकर उसकी बात को काट देते।

आप सर्वाधिक उदार, सहृदय, सत्यवादी, नर्म मिज़ाज और व्यवहार मे अत्यन्त कृपालु थे। जो पहली बार आपको देखता उस पर आप का प्रभाव बैठ जाता, आप के सत्संग में रहता और जान पहचान प्राप्त होती तो आप का फ़रेफ़्तः (मुग्ध) हो जाता। आप की चर्चा करने वाला कहता कि न आप

www.abulhasanalinadwi.org

से पहले आप जैसा कोई व्यक्ति देखा न आप के बाद।''

आप के उच्च आचरण पर एक दृष्टि

''हज़रत मुहम्मदल सल्ल॰ तमाम लोगों में सबसे अधिक उदार नर्म तबीअ़त और खानदानी लिहाज़ से सबसे अधिक आदरणीय हैं। अपने सत्संगियों से अलग थलग न रहते थे उनमें पूरा मेल जोल रखते थे, उनसे बातें करते, उनके बच्चों के साथ खुशमिज़ाजी और विनोदप्रियता का आचरण करते, उनके बच्चों को अपनी गोद में बिठाते। गुलाम और आज़ाद, दीन दुखिया सब का निमन्त्रण स्वीकार करते, बीमारों को देखने जाते चाहे बस्ती के छोर पर हो, क्षमाप्रार्थी को क्षमा करते। आप को सहाबा की मजलिस में कभी पैर फैलाये हुए नहीं देखा गया ताकि किसी को तंगी न हो सहाबा एक दूसरे से कविता सुनते सुनाते और अज्ञानता की किसी बात का उल्लेख करते तो आप ख़ामोश रहते या मुस्कुरा देते। आप अत्यन्त नर्म दिल मुहब्बत करने वाले और कृपालु थे। अपनी बेटी फ़ातिमा से कहते : ''मेरे दोनों बेटों (हसन व हुसैन) को बुलाओ।'' वह दौड़ते हुए आते तो आप दोनों को प्यार करते और उनको अपने सीने से लगाते। आपके एक नाती को आप की गोद में इस हाल में दिया कि उसकी सांस उखड़ चुकी थी, तो आप की आंखों में आंसू जारी हो गये। हज़रत साद ने कहा, ''या रसूलुल्लाह यह क्या है? आपने फ़रमाया ''दया है जो अल्लाह अपने भक्तों में जिसके दिल में चाहता है डाल देता है। और निःसन्देह अल्लाह अपने दयावान भक्तों ही पर दया करता है।''

जब बदर में युद्ध में बन्धकों के साथ हज़रत अब्बास[1] को भी बन्धक बनाया गया और अल्लाह के रसूल ने उनकी कराह सुनी तो आप को नींद नहीं आयी। जब अंसार को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने अब्बास रज़ि0 के बन्धन खोल दिये और इच्छा व्यक्त की कि उनको छोड़ दिया जाये लेकिन आप ने इस बात को स्वीकार नहीं किया।

हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ बड़े ही शीलवान और मेहरबान थे। लोगों

1. हज़रत अ़ब्बास रज़ि0 आप के चाचा थे।

के स्वभाव में जो उक्साहट होती है और मन के क्षणिक ठहराव का बराबर ध्यान रखते थे इसी लिए प्रवचन व उपदेश समयान्तर के साथ करते थे कि कहीं उक्ताहट न पैदा होने लगे। अगर किसी बच्चे का रोना सुन लेते तो नमाज़ संक्षिप्त कर देते। और कहते, ''मैं नमाज़ के लिए खड़ा होता हूं तो इस विचार से नमाज़ संक्षिप्त कर देता हूं कि उसकी मां को तकलीफ़ न हो।''

आप कहते थे, तुम में कोई व्यक्ति मुझ से किसी दूसरे की शिकायत न करे इस लिए कि मैं चाहता हूं कि तुम्हारे सामने इस हाल में आऊं कि मेरा दिल बिल्कुल साफ़ हो। आप कहते, जिसने तर्के में माल छोड़ा वह उसके वारिसों का है, कुछ क़र्ज़ आदि बाक़ी है तो वह हमारे ज़िम्मे। आप घर में आम लोगों की तरह रहते, हज़रत आयशा रज़ि0 कहती हैं कि आप अपने कपड़ों को भी साफ़ कर लेते और अपना काम स्वयं करते। अपने कपड़ों में पेवन्द लगा लेते थे, जूता गांठ लेते थे। हज़रत आयशा रज़ि0 से पूछा गया कि आप अपने घर में किस तरह रहते थे? उन्होंने उत्तर दिया, आप घर के काम काज में रहते थे, जब नमाज़ का समय आता तो नमाज़ के लिए बाहर चले जाते। हज़रत अनस बयान करते हैं कि मैंने किसी व्यक्ति को अल्लाह के रसूल से अधिक अपने परिवार जनों के प्रति कृपालु व दयालु नहीं देखा।

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल॰ ने किसी खाने में कभी कोई ऐब नहीं निकाला। इच्छा हुई तो खा लिया, नापसन्द हुआ तो छोड़ दिया। वह आगे कहते हैं कि मैंने आप की दस साल सेवा की, आपने कभी ''हूं'' भी नहीं किया। और न यह कहा कि अमूक कार्य तुमने क्यों किया और अमुक कार्य तुमने क्यों न किया। आप के साथी आप के लिए इस विचार से खड़े नहीं होते थे कि आप इसको पसन्द नहीं करते थे। आप कहते कि, मेरी इस प्रकार आगे बढ़कर प्रशंसा न करो, जिस प्रकार ईसाइयों ने हज़रत ईसा अ़0 के साथ किया था, मैं तो एक भक्त हूं। तुम मुझे अल्लाह का भक्त और उसका रसूल कहो अदी बिन हातिम कहते हैं कि मैं जब आप की सेवा में उपस्थित हुआ तो आपने मुझ

www.abulhasanalinadwi.org

को अपने घर बुलाया। मैं गया तो आप की बांदी ने तकिया टेक लगाने के लिए पेश किया। आपने तकिए को मेरे और अपने दरमियान रख दिया और स्वयं ज़मीन पर बैठ गये। अदी कहते हैं कि इससे मैं समझ गया कि वह बादशाह नहीं हैं। एक व्यक्ति ने आपको देखा तो आपके शौर्य से कांप गया। आप ने उससे कहा कि ''घबराओ नहीं, मैं कोई बादशाह नहीं हूं। मैं कुरैश की एक महिला का बेटा हूं। आप घर में झाड़ू दे लेते, ऊंट बांधते, उनको चारा देते और बाज़ार से सौदा सुलूफ ले आया करते थे।''

आप को किसी व्यक्ति के बारे में ऐसी बात मालूम होती जो आप को नापसन्द होती तो यह न कहते कि अमुक व्यक्ति ऐसा क्यों करता है। बल्कि यूं कहते कि लोगों को क्या हो गया है कि ऐसे कर्म करते हैं या ऐसी बातें ज़बान से निकालते हैं। इस प्रकार नाम लिए बिना उस कर्म से रोकते।

आप कमज़ोर व बेज़बान जानवरों और चौपाओं के प्रति सहानुभूति रखते और उनके साथ नर्मी का हुक्म फ़रमाते। आप कहते, ''अल्लाह ने हर चीज़ के साथ अच्छा मुआमला करने और नर्मी से बर्ताव करने का हुक्म दिया है, इसलिए ज़ब्ह करो तो अच्छी तरह करो, तुम में से जो ज़ब्ह करना चाहे वह अपनी छुरी पहले तेज़ कर ले और जिस जानवर को ज़ब्ह करना हो उसे आराम दें। आगे कहा है कि, ''इन बेज़बान जानवरों के मुआमले में अल्लाह से डरो। इन पर सवारी करो तो अच्छी तरह, उनको खाओ तो इस हालत में कि वह अच्छी हालत मे हों, सेवक नौकर और मज़दूर व गुलाम के साथ अच्छे बरताव की शिक्षा देते'' और कहते, जो तुम खाते हो वही उनको खिलाओ जो तुम पहनते हो वही उनको पहनाओ, और अल्लाह की मख़लूक़ को कष्ट न पहुंचाओ। जिनको अल्लाह ने तुम्हारे अधीन किया है तुम्हारे भाई, तुम्हारे सेवक और मददगार हैं। जिसका भाई उसके मातहत हो उसको चाहिए कि जो स्वयं खाता है, वही उसको खिलाये जो स्वयं पहनता है वही उसको पहनाये। उनके सुपुर्द ऐसा काम न करो, जो उनकी ताक़त से बाहर हो, यदि ऐसा करना ही पड़े तो फिर उनका हाथ बटाओ।

एक दिन एक ग्रामीण अनपढ़ आप के पास आया और पूछा कि मैं

अपने नौकर को एक दिन में कितनी बार क्षमा करूं? आप सल्ल॰ ने कहा सत्तर बार। और फ़रमाया, ''मज़दूर को उसकी मज़दूरी उसका पसीना सूखने से पहले दे दो।''

हज़रत मुहम्मद (सल्ल) का स्वभाव

आदि काल से प्रकृति का नियम है कि व्यक्ति अपने प्रिय व्यक्तित्व की आदतों, आचरण व स्वभाव को अपनाने का प्रयास करता है। यद्यपि इस पर कोई क़ानूनी पाबन्दी आइद नहीं होती तथापि यह दुनिया का चलन रहा है। यही कारण है कि पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल॰ के आचरण और स्वभाव पर महान ग्रन्थ प्राचीन काल में लिखे गये और आज भी सिलसिला जारी है। इन किताबों में सबसे अधिक ख्याति इमाम तिरमिज़ी की किताब ''शमायल'' को प्राप्त हुई है। इसी किताब से पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ के स्वभाव के बारे में उदाहरण यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

अल्लाह के रसूल जब चलते तो ऐसा मालूम होता कि मानो नीचे उतर रहे हैं। जब किसी की ओर ध्यान देते तो पूरे शरीर से फिर कर ध्यान देते। आप की निगाह नीचे रहती थी। चलने में आप सहाबा को अपने आगे कर देते थे। और आप पीछे रहते थे। जिस से मिलते सलाम करने में पहल करते। आप के बाल कंधों तक थे, और इन पट्टों से जो कान की लौ तक हुआ करते हैं। ज़्यादा और मोढ़ों तक होते हैं उनसे कम थे (अर्थात न अधिक लम्बे बहुत छोटे बल्कि औसत) आपने मांग भी निकाली है। सर में प्रायः तेल रखते थे, और दाढ़ी में कंघी खूब करते थे। जब वह वुज़ू करते या कंघी करते या मोज़ा पहनते तो दाहिने से शुरू करना पसन्द करते। आपके पास एक सुर्मेदानी थी जिससे हर रात को तीन बार एक आंख में और तीन बार दूसरी आंख में सुर्मा लगाया करते। कपड़ों में कुर्ता सबसे अधिक पसन्द था। जब कोई नया कपड़ा पहनते तो खुशी से उसका नाम लेते और दुआ पढ़ते। और फ़रमाते कि सफ़ेद कपड़े पहना करो, और सफ़ेद ही कपड़ों मे मुर्दों को दफ़न करना चाहिए। यह बेहतरीन कपड़ों में से है। एक बार नजाशी ने आप की सेवा में दो काले सादे मोज़े भेजे आप ने उनको पहना और वुज़ू के बाद उन पर मसह भी किया, और ऐसे जूतों में नमाज़

www.abulhasanalinadwi.org

पढ़ी जिनमें दूसरा चमड़ा सिला हुआ था और यह कहते कि एक जूता पहन कर कोई न चले। या दोनो पहन कर चले या दोनों निकाल कर। बाएं हाथ से खाने या केवल एक जूता पहन कर चलने से आप मना करते। और कहते, जूता पहनो तो पहले दाहिना पैर डालो और उतारो तो पहले बायां पैर निकालो। आपने दाहिने हाथ में अंगूठी पहनी है। और एक अंगूठी बनवाई जिसमें पहली पंक्ति में ''मुहम्मद'' दूसरी में ''रसूल'' और तीसरी में ''अल्लाह'' लिखा था। जब शौच को जाते तो अंगूठी उतार देते।

मक्के की विजय के अवसर पर आपने जब मक्के में प्रवेश किया तो सर पर काली पगड़ी थी। पगड़ी जब पहनते तो उसका सिरा दोनों मोढ़ों के बीच डाल देते। आप की लुंगी की ऊंचाई आधी पिंडलियों तक होती। आप टेक लगाकर नहीं खाते थे। आप को कद्दू, लौकी पसन्द थी और हल्वा और शहद भी। गोश्त आप को कभी कभी मुयस्सर आता। आप कहते, जो व्यक्ति बिना खुदा का नाम लिए खाना खाता है उसके साथ शैतान सम्मिलित होता है। और कहते, अल्लाह इससे खुश होता है कि बन्दा कुछ खाये और कुछ पिये तो उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करे। ठंडा और मीठा पानी आप को सबसे अधिक पसन्द था। आप फ़रमाते, खाने और पानी का बदल (विकल्प) दूध की तरह कोई दूसरी चीज़ नहीं। आप ने ज़मज़म खड़े होकर पिया। और पानी तीन सांस में बैठ कर पीते।

आप के पास एक इत्रदान था जिससे इत्र लगाया करते थे। कोई इत्र भेंट करता तो उसे स्वीकार करते। आप कहते, ''तीन चीज़ें रद्द नहीं करना चाहिए, तकिया, खुशबू और दूध।'' फ़रमाया, मर्दाना खुशबू वह है जिसकी खुशबू तेज़ हो और रंग हल्का। और ज़नाना खुशबू वह है जिसका रंग गहरा और खुशबू हल्की। कभी कभी आप बड़े सटीक शेअ़र भी पढ़ते। आपने कविता पाठ की इजाज़त भी दी है। और उस पर इनआ़म भी दिया है और इसको पसन्द भी किया है। आप ने कअ़ब बिन मालिक का क़सीदा (स्तुति) सुना और उनको चादर इनआ़म में दिया।

आप जब आराम करते तो दाहिना हाथ अपने दाएं गाल के नीचे रख लेते। आप का बिस्तर चमड़े का था जिस में खजूर की छाल भरी थी।

अध्याय–सात

नारी की प्रतिष्ठा और उसके अधिकारों की बहाली

मानव समाज में नारी की प्रतिष्ठा और उसके अधिकारों की बहाली की दिशा में इस्लाम का विशिष्ट रोल है। उसने नारी की प्रतिष्ठा को बहाल किया, समाज में उसे उचित स्थान दिलाया, समाज में व्याप्त ज़ालिम क़ानून, अन्यायपूर्ण प्रथाओं और पुरूषों के अपने ही को सब कुछ जानने की भावना से उसे छुटकारा दिलाया कुरआन मजीद में एक सरसरी नज़र भी औरत के बारे में आज्ञानतापूर्ण दृष्टिकोण और कुरआनी व इस्लामी दृष्टिकोण के खुले अन्तर को समझने के लिए काफ़ी है।[1]

कुरआन का वह अंश जो नारी के सम्बन्ध में नाज़िल हुआ है, नारी के अन्दर इसलिए आत्मविश्वास उत्पन्न करता है कि उसके अनुसार समाज में और ईश्वर के निकट नारी का एक सुनिश्चित स्थान है। वह धर्म व ज्ञान, इस्लाम की सेवा, भलाई के कार्यों में सहयोग और नेक व शुद्धचरित्र समाज की संरचना में पूरी तरह हिस्सा ले सकती है। कुरआन की आयतें कर्म के फल, मोक्ष व मुक्ति के बयान में हमेशा पुरूषों के साथ स्त्रियों का भी वर्णन करती है। उदाहरण के लिए यहां कुरआन की आयतों के अनुवाद दिये जा रहे हैं।

अनुवाद– ''और जो कोई सत्कर्म करेगा, पुरूष हो अथवा स्त्री और वह ईमान वाला हो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे। और उन पर तनिक भी अत्याचार न होगा।''

(सूनः निसा–124)

1. इस्लाम से पूर्व की दशा के लिए देखें ''अकादमी आफ़ इस्लामिक रिसर्च एण्ड पब्लीकेशन, नदवा, लखनऊ से प्रकाशित लेखक की पुस्तक ''नारी की प्रतिष्ठा और उसके अधिकारों की बहाली'' पृ0 1–13

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवाद– ''सो उनकी दुआ को उनके पालनहार ने कुबूल कर लिया, क्योंकि मैं तुम में किसी कर्म करने वाले के (चाहे पुरूष हो या स्त्री) कर्म को नष्ट नहीं होने देता, तुम आपस में एक दूसरे के पूरक हो।''

(सूरः आले इमरान–195)

इसी प्रकार कुरआन पवित्र जीवन के साधन व स्रोत प्रदान करने के अवसर पर भी पुरूषों के साथ स्त्रियों को याद रखता है। बल्कि उसके लिए ज़मानत देता है, और उसका वअ़दा करता है।

''पवित्र जीवन'' का अर्थ है– मिसाली और कामयाब ज़िन्दगी जिसमें इज़्ज़त और इत्मिनान (सम्मान व सन्तोष) हो। इस का अर्थ बड़ा व्यापक है।'' कुरआन कहता है :–

अनुवाद– ''नेक अमल (सत्य कर्म) जो कोई करेगा पुरूष हो अथवा स्त्री शर्त यह है कि ईमान वाला हो, तो हम उसे अवश्य एक पवित्र जीवन प्रदान करेंगे। और हम उन्हें उनके अच्छे कर्मों के बदले में अवश्य बदला देंगे।''

(सूरः अन्नहल–97)

सद्गुण, सत्यकर्म तथा धर्म के प्रमुख अंशों का वर्णन करते समय कुरआन पुरूषों के साथ स्त्रियों का मात्र उल्लेख तथा यह संकेत ही नहीं करता कि सत्कर्मों और सद्गुणों में पुरूष एक एक गुण को अलग बयान करता है, और जब पुरूषों के उस गुण का उल्लेख करता है तो इसी गुण से स्त्रियों को भी प्रशंसित करता है और उनका उल्लेख है भले ही इसके लिए विस्तृत वर्णन शैली अपनानी पड़े।

इसकी हिकमत यह है कि गुणों में शक्ति और सामर्थ्य रखने वाले पुरूषों के समकक्ष स्त्रियों को समझने पर वह मानव मन तैयार नहीं होता जिसका पोषण ग़ैर–इस्लामी धर्मो व दर्शनशास्त्र तथा प्राचीन सभ्यता की छत्र–छाया में हुआ है। ऐसी मनोवृत्ति ने सदैव पुरूषों और स्त्रियों में अन्तर किया है और स्त्रियों को अनेक अच्छी बातों में पुरूषों के साथ सम्मिलित होने से भी अलग कर रखा है, उसके हस्तक्षेप और आगे निकल जाने को

सहन करना तो दूर की बात रही। कुरआन कहता है :–

अनुवाद– ''बेशक इस्लाम वाले और इस्लाम वालियों, और ईमान वाले और ईमान वालियों, आज्ञाकारी पुरूष और आज्ञाकारी स्त्रियां और सच्चे पुरूष और सच्ची स्त्रियां, और सब्र करने वाले पुरूष और सब्र करने वाली स्त्रियां और (अल्लाह के सामने) गिड़गिड़ाने वाले पुरूष और गिड़गिड़ाने वाली स्त्रियां, और खैरात करने वाले पुरूष और खैरात करने वाली स्त्रियां, और रोज़ा रखने वाले और रखने वालियां और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले और हिफ़ाज़त करने वालियां और अल्लाह को कसरत से याद करने वाले और याद करने वालियां इन (सब) के लिए अल्लाह ने (पापों की) क्षमा और बड़ा प्रतिफल (बदला) तैयार कर रखा है।''

(सूरः अहज़ाब–35)

कुरआन सिर्फ आज्ञापालन व उपासना के सिलसिले में स्त्रियों का उल्लेख नहीं करता बल्कि सक्षम पुरूषों, विद्वानों, साहसी पुरूषों, धार्मिक व नैतिक लेखा–जोखा और अच्छी बातों का हुक्म करने और बुरी बातों से मना करने की राह में यातनाएं झेलने वालों के साथ भी उनका उल्लेख करता है। कुरआन स्त्री–पुरूष को एक जुट होकर भलाई व ईश्वर से भय (ख़ैर व तक़वा) पर सहयोग करने वाली टोली के रूप में देखना चाहता है। सूरः तौबा में है :–

अनुवाद– ''और ईमान वाले और ईमान वालियां आपस में एक दूसरे के सहयोगी हैं। नेक बातों का आपस में हुक्म देते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं, और नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं और ज़कात देते रहते हैं, और अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर चलते हैं। यह वह लोग हैं कि अल्लाह उन पर ज़रूर रहमत करेगा। बेशक अल्लाह बड़े इख़्तियार और हिकमत वाला है।''

(सूरः तौबा–71)

www.abulhasanalinadwi.org

कुरआन मानवता के सर्वोत्कृष्ट लक्ष्य की प्राप्ति का साधन लिंग, रंग रक्त भेद से परे केवल तक़वा (अल्लाह का लिहाज़, उसका डर) को ठहराता है। कुरआन कहता है :–

अनुवाद– ''ऐ लोगों हमने तुम (सब) को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया है और तुम्हारी विभिन्न जातियां ठहराई हैं ताकि एक दूसरे को पहचान सको। बेशक तुम में सबसे इज़्ज़त वाला वह है जो सबसे ज़्यादा परहेज़गार है। बेशक अल्लाह खूब जानने वाला और पूरी खबर रखने वाला है।

(सूरः हुजरात–13)

यह सब बातें औरतों में साहस, स्वाभिमान तथा आत्मविश्वास उत्पन्न करने और आधुनिक मनोविज्ञान के शब्दों में नारी को हीनता की भावना (Inferiority Complex) से दूर रखने के लिए बहुत काफ़ी हैं।

इन्हीं शिक्षाओं के फलस्वरूप अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ के बाद से वर्तमान युग तक विख्यात मुस्लिम नारियों में शिक्षिकाओं, दीक्षा देने वाली, जिहाद और तीमारदारी करने वाली, साहित्यकार, लेखिका, कुरआन की हाफिज़, हदीस को बयान करने वाली, परहेज़गार तथा समाज में प्रतिष्टित महिलाओं की एक बड़ी संख्या पाई जाती है जिनसे ज्ञानार्जन किया गया है और जिनसे दीक्षा प्राप्त की गई है और जो उच्च एवं आदर्श व्यक्तित्व रखती थीं।

इस्लाम ने मुस्लिम महिला को जो अधिकार दिये हैं उन में से कुछ इस प्रकार हैं : मिलकियत व मीरास का हक़, क्रय–विक्रय का अधिकार, पति से अलग होने (खुलअ़) का अधिकार (अपरिहार्य परिस्थिति में), मंगनी ख़त्म करने का अधिकार (अगर उससे वह सहमत न हो), ईद, बक़रईद, जुमा और जमाअ़त की नमाज़ों में सम्मिलित होने का अधिकार। इनके अतिरिक्त अधिकारों का विस्तृत वर्णन 'फिक़: (विधि शास्त्र)' Jurisprudence की किताबों में मौजूद है।

अध्याय–आठ

इस्लाम में मानवता की प्रतिष्ठा

इन्सान खुदा का नाइब और ख़लीफ़ा है[1]

इस्लाम में यह बताया गया है कि इन्सान दुनिया में खुदा का नाइब है, और दुनिया का ट्रस्टी है, दुनिया एक वक़्फ़ (ईश्वरार्पण) है और इन्सान उसका मुतवल्ली (अधिष्ठाता) उसके ज़िम्मे यहां तक की व्यवस्था और सत्यमार्ग दिखाने का काम है दुनिया में छोटे–छोटे बहुत से ट्रस्ट होते हैं। यह दुनिया, यह सृष्टि एक विशाल ट्रस्ट है। यह किसी की ज़ाती सम्पत्ति या किसी के बाप दादा की जायदाद नहीं कि जिस तरह चाहे खाये उड़ाये। इस ट्रस्ट में जानवर, पशु–पक्षी, वृक्ष, नदी, पर्वत, सोना, चांदी, खाद्यान्न और दुनिया की तमाम नेअ़मतें हैं।

यह सब इन्सान के हवाले की गयी है क्योंकि वह इनके मिज़ाज से भी परिचित है और उनका हमदर्द भी। मानव स्वयं इसी ट्रस्ट की मिट्टी से बना है, और इसी मिट्टी का है और किसी व्यवस्थापक के लिए ज्ञान व हमदर्दी (सहानुभूति) व लगाव दोनों शर्त है। इन्सान, दुनिया के नफ़ा–नुक़सान से भी परिचित है। और उसके अन्दर उसकी आवश्यकताएं भी रखी गई हैं। इसलिए वह अच्छा ट्रस्टी बन सकता है।

1. आजकल मानव की नाक़दरी की जा रही है और जिस तरह इन्सानियत का खून किया जा रहा है उसको देखकर लेखक ने ''मानवता का सन्देश अभियान'' प्रारम्भ किया ताकि इन्सानों को उनका भूला हुआ सबक़ (पाठ) याद दिलाया जाये और उनको मनुष्य का असली मक़ाम और उसकी प्रतिष्ठा व गरिमा से परिचित कराया जाये। इस उद्देश्य से देश के विभिन्न भागों में लेखक ने यात्राएं करके बुद्धिजीवियों के सम्मेलन किये और देश में इन्सानियत का दर्द रखने वालों सें सम्पर्क कर समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने का प्रयास किया और यह काम अब भी जारी है। और इस विषय पर बड़ी मात्रा मे लिट्रेचर विभिन्न भाषाओं में तैयार कर वितरित किया गया। समान धारा रचाने वाले कृप्या, ''सचिव, मानवता का सन्देश फोरम'' पो0 बाक्स नं0 93, लखनऊ–226007 से सम्पर्क करें।

www.abulhasanalinadwi.org

अदाहरण के लिए पुस्तकालय की व्यवस्था वही अच्छा कर सकता है जिसकी ज्ञान के प्रति रूचि हो और पुस्तकों से लगाव और दिलचस्पी हो। यदि पुस्तकालय की व्यवस्था किसी जाहिल के सुपुर्द कर दी गई है, तो वह चाहे कितना ही शरीफ और अच्छा आदमी हो वह बेहतरीन लाईब्रेरियन नहीं बन सकता। किन्तु जिसको ज्ञान का शौक होगा और किताबों से लगाव होगा वह पुस्तकालय में पर्याप्त समय लगायेगा, उसका संवर्धन करेगा और उसको तरक़्क़ी देगा।

इसी प्रकार मानव चूंकि इसी दुनिया का है। उसको इस से दिलचस्पी भी है और वह इसका ज़रूरतमन्द भी है, इस का जानकार भी है और इसका हमदर्द भी। उसको इसी में रहना भी है और इसी में मरना भी, अतएव वह इसकी पूरी देखभाल करेगा और ईश्वर के दिये हुए वरदानों को ठिकाने लगायेगा। इसके अलावा कोई दूसरा इस काम को भली प्रकार नहीं कर सकता।

संसार की व्यवस्था के लिए मनुष्य ही उपयुक्त है। जब हज़रत आदम को अल्लाह ने पैदा किया और धरती पर अपना नाइब बनाया, फ़रिश्ते जो न पाप करते हैं न पाप की इच्छा रखते हैं वे बोले, हे प्रभु आप ऐसे को अपना नाइब बना रहे हैं जो दुनिया में खून खराबा करेगा। हम तेरी वन्दना करते हैं और तेरी उपासना में व्यस्त रहते हैं यह मन्सब हम को मिलना चाहिए। खुदा ने जवाब दिया कि तुम इस बात को नहीं जानते हो। खुदा ने आदम और फ़रिश्तों की परीक्षा ली। चूंकि आदम इसी मिट्टी के थे उनकी प्रवृत्ति इस धरती के अनुरूप थी, वह इस की एक एक चीज़ के जानकार थे उन्होंने ठीक ठीक उत्तर दिया। फ़रिश्तों को इन चीज़ों का ज्ञान न था इसलिए उत्तर न दे सके। इस प्रकार खुदा ने दिखा दिया कि दुनिया की व्यवस्था और इस ट्रस्ट के ट्रस्टी के लिए, अपनी सारी कमज़ोरियों के बावजूद मानव ही उपयुक्त है, बल्कि यह कमज़ोरियां और ज़रूरत ही उसको इस मन्सब के योग्य सिद्ध करती है। यदि इस दुनिया में फ़रिश्ते होते तो दुनिया की अधिकांश नेअ़मतें बेकार सिद्ध होतीं और उनका विकास न होता।

सफल कार्यवाहक और प्रभारी

लेकिन यह भी याद रखना चाहिए कि नाइब और कार्यवाहक का कर्तव्य है कि कार्यवाहक बनाने वाले की पूरी पूरी पैरवी करे। वह इसके आचरण का नमूना और प्रतिबिम्ब है। यदि मैं यहां किसी का प्रभारी हूं तो सफल और स्वामिभक्त प्रभारी उसी समय कहलाऊंगा जब अपनी क्षमता भर उसकी नक़ल करूं और अपने अन्दर उसका आचरण पैदा करूं। अल्लाह की नाइबी यह कहती है कि अपने अन्दर उसके गुणों को उतारा जाये। हमें बतलाया गया है कि ज्ञान, दया, आभार, व्यवस्था, पवित्रता, क्षमा, उपकार, न्याय, सुरक्षा, व संरक्षण, प्रेम, शौर्य व सुन्दरता, अपराधियों की पकड़ व्यापकता व विशालता ईश्वरीय गुण हैं।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ ने मनुष्य को शिक्षा दी कि ईश्वर के गुणों को अपनाओ। मानव अपनी सीमित परिधि में और तमाम कमज़ोरियों के साथ ईश्वरी गुणों की छाया अपने अन्दर पैदा कर सकता है। वह कभी खुदा नहीं हो सकता लेकिन दुनिया में ईश्वर के गुणों का प्रदर्शन कर सकता है और यही एक सच्चे नाइब का काम है। आप अनुमान लगा सकते हैं कि यदि मानव सच्चे दिल से अपने को अल्लाह का नाइब समझने लगे और इसके अनुसार आचार–व्यवहार करने लगे तो स्वयं उसकी और दुनिया की खुशहाली का क्या हाल होगा। मज़हब इन्सान को खुदा का नाइब और इस धरती की व्यवस्था में उसका क़ाईम मक़ाम (प्रभारी) और इस विशाल ट्रस्ट का ट्रस्टी क़रार देता है। इससे बढ़ कर मनुष्य की प्रतिष्ठा और मानवता की उठान नहीं हो सकती।

दो विरोधी परिकल्पनाएं

किन्तु मानव ने स्वयं की दो विरोधी परिकल्पनाएं स्थापित कीं। कहीं तो इन्सान को खुदा बनाया गया और उसकी इबादत होने लगी और कहीं जानवर से बदतर समझ लिया गया और उसको गाय, बैल की तरह हंकाया जाने लगा। कुछ इन्सान स्वंय खुदा बन बैठे और कुछ अपने को जानवर

www.abulhasanalinadwi.org

से बदतर समझने लगे। वह समझते हैं कि हम को केवल पेट भरने से काम है। यह दोनों परिकल्पनाएं ग़लत हैं। न इन्सान खुदा है न जानवर। इन्सान, इन्सान ही है लेकिन खुदा का नाइब है। सारी दुनिया उसके लिए पैदा की गई है और वह इबादत के लिए पैदा किया गया है यह धरती यह दुनिया किसी की ज़ाती जायदाद नहीं, एक ट्रस्ट है और इन्सान उसका ट्रस्टी। इस परिकल्पना और विश्वास के बिना दुनिया की चूल ठीक से नहीं बैठ सकती। इतिहास गवाह है कि जब मनुष्य इस सीधे रास्ते से हटा और हद से बढ़ा और खुदा बनने का प्रयास किया और अपने को दुनिया का असली मालिक समझा अथवा अपनी प्रतिष्ठा से गिरा और अपने को जानवर समझा अथवा दुनिया की ट्रस्टीशिप छोड़ दी और जीवन की ज़िम्मेदारियों से बचना चाहा तो स्वयं भी बरबाद हुआ और यह दुनिया भी तबाह हुई।

प्रेम और भाईचारे का सन्देश

अल्लाह फ़रमाता है, ''अपने पर उस एहसान को याद करो जब तुम एक दूसरे के दुश्मन थे एक दूसरे के खून के प्यासे थे, एक दूसरे का मुंह देखने को तैयार नहीं थे, उसकी कृपा से आपस में भाई भाई बन गये। अल्लाह ने दिलों को मिला दिया।'' यह आयत एक घटना से सम्बन्धित है। जब मक्के में अल्लाह के रसूल और मुसलमानों को खुदा की बन्दगी और इबादत मुश्किल हो गई और वहां के लोगों ने अपनी नासमझी से इस बात को नहीं समझा कि यह हमारा भला चाहते हैं और यह हमें ग़र्त से निकाल कर ऐसी क़ौम बनाना चाहते हैं कि जिससे सारी दुनिया मे रौशनी फैले। सारी दुनिया में प्रेम और भाईचारा फैले, आपस में झगड़े समाप्त हों, लोगों को जीवन का लक्ष्य मालूम हो जाये, अल्लाह ने हमें जो क्षमताएं दी है। उसका सदुपयोग हो, जो क्षमताएं छोटी–छोटी मामूली बातों से नष्ट हो रही हैं, क़ौमें–क़ौमों से लड़ रही हैं, देश–देश के दुश्मन हैं, बिरादरियों में हज़ार झगड़े हैं, बुराइयां आम हो रही हैं, ऐसी घटनाएं घट रही हैं जिनसे खुदा नाराज़ होता है और रूठ जाता है उसका अभिशाप भड़कता है। इस्लाम यह चाहता है कि उनको ग़र्त से निकालकर ऊंचा उठाये। लेकिन मक्का के

लोग इसे नहीं समझे। उनके अन्दर यह भावना काम कर रही थी कि अमुक वंशज, अमुक घराने का कोई व्यक्ति इतना बढ़ जाये। जब हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ और उनके साथियों का मक्के में जीना दूभर हो गया तो उन्हें अपने प्रिय वतन को छोड़ देना पड़ा।

औस व खज़रज[1] की लड़ाई

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ और उनके अनुयायी जब मक्का छोड़ कर मदीना आये तो यहां एक दूसरी मुसीबत थी। यहां दो बिरादरियां थीं और दोनों अरब के थे। मगर बहुत दिनों से उनमें दुश्मनी थी। हर बिरादरी अपनी अच्छाई और दूसरे की बुराई बयान करती। जब कोई महान लक्ष्य सामने नहीं होता तो छोटी–छोटी बातों में लड़ाईयां होती हैं, मुक़दमें चलते हैं, विरोध होता है, मैं ज़मीनदार खानदान का व्यक्ति हूं, मेरे ननिहाल की बड़े ज़मींदारों में गिनती थी, हमारे इलाक़े में ज़मींदारी के दिनों में छोटी–छोटी बातों में लड़ाई होती, किसी बबूल के वृक्ष, हदबन्दी या दो खेतों के बीच मेंड पर या यह कि मैं गुज़र रहा था अमुक ने सलाम नहीं किया बस लड़ाई छिड़ जाती, बाई काट होता, बच्चों को निर्देश दिया जाता कि अमुक के घर न जाएं, बच्चे इन बातों को क्या समझते, उन्हें खेल मिला देता।

चाहिए तो यह था कि ज्ञान सब को मिलाये, लेकिन आज की दुनिया में खेल मिलाता है एक देश की टीमें दूसरे देश जाती हैं सब मिल–जुल कर खेलते हैं, बड़े दुःख की बात है कि ज्ञान न मिलाये और खेल मिलाये।

जब कोई बड़ा लक्ष्य सामने नहीं होता, मानव संसार में जो आग लगी हुई है, जो बुराई व्याप्त है, ईश्वर के प्रकोप को भड़काने वाली मानवता को रौंदने वाली जो घटनाएं घटित हो रही हैं उनका दर्द व एहसास जब नहीं रहता तो बच्चों की तरह खेल तमाशों में जी लगता है अथवा

1. अ़रब प्राय़दीप में छठी–सातवीं शताब्दी में रहने वाली दो बिरादरियां (क़बीले)

www.abulhasanalinadwi.org

छोटी–छोटी बातों को तूल देने लगते हैं। जिन पर दुख भी होता है और हंसी भी आती है।

मदीना वालों का भी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ के आगमन से पूर्व यही हाल था। औस व ख़ज़रज के लोग आपस में ऐसे लड़ते थे, एक दूसरे के खून से प्यास बुझाते थे यह भावना उनमें वर्षों से थी। जब अल्लाह के रसूल सल्ल॰ और उनके साथी मदीना पहुंचे तो उनके सामने बड़ा लक्ष्य आया, बड़े रहस्य खुले और उनकी काया पलट गई। अब वह आपस में घुल मिल गये, एक जान व एक दिल हो गये, उन्होंने पुरानी बातों को बिल्कुल भुला दिया, कटुता दूर हो गयी। मदीना में आबाद यहूदियों को यह पसन्द नहीं था, उन्होंने लड़ाने की बहुत कोशिश की लेकिन औस व ख़ज़रज का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अल्लाह के रसूल के प्रति अनुराग ने उनकी अदावतों को धो दिया था और उनको अपना बीता हुआ समय ऐसा घृणित लगने लगा जिसे सोच कर उनके रोंगटे खड़े हो जाते थे। जब कोई बड़ा लक्ष्य जैसे परहित, सेवा भाव, अल्लाह को अपना बनाने, लोगों का दुःख दर्द दूर करने की भावना सामने हो तो छोटी–छोटी बातें ऐसी तुच्छ मालूम होती हैं कि उनको सोचकर मतली (मिचली) आती है। एक बार अंसार और मुहाजिरों के बीच एक कुएं पर लड़ाई हो गई, एक ने अपने क़बीले को आवाज़ दी दूसरे ने अपने हिमायतियों को दुहाई दी। हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ ने सुना तो फ़रमाया कि, ''छोड़ो यह बड़ी ही नीच हरकत है।'' हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ की एक शिक्षा दीक्षा से अंसार व मुहाजिरीन में ऐसा क्रान्तिकारी परिवर्तन आया कि युद्ध क्षेत्र में घायल हैं दम निकलने को है, प्यास लगी है, पानी आता है तो दूसरे घायल की ओर संकेत करके उसे पहले पिलाने पर बल देते है। त्याग की यह भावना इस्लाम से रिश्ते, लक्ष्य से लगन और नबी के प्रति अगाध प्रेम व श्रद्धा ने पैदा किया था। इन पर परहित का ऐसा नशा छा गया कि मदीने के अन्सार ने मक्के के मुहाजिरों को अपनी दुकान, अपने खेत अपनी जायदाद, में बराबर शरीक किया।

शिर्क के बाद सबसे नापसन्द चीज़ आपस की रंजिश

हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ ने शिर्क के बाद सबसे अधिक भर्त्सना जिस चीज़ की की है वह आपस की रंजिश है। हदीस में आता है कि शबे–बरात अर्थात नजात व मोक्ष की रात को जिस में आम मुआ़फ़ी होती है, जब दया का सागर उमड़ता है, तीन आदमियों को मुआ़फ़ी नहीं मिलती– माता–पिता का अवज्ञाकारी, शराब का आदी और वह व्यक्ति जिसके दिल में किसी भाई के प्रति रंजिश या कीना हो। हज़रत मुहम्द सल्ल॰ ने विशेषकर रिश्तेदारियों का ध्यान रखने की ताकीद फ़रमायी है। आपने फ़रमाया–

''मेरे परवरदिगार ने मुझे नौ बातों का हुक्म दिया है उनमें यह भी है कि मैं उस से रिश्ता जोड़ दूं जो मेरा रिश्ता नाता काटे, उसको क्षमा करूं जो मुझ पर जुल्म करे, उस को दूं जो मुझे वंचित रखे।''

जो मित्रता और प्रेम का मुआमला करे उससे अच्छे सम्बन्ध रखना कोई कमाल नहीं, ऊंची बात तो यह है कि जो दुश्मनी करे, नुक़सान पहुंचाये उसके साथ सद्व्यवहार किया जाये।

ईश्वर मानव जाति से निराश नहीं

खुदा का मुआ़मला मानव जाति के साथ और मानव जाति का मुआ़मला मानव जाति के साथ बिल्कुल उल्टा है। खुदा मानव जाति से निराश नहीं, उसकी मेहरबानियां इस संसार पर बरस रही हैं लेकिन हमारा मुआ़मला एक दूसरे के साथ यह बताता है कि हम मानव से निराश हैं। किसी विचारक ने कहा है कि जो बच्चा इस दुनिया में आता है वह इस बात का ऐलान करता है कि खुदा मानव जाति से निराश नहीं है, यदि निराश होता तो इस नस्ल में बढ़ौत्तरी नहीं करता। लेकिन इन्सान, इन्सान का गला काटता है, इन्सान से नफ़रत करता है, मानव, मानव का शोषण करता है, जोंक की तरह खून पीता है, उसे ग्राहक समझ कर लाभ उठाता है और अपने आचरण से इस बात का ऐलान करता है कि मानवता की क्षमता और उसके भविष्य से वह निराश है। खुदा और इन्सान के यह प्रदर्शन बराबर

www.abulhasanalinadwi.org

जारी हैं। वर्षा की एक एक बूंद इसका ऐलान करती है कि दुनिया का पैदा करने वाला अपनी प्यासी और ज़ालिम दुनिया से अभी निराश नहीं है। धरती में उर्वरक शक्ति है, इसकी पैदावार इस बात का ऐलान है कि खुदा इस धरती के वासियों से निराश नहीं। सूर्य चमकता है और वहां कोई स्ट्राइक नहीं, चांद बराबर निकलता है और अपनी चांदनी की चादर को फैलाता है, आंखों को ठंडा करता है, दिलों को भी ठंडक पहुंचाता है यह सब इस बात का ऐलान है कि ईश्वर मानव से अभी निराश नहीं।

लेकिन हमारा और आपका व्यवहार यह सिद्ध करता है कि हम मानव से निराश हैं। हम अपने आचरण व व्यवहार से इस बात का प्रदर्शन कर रहे हैं कि हमारे सामने उस इन्सान की, जो खुदा की कारीगरी का बेहतरीन नमूना है कोई क़ीमत नहीं।

अल्लाह के ऐश्वर्य और उसके गढ़न की अभिव्यक्ति व प्रदर्शन हर वस्तु में है। फूल, कली, बूंद, घास का तिनका, मिट्टी के कण, पेड़ के पत्ते जिस चीज़ को देखिये तो मालूम होगा कि उसमें एक दुनिया है। इनमें सर्वोत्कृष्ट मानव की रचना है। पूरी सृष्टि उस की सेवा के लिए पैदा की गई है। यह सब का ऐलान है कि इन्सान खुदा का महबूब है, सर्वोत्कृष्ट प्राणी है, इस दुनिया का दुल्हा है। लेकिन हमारी और आपकी कार्यशैली यह सिद्ध करती है कि मानव में कोई गुण नहीं हम अपने अ़मल (कर्म) से खुदा की अ़दालत में अपने ही के विरूद्ध मुक़दमा दायर कर रहे हैं कि हम को दुनिया से उठा लिया जाये। मानों हम फ़रिश्तों की उस बात की पुष्टि करना चाहते हैं कि जिसकी काट खुदा ने की थी। जब मानव रचना के समय खुदा ने फ़रमाया था, ''मैं इस धरती पर अपना ख़लीफ़ा और नाइब बनाना चाहता हूं,'' तो फ़रिश्तों ने आशंका व्यक्त की थी कि, क्या आप ऐसे को ख़लीफ़ा बना रहे हैं जो धरती पर बिगाड़ पैदा करेगा और खून बहायेगा? जब खुदा ने आदम से चीज़ों के ज्ञान के बारे में प्रश्न किया तो उन्होंने ठीक प्रकार से उत्तर दिया। फ़रिश्ते जवाब नहीं दे सके। खुदा ने इन्सान को जिताया था, हम उसको हरा रहे हैं।

टूटे हुए दिल की बड़ी क़ीमत है

अल्लाह ने कहा तुम को मालूम नहीं मनुष्य में कैसे–कैसे गुण हैं। उससे ज्ञान की सरिता कैसे फूट निकलती है। समुद्र में वह विशालता और गहराई न होगी जो उसमें है। उसकी आंखों में प्रेम की जो चमक है उसे प्रस्तुत करने में तुम असमर्थ हो। उसके दिल में नर्मी है, कसक है, प्रेम है, उस पर दर्द की चोट लगती है। फ़रिश्तों के पास यह दौलत नहीं।

मनुष्य के पास जो सबसे बड़ी पूंजी है वह दया की पूंजी है वह प्रेम की पूंजी है। वह एक आंसू है जो मानव की आंख से किसी विधवा के सर को नंगा, किसी ग़रीब के चूल्हे को ठंडा, किसी रोगी की कराह सुन कर टपक पड़ता है। आंसू की वह बूंद जो समुद्र में डाल दी जाये तो उसे पवित्र कर दे, गुनाहों के जंगल में डाल दी जाये तो सब को जलाकर रोशनी से बदल दे। फ़रिश्ते सब कुछ पेश कर सकते हैं किन्तु आंसू की वह बूंद नहीं पेश कर सकते जो एक इन्सान दूसरे इन्सान के लिए बहाता है।

इन्सान के पास सबसे अनमोल चीज़ यह है वह दूसरे के दुख दर्द से प्रभावित होता है। उसके अन्दर प्रेम की एक चिन्गारी है उसे दहकाने वाली कोई चीज़ मिल जाये तो वह प्रज्जवलित (दहक) हो उठती है। फिर वह इन्सान न मज़हब को देखता है, न सम्प्रदाय को न वतन को देखता है, न देश को देखता है, इन्सान इन्सान का दिल देखता है, उसके दर्द को महसूस करता है जिस प्रकार चुम्बक लोहे को खींचता है उसी प्रकार इन्सान के दिल का चुम्बक इन्सान के दिल को खींचता है।

अगर इन्सान से यह दौलत छीन ली जाये तो वह दीवालिया हो जायेगा। यदि कोई देश इससे वंचित हो जाये, अगर अमरीका की दौलत, रूस की व्यवस्था, अरब देशों के पेट्रोल के कुएं हुन बरसाते हों, सोने और चांदी की गंगा–यमुना बहती हो लेकिन उस देश में प्रेम का स्रोत सूख चुका हो तो वह देश कंगाल है उस देश पर अल्लाह की रहमत न होगी।

अभी इन्सान की आंख आंसू बहाने के क़ाबिल है, अभी इन्सान का दिल तड़पने, सुलगने और चोट खाने के क़ाबिल है जो दिल इस क़ाबिल

www.abulhasanalinadwi.org

नहीं है ऐसा दिल, दिल नहीं पत्थर है चाहे वह मुसलमान का दिल हो, या हिन्दु, सिख, ईसाई का दिल हो दिल तो इसलिए है कि वह तड़पे, कांपे, रोये इसमें धरती से अधिक हरियाली, झरने से अधिक प्रवाह, सृष्टि से अधिक विशालता और बादलों से अधिक बरसने की क्षमता हो।

जो हाथ मानवता की सेवा के लिए नहीं बढ़ता वह पंगु है। वह हाथ जो इन्सान की गर्दन काटने के लिए बढ़ता है उससे शेर का हाथ बेहतर था अगर इन्सान का कार्य काटना था तो कुदरत उसको बजाय हाथों के तलवार दे देती। अगर इन्सान की जिन्दगी का उद्देश्य केवल जमा करना था तो उसके सीने में धड़कते हुए दिल के बजाए तिजोरी रख दी जाती। अगर इन्सान का काम केवल बरबादी की योजना बनाना था उसके अन्दर इन्सान का दिमाग़ न रखा जाता बल्कि किसी शैतान, किसी राक्षस का दिमाग़ रख दिया गया होता।

मानव शरीर की रचना के अजूते बताये जाते हैं लेकिन आप उसका दिल देखें तो उसके अजूबे के सामने शरीर के अजूबे मन्द पड़ जायें। प्रभु ने इन्सान को ऐसा दिल दिया है कि दुनिया के एक छोर में किसी को तकलीफ हो तो वह दूसरे छोर में तड़प उठे। जो दिल किसी का दिल दुखाये, किसी को तकलीफ पहुंचाये वह दिल किस गिनती के क़ाबिल है।

ईश्वर का सारा मामला इस दुनिया के साथ बताता है कि वह मानव जाति से निराश नहीं। आप का वाटर वर्क्स पानी रोक सकता है, आप का पावर हाउस बिजली रोक सकता है तो क्या खुदा अपनी नेअ़मते नहीं रोक सकता? खुदा इस दुनिया को पानी भी दे रहा है और रोटी भी दे रहा है और सबको हुक्म है वे मानव की सेवा करें। पूरा कराखाना मानव की सेवा में लगा हुआ है। खुदा उससे निराश नहीं हुआ लेकिन हम अपने आचरण से क्या साबित कर रहे हैं? क्या हम साबित कर रहे हैं कि हम इन्सान को कोई बड़ी चीज़ समझते हैं? अपने बराबर का समझते हैं, अपने शरीर का टुकड़ा समझते हैं? हमारा आचरण इन्सानी आबादी के

लिए सबसे बड़ा ख़तरा है। इन्सान से दुशमनी और इन्सानियत की पामाली (कुचलना) का खतरा, इन्सानियत की ख़ैर ख़्वाही से आंखे बन्द कर लेना। इस ख़तरे से देश को भी और क़ौम (नेशन) को भी बचाने की ज़रूरत है।

मानवता की प्रतिष्ठा

पैग़म्बरों (ईशदूतों) ने इन्सानों को बतलाया था कि अगर तुमने अपने को दुनिया के अधीन कर लिया और अपनी इच्छाओं के वशीभूत हो गये तो यह सारा जीवन अस्वाभाविक और अव्यवस्थित हो जायेगा। और एक ऐसी अव्यवस्था, अनार्की फैलेगी कि यही दुनिया तुम्हारे लिए नर्क बन जायेगी।

कुर्आन मे बतलाया गया है कि इन्सान को पैदा करके फ़रिश्तों को उसके आगे झुकाया गया। जिससे यह सीख मिलती है कि मानवता का यह एक अपमान है कि अपने पैदा करने वाले के सिवा किसी के सामने झुके। जबकि खुदा के बाद उसके फ़रिश्ते ही सबसे ज़्यादा झुकने के क़ाबिल थे। क्योंकि वह इस दुनिया के अभिकर्ता हैं, वह खुदा के हुक्म से बारिश लाते हैं, हवाएँ चलाते हैं। जिस प्रकार एक हाकिम अपने नाइब को अपने सलाहकारों से परिचय कराता है उसी तरह खुदा ने इन्सान के आगे फ़रिश्तों को झुका कर एक परिचय या इन्ट्रोडक्शन कराया कि इन्सान की नस्ल को क़यामत तक के लिए यह सबक़ याद रहे कि वह खुदा के सिवा किसी के आगे झुकने के क़ाबिल नहीं।

——— समाप्त ———